अंक 7

वर्ष 2021

# ऋतुरंग

भारत सरकार
भारत मौसम विज्ञान विभाग
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, प्रादेशिक मौसम केंद्र,
हवाई अड्डा, नागपुर- 440 005

Made with PosterMyWall.com

www.imdnagpur.gov.in

# स्वतंत्रता दिवस - २०२०

# ऋतुरंग

(प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर की गृह पत्रिका )

## प्रमुख संरक्षक

एम. एल. साहू

उपमहानिदेशक तथा वैज्ञानिक – एफ

प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर

## संरक्षक

जी. एस. नगराले

वैज्ञानिक - ई, प्रा.मौ. के. नागपुर

## संपादक

श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवादक अधिकारी

## सहयोगी सदस्य

1. श्री. एस. एन. बिद्यांता, मौ.वि-ए
2. श्रीमती. रीना वी. सुरपाम, मौ.वि.-ए
3. श्री. एस. ए. पवार, सहायक
4. श्री. एम. आर. कान्होलकर, वै. स.
5. सुश्री.रिंकू हाडके, वै. स.

पत्र व्यवहार का पता

संपादक- ऋतुरंग, प्रादेशिक मौसम केंद्र, हवाई अड्डा, नागपुर - 440005

( इस अंक में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल सहमत हो अनिवार्य नहीं एवं रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार है ।)

# अनुक्रमणिका - कविता / लेख / रिपोर्ट


| अ.क्र. | कविता / लेख / रिपोर्ट पृ.क्र. | |
|---|---|---|
| 1 | प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने में मौसम विभाग की भूमिका - सुश्री रूबी वर्मा, वै.स. | 9 |
| 2 | स्वामी विवेकानंद चरित - जिसे कभी मैंने भी मंच पर जिया था! - श्री ए एम भट्ट, मौ.वि.-ए, अंबिकापुर | 12 |
| 3. | प्रकृति का सन्देश - श्री पी. एल. देवांगन, मौ.वि.बी (सेवानिवृत्त) | 19 |
| 4. | लोणार सरोवर : सफ़रनामा - श्री प्रकाश चिंचोले, मौ.वि.ए. | 21 |
| 5. | भारतीय संस्कृति - श्री. एम. आर. कान्होलकर, वै.स. | 28 |
| 6. | वृद्धता का वाराणासी - श्री ए एम भट्ट, मौ.वि.ए., मौ.का. अंबिकापुर | 30 |
| 7. | कोविड-19 - श्री ए. वी. गोडे, मौ.वि.-बी (सेवानिवृत्त) | 35 |
| 8. | चक्रवातीय तूफान से लड़ने में. मौसम विभाग की भूमिका - सुश्री मीनू मीणा, वै.स. | 41 |
| 9. | तिनका कबहुँ न निंदिये - श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवादक अधिकारी | 43 |
| 10. | "चलो अब घर चले" - सुश्री रूबी वर्मा वै.स. | 50 |
| 11. | कोरोना काल में जीवन - सुश्री सुलेखा सोनाल, वैज्ञानिक सहायक | 52 |
| 12. | नागपुर और ग्लोबल वार्मिंग एक खोज / चेतावनी- श्री एम.टी.एस. शिवानंद मौ.वि.अ. | 53 |
| 13. | गरीबी का दिमाग - श्री. जी. एस. नगराले, वैज्ञानिक-ई | 59 |
| 14. | पिता - श्री अंशुल द्विवेदी, वै.स., ग्वालियर | 65 |
| 15. | ग्वालियर में मौसम का हाल - श्री जयदीप शर्मा, वै.स.मौ केंद्र ग्वालियर | 66 |
| 16. | भारत की वैश्विक छवि एवं हिंदी का संबंध - सुश्री दीपिका कटारा, वै.स. | 67 |
| 17. | मौसम विभाग द्वारा प्रदान की जा रही पूर्वानुमान संबंधी सेवायें - श्री चैन सिंह, वै.स. | 70 |
| 18. | पत्नी-कंप - श्री ए. वी. गोडे, मौ.वि.बी (सेवानिवृत्त) | 74 |
| 19. | साझा-गलियारा - श्री अंशुल द्विवेदी, वै.स. ग्वालियर | 76 |
| 20. | उपलब्धियां | 78 |
| 21. | हिंदी पखवाड़ा रिपोर्ट | 79 |

महानिदेशक
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड
दिल्ली- **110003**

# संदेश

*ऋतुरंग* गृह पत्रिका के सातवें अंक को आप सबको सौंपते हुए मुझे बेहद खुशी का अनुभव हो रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विभाग के कार्मिकों का ज्ञानवर्धन करने और हिन्दी लेखन में उनकी रूचि बढ़ाने में राजभाषा हिंदी में लिखे गए वैज्ञानिक लेखों, सुंदर कविताओं व अन्य रोचक लेखों की अहम भूमिका रहेगी।

मैं आशा करता हूँ कि उपकार्यालयों से प्रकाशित हिंदी गृह पत्रिकाओं में प्रकाशित तीन श्रेष्ठ रचनाओं को पुरस्कृत करने का मंत्रालय द्वारा अनुमोदित निर्णय सभी कार्मिकों को प्रोत्साहित करेगा और विभिन्न विषयों से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियाँ हमें मिल सकेंगी ।

मैं *ऋतुरंग* पत्रिका के सफल प्रकाशन की कामना करते हुए सबको बधाई देता हूँ।

मृत्युंजय महापात्र

(डॉ. मृत्युंजय महापात्र)

उपमहानिदेशक
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

# उपमहानिदेशक महोदय की कलम से

बडी प्रसन्नता की बात है कि कार्यालय अपनी गृहपत्रिका ऋतुरंग के सातवें अंक का प्रकाशन करने जा रहा है । राजभाषा हिंदी ने सदैव पूरे देश को एकता के सूत्र में बांधने का कार्य किया है। किसी कार्यालय की पत्रिका वहाँ के कार्मिकों के भावों एवं विचारों का दर्पण होता है। पत्रिका का प्रकाशन इसी दिशा में किया गया एक सकारात्मक प्रयास है।

शुभकामनाओं सहित।

**(एम.एल.साहू)**

वैज्ञानिक -ई
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि क्षेत्रीय कार्यालय, नागपुर द्वारा विभागीय गृह पत्रिका ऋतुरंग के सातवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । पत्रिका के प्रकाशन का मूल उद्देश्य कार्यालय की गतिविधियों, कर्मचारियों एवं अधिकारियों के वैचारिक अभिव्यक्ति को जागृत करना और प्रोत्साहित करना और राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार को बढ़ावा देना है।

इस अवसर पर पत्रिका के संपादक मंडल एवं पत्रिका प्रकाशन से जुड़े अधिकारियों एवं कर्मचारियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

सादर

**(जी.एस.नगराले)**

सहायक निदेशक
भारत मौसम विज्ञान विभाग
मौसम भवन, लोदी रोड
दिल्ली- 110003

# संदेश

सूचना प्रौद्योगिकी के आज के इस युग में किसी भी भाषा में कार्य करना अत्यंत सहज व सरल हो गया है। भारत मौसम विज्ञान विभाग के मुख्यालय द्वारा नियमित रूप से हिंदी गृह पत्रिका का प्रकाशन तो किया ही जा रहा है साथ ही साथ विभाग के लगभग सभी उपकार्यालयों द्वारा भी हिंदी गृह पत्रिका प्रकाशित की जाने लगी हैं , जो निश्चित रूप से यह दर्शाता है कि विभाग के कार्मिकों में हिंदी में लिखने की अभूतपूर्व क्षमता है।

प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर की 'ऋतुरंग' पत्रिका भी इसी का ज्वलंत प्रमाण है। हिंदी में लिखने वालों की कमी नहीं है। आवश्यकता यह है कि कार्मिकों को प्रोत्साहित किया जाए और इसी दिशा में एक कदम और आगे बढ़ाते हुए विभिन्न उपकार्यालयों द्वारा प्रकाशित की जाने वाली हिंदी गृह पत्रिकाओं के लेखकों के लिए हाल ही में विभागीय प्रोत्साहन योजना भी आरंभ की गई है।

नि:संदेह आज हिंदी भाषा राष्ट्रीय संपर्क की भाषा बन चुकी हैं। हमारे देश में पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक हिंदी भाषा को लोग समझ सकते हैं। यही हिंदी की विशेषता है।

'ऋतुरंग' के संरक्षक महोदय और संपादक मंडल को इस नए अंक के प्रकाशन पर बहुत-बहुत बधाई व शुभकामनाएँ ।

**(सरिता जोशी)**

मौसम विज्ञानी –ए (प्र.)
एव राजभाषा संपर्क अधिकारी
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

# संदेश

गृह पत्रिका ऋतुरंग का सातवां अंक आप सबके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है। पत्रिका में संकलित रचनाओं से न केवल कार्मिकों का ज्ञान-वर्धन होगा बल्कि अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी, पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनायें। सभी कार्मिकों से निवेदन है कि नए-नए विचारों और ज्ञानवर्धक रचनाओं से गृह पत्रिका ऋतुरंग को सजाए।

रचनाकारों को बधाई और शुभकामनाएं।

**(एस.एन.बिद्यंता)**

# संपादकीय

‘जब समीर अभी उतार रही थी
शीतलता की चादर क्षितिज के पार।
जब बसन्त की सुरभित पवन अभी,
खोल रही थी प्रकृति का अनुपम द्वार।
एक विषम विकार बह चली हवा में,
बन्द हुए प्रगति के करोबार।

क्या होगा ? कब जाएगी विपदा? सोच रहा मानव व्याकुल, बंदिशों की बौछार। कोरोना के कारण आपात तालाबन्दी के शुरूवाती दौर में ऐसा लग रहा था मानो नियति का चक्र रूक सा गया हो, समय और सृष्टि की निर्बाध गतिशीलता यकायक थम सी गयी हो, पर मेरी यह कल्पना, मेरी सोच और मेरे अंर्तमन में उठने वाला अंतर्द्वंद निश्चित ही र्निमूल थी, गलत थी । प्रकृति का चक्र अपनी समय धूरी पर सदैव गतिमान रहता है, वह कभी भी, किसी भी परिस्थिति में नहीं रूकता । प्रकृति नित नवीन आयामों, नवीन ऊर्जा और नवीन उत्साह का संचार करता हुआ बिना झुके निरन्तर नवीनता के साथ अग्रसर रहता है।

प्रकृति के निरंतरता के साथ हमने भी प्रयास किया है कि हम भी अपनी विभागीय पत्रिका ‘ऋतुरंग’ के नवीन अंक को नियमित रखने का प्रयास करें। अपने विभाग के रचनाकारों के समन्वित सहयोग से ही ऋतुरंग का सांतवा अंक आप सबके समक्ष लाने में समर्थ हो पाए हैं। आगे चलकर यह पत्रिका हम सभी की आशाओं और आकांक्षाओं के अनुरूप साकार होती रहेगी और देश की सेवा-आवश्यकता की पूर्ति में सार्थक भूमिका अदा करेगी।

शांता

**(शांता उन्नीकृष्णन)**

# प्राकृतिक आपदाओं से लड़ने में मौसम विभाग की भूमिका

सुश्री रूबी वर्मा, वैज्ञानिक सहायक

मानव विकास के क्रम में जलवायु परिवर्तन एवं प्राकृतिक आपदाओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। प्राकृतिक आपदाओं ने प्रारंभिक युगों में संपूर्ण जीवन का ही विनाश कर दिया था। आधुनिक काल में भी जैसा कि सर्व साधारण को अनुभव है कि आपदाओं के फलस्वरूप अर्थव्यवस्था को क्षति होती है एवं मनुष्य के रहन-सहन एवं मन-स्थिति पर भी इनका दुष्प्रभाव पड़ता है।

तीव्र गति से आने वाले आकस्मिक प्राकृतिक बदलाव से मनुष्य एवं पशु पक्षियों को भी विनाश का सामना करना पड़ता है। प्राकृतिक आपदाओं को मुख्यतः पांच भागों में बांट सकते हैं।

- भौगोलिक (भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट एवं सुनामी...)
- जलीय (बाढ़, भू स्खलन,...)
- मौसमी (अतिवृष्टि, उष्ण-लहर शीत-लहर, ओलावृष्टि, आंधी-तूफान, चक्रवात)
- जलवायवीय (सूखा, जंगली क्षेत्रों में आग...... )
- जैविक (विषाणु द्वारा बीमारियों का फैलना ... )

मौसम विभाग भौगोलिक, जलीय, मौसमी एवं जलवायवीय, चारों प्रकार की आपदाओं के प्रबंधन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पर्यावरण के बदलते स्वरूप एवं सटीक पूर्वानुमान के महत्व को समझते हुए 23 मार्च 1950 में स्विट्ज़रलैंड में विश्व मौसम विज्ञान विभाग की स्थापना हुई।

आपदा से होने वाली क्षति को कम करने के लिए हमें पूर्व में आपदा की तीव्रता एवं उससे प्रभावित होने वाले क्षेत्र के बारे में जानकारी होना आवश्यक है।

मौसम विभाग प्रतिदिन वर्षा, तापमान, हवा की दिशा उसकी गति का पृथ्वी की सतह एवं वायुमंडलीय हवाओं के बारे में आंकड़े इकट्ठा करते हैं। तत्पश्चात मौसम वैज्ञानिक आंकड़ों का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं। जिस तरह गूगल विश्व का नक्शा तैयार करता है उसी प्रकार विश्व में फैले लाखों मौसम वैज्ञानिक के कठिन परिश्रम से इस नक्शे पर मौसम को दर्शाते है। वैज्ञानिक अपनी समझबूझ से एवं तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा चेतावनियाँ एवं पूर्वानुमान तैयार करते हैं, अति तीव्र संचार तंत्र द्वारा चेतावनियों को हर

स्तर पर भेजा जाता है ताकि यह जानकारी सर्व साधारण तक पहुंच सके और यथा संभव वह अपना बचाव कर सकें।

चेतावनियों एवं आपदा की तीव्रता अधिक होने पर प्रबंधन विभाग को भी सूचना दी जाती है। उष्ण-लहर, शीत-लहर, ओलावृष्टि, अतिवृष्टि, आंधी-तूफान, चक्रवात एवं तटीय क्षेत्रों में ऊंची लहरों की जानकारी भी जिला स्तर पर जारी की जाती है। किसानों के लिए अलग से मौसम अनुसार बचाव एवं सुझाव भेजे जाते हैं। प्रतिदिन ये चेतावनियां जिला-आयुक्त एवं आपदा प्रबंधन से जुड़े अन्य कार्यालयों को भेजी जाती है ताकि वे समय से कार्य योजना बनाकर सफल प्रबंधन कर सकें।

भारतीय उपमहाद्वीप का भौगोलिक विस्तार भी अनेक विविधताओं से पूर्ण है। यहां पर उत्तर में हिमालय की ऊंची श्रंखला, दक्षिण में विशाल तटीय क्षेत्र है। यहां पर उत्तर क्षेत्र में प्रायः बर्फ बारी, शीत लहर हिमस्खलन, तटीय क्षेत्रों में बाढ़, अतिवृष्टि एवं चक्रवात एवं पूर्वोत्तर राज्य जैसे बिहार, असम, बंगाल में बाढ़ रूपी प्राकृतिक आपदाएं आती है। भारत में वर्षा का समय निश्चित है तो बाढ़ का प्रति वर्ष समय मानसून ही होता है। भारत मौसम विज्ञान विभाग प्रत्येक भाग के भौगोलिक महत्व को समझ कर वहां अलग से चेतावनियां भी जारी करता है। चक्रवात एवं अतिवृष्टि के समय तटीय क्षेत्रों को मछुआरों के लिए चेतावनी जारी करता है, नदियों में जल स्तर बढ़ने पर प्रबंधन विभाग को सूचित करता है एवं अतिवृष्टि के आंकड़ों के आधार पर जिला आयुक्त बाढ़ घोषित करता है तथा प्रबंधन कार्यक्रम करता है।

मई 2019 में उड़ीसा में आए तूफान 'फनी' के बारे में भी मौसम विभाग ने पूर्व में चेतावनी जारी की थी। हवा की गति एवं चक्रवात के मार्ग के सटीक पूर्वानुमान से लाखों

लोगों की जान बचाई जा सकी। इसी तरह सन 2010 में अहमदाबाद में उष्ण-लहर से 1300 लोगों की जान चली गई। तत्पश्चात वहां ताप कार्यवाही समिति का गठन 2013 में हुआ। 2015 में देश में उष्ण लहर से 2500 लोगों की जानें गई परंतु अहमदाबाद में मात्र 20 लोग मारे गए। समिति ने मौसम विभाग से प्राप्त चेतावनी को सही तरीके से प्रयोग करके लोगों को जागरूक किया।

ये तो मात्र उदाहरण है। मौसम विभाग के कठिन एवं अथक प्रयासों के द्वारा अनगिनत लोगों एवं पशु पक्षियों की जान बचाई जा चुकी है। संसाधनों के दुरुपयोग एवं जनसंख्या के निरंतर बढ़ने से ग्लोबल वार्मिंग की नई समस्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। फलस्वरूप चरम घटनाओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है जो आपदा के रूप में सामने आ रही। 2013 में उत्तराखंड त्रासदी इसका सटीक उदाहरण है।

विश्व के बदलते वातावरण में मौसम विभाग की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। इसी वर्ष जून माह में बिहार में बिजली गिरने से 80 से ज्यादा किसानों की जान गई यह एक चरम आपदा थी, कई वर्षों में पहली बार यह हुआ। इसी तरह असम में बाढ़ का कहर है, मौसम विभाग का सहयोग वहाँ भी सराहनीय है।

भविष्य में नयी एवं उत्कृष्ट तकनीकों का प्रयोग करके मौसम विभाग की अपनी पूर्वानुमान क्षमता को बढ़ाना है। भविष्य में विभाग के सामने नयी चुनौतियाँ हैं। हमें अपने परिश्रम तकनीक एवं अन्य कार्यालयों के साथ मिलकर आपदा प्रबंधन को बेहतर बनाना है देश की अर्थव्यवस्था में उचित योगदान करना है।

* *

# स्वामी विवेकानंद चरित ..
# जिसे कभी मैंने भी मंच पर जिया था!

श्री. ए. एम. भट्ट, मौ.वि.-ए., अंबिकापुर

आज जब हम सभी लोगों का मन विचलित है, भविष्य की कई तस्वीरें इंटरनेट की तरंगों संग झूलती लगभग सभी संचार साधनों को माध्यम बना कर एक अनिश्चितता परोस रही है तब इस बोझिल होती हवा को प्राण वायु बनाये रखने के लिए हमने मनोविनोद के कुछ माध्यम अपना लिए हैं। कोई तस्वीर के एलबम में झांक कर अपने अतीत की घटनाओं को ताजा कर रहा है तो कोई गीत, कविता, कहानी के साचों में अपने शब्दों को व्यवस्थित करने का प्रयास। अच्छा भी है, इसी बहाने हमें अपने बीत चुके जीवन क्रम को एक बार फिर मानस पटल पर उकेर लेने का बेहतर मौका जो मिला है। मुझे भी कुछ घटनाएं जो मस्तिष्क में गड्ड–मड्ड सी हो चुकी हैं इन तस्वीरों और मित्रों की अभिव्यक्ति से जीवंत होने का प्रयास कर रही हैं। सम्भवतः वह 1990–91 का वर्ष रहा होगा। अंबिकापुर नगर के श्री विवेकानंद विद्या निकेतन, विद्यालय के प्रांगण में वार्षिक कार्यक्रम का आयोजन था। विद्यालय अपना वार्षिकोत्सव मना रहा था। उस वार्षिकोत्सव का मुख्य आकर्षण था स्वामी विवेकानंद जी की जीवनी पर आधारित एक नाटिका और दूसरा था एकांकी दीपदान। मैं आज स्वामी जी की नाटिका के पात्रों को याद करूँगा। अलवर राज्य के दीवान साहब का भव्य मंच सजा हुआ था। दांई ओर की आसन्दी पर गेरुआ वस्त्र पहने साधु की वेशभूषा में स्वामी जी बैठे थे, बाईं ओर दीवान साहब के मातहत कर्मचारी चँवर लिए खड़े हवा कर रहे थे। बीच में दीवान साहब गर्व की मुद्रा में बैठे मुस्कुरा रहे थे। कुछ आतिथेय औपचारिकताओं के बाद उनका संवाद शुरू हुआ :–

दीवान – मैंने सुना है कि स्वामी जी आप बड़े विद्वान और पांडित्य गुणों में प्रवीण तथा अंग्रेजी सहित कई भाषाओं के ज्ञाता भी हैं।

स्वामी जी – यह सब भगवती की कृपा है। माता सरस्वती का आशीर्वाद समझिए।

दीवान – हूँ, स्वामी जी अगर आप चाहें तो अपनी विद्वता की धाक से अपार धन संपत्ति, ऐश्वर्य और भोग प्राप्त कर सकते हैं। आप में गुणों की कमी नहीं दिखती, फिर ये भिक्षाटन जैसा उपेक्षित कृत्य का अवलम्बन क्यों ?

स्वामी जी – दीवान महाराज, आप तो इतने सामर्थ्यवान हैं कि किंचित संसार के सभी सुख आपको आपके इस राजमहल में ही उपलब्ध हो सकते हैं। क्या मैं गलत तो नहीं कह रहा ?

दीवान –गर्व अनुभूति के साथ – बिल्कुल , आज मेरे पास क्या नहीं है और मैं क्या कुछ नहीं प्राप्त कर सकता ।

स्वामी जी –अच्छा मेरे एक प्रश्न का उत्तर दीजिये।

दीवान – पूछिये ।

स्वामी जी – क्या आप अपने मातहतों के साथ कभी अपने राजकाज की अवहेलना करते हुए , अपने आमोद-प्रमोद के लिए कभी शिकार आदि के व्यर्थ व्यसन पर जाते हैं ?

दीवान – हाँ, कई बार जाता हूँ।

स्वामी जी – क्यों दीवान साहब ?

दीवान – अपनी भाव भंगिमा में कठोरता लाते हुए – हाँ करता तो हूँ, पर पता नहीं क्यों ? इतना जानता हूँ कि यह सब मुझे अच्छा लगता है।

स्वामी जी – मुस्कुरा कर – बस दीवान साहब यही समझ लीजिये की मुझे भी मेरा यह फ़क़ीरपना अच्छा लगता है। मैं इधर-उधर घूमता फिरता हूँ , अनन्य लोगों से मिलता हूँ तो मन को असीम आमोद प्राप्त होता है।

दीवान – कुछ संकोच का अनुभव और अपनी उग्रता छुपाते हुए कुछ क्षणों बाद मुस्कुरा कर – अच्छा स्वामी जी , मैं मूर्ति पूजा में तनिक भी विश्वास नहीं करता। बताइये की मेरे इस अविश्वास के लिए मेरी क्या दुर्गति हो सकती है? (दीवान साहब की कुटिल हंसी गूंज जाती है)

स्वामी जी - एक गम्भीर दृष्टि डालते हुए – क्या दीवान जी मेरे साथ मजाक कर रहे हैं ?

दीवान – गम्भीर हो कर आग्रह के स्वर में – नहीं-नहीं स्वामी जी कदापि नहीं। वास्तव में मैं इन लकड़ी, पत्थर, या धातु की बनी मूर्तियों में अन्य साधारण लोगों की तरह श्रध्दा भक्ति नहीं कर सकता। मैं तो जानना चाहता था कि क्या इसके लिए मुझे भविष्य में कोई कठोर सजा तो नहीं भोगनी पड़ेगी?

स्वामी जी – मनुष्य को अपनी तरह से, अपने मनोनुकूल साधन से उपासना का पूरा अधिकार है। मूर्तिपूजा में आपकी आसक्ति नहीं है तो क्या हुआ। इसके लिए आपको कोई सजा क्यों भोगनी होगी ?

दीवान – आप समझे नहीं स्वामी जी, मैं तो यह जानना चाहता हूं कि इन निर्जीव वस्तुओं में कोई देव, कोई भगवान या आपका कोई परमात्मा किस तरह विद्यमान रह सकता है ? यह तो मात्र छद्म कृत्य है, लोगों को धर्म और ईश्वर का एक निराधार भय दिखा कर अपने अधीन करने की वृत्ति मात्र है। आप क्या कहते हैं ?

स्वामी जी – कुछ क्षण गम्भीर रह कर दीवारों की ओर शून्य में देखने लगे, तभी उनकी दृष्टि दीवार पर टंगी एक तस्वीर पर पड़ी – दीवान साहब यह तस्वीर किसकी है ?

दीवान – यह तस्वीर तो हमारे महाराज बहादुर की है। हम बड़ी श्रद्धा से नित्य इस तस्वीर की आराधना के बाद ही अपना कार्य आरंभ करते हैं।

स्वामी जी – दीवान साहब अपने महाराज बहादुर की इस तस्वीर को उतरवाईये।

दीवान – क्यों ?

स्वामी जी – बस यूँ ही, आप उतरवाईये तो सही।

दीवान उस तस्वीर को उतरवा कर अपने सामने की मेज पर रखवाते हैं।

स्वामी जी – तस्वीर को उठा कर कुछ क्षण श्रद्धा भाव से देखने के बाद जमीन पर रख देते हैं और दीवान जी से कहते हैं – दीवान जी इस तस्वीर पर थुँकिये ।

दीवान – स्वामी जी आप यह क्या कह रहे हैं ?

स्वामी जी – कुछ कठोर स्वर में – मैं ठीक कह रहा हूँ दीवान जी, आप इस तस्वीर पर थुँकिये।

दीवान – क्रोध करते हुए – स्वामी जी मैं आपके साधुवेश की इज्जत करता हूँ , यदि आपकी जगह कोई और होता तो अभी तक उसकी जुबान काट दी जाती।

स्वामी जी – ऊंची आवाज में – दीवान जी आपके ये शब्द मुझे डरा न पाएंगे, मैं फिर से कहता हूँ आप इस पर थुँकिये। मैं कहता हूं आप में से कोई भी आकर इस तस्वीर पर थुँकिये।

दरबारियों के तेवर चढ़ जाते हैं, सभी क्रोध की नजरों से स्वामी जी को देखते हैं। एक चुप्पी के बाद –

दीवान – कुछ शांत स्वर में – स्वामी जी आप कहना क्या चाहते हैं ? क्या हम अपने महाराज बहादुर का इस तरह अपमान कर सकते हैं ? कदापि नहीं।

स्वामी जी शांत हो मुस्कुराते हुए दीवान को उनके आसन पर वापस बैठाते हैं। फिर तस्वीर को उठा कर सम्मान पूर्वक उसका अभिनंदन करते हुए प्रणाम करते हैं और पास खड़े मातहत से उसे यथा स्थान पर टांग देने को कहते हैं।

स्वामी जी – मैं जानता था दीवान जी की आप में से कोई भी महाराज बहादुर की तस्वीर पर नहीं थूक सकता। क्यों ! क्योंकि इस कागज़ की तस्वीर में आप साक्षात अपने महाराज को जीवंत देखते हैं। यह कागज का एक टुकड़ा नहीं महाराज की तरह हिल डुल सकता है न बोल सकता है और न ही श्वास ही ले सकता है फिर भी इसमें साक्षात महाराज बहादुर के दर्शन होते हैं । ठीक उसी तरह हम मूर्ति पूजकों को भी मूर्तियों में उसके तत्व या वस्तु गुण नहीं दिखते, उनमें तो हमें साक्षात नारायण ही दिखते हैं। सिर्फ आत्म दृष्टि दोष के कारण ही आप जैसे लोग एक अज्ञानी की भांति झूठी शान में निरुद्देश्य जिये चले जा रहे हैं।

दीवान – रोते हुए भाव विह्वल एक अबोध बालक की तरह बिलखते हुए – स्वामी जी आज मैं धन्य हो गया। मेरी भौतिक चक्षु पर पड़ा पर्दा अब उठ गया है। मुझे आज ईश्वर के वास्तविक रहस्य का दिव्य ज्ञान प्राप्त हो गया है। स्वामी जी कृपा करके मुझे आशीर्वाद दीजिए।

स्वामी जी – दीवान जी, एक मात्र भगवान के अतिरिक्त कृपा करने का अधिकार और किसी को नहीं है। इसके लिए तो आपको सरल शुद्ध भाव से उस ईश्वर को ही शरण में जाना होगा। वे ही आप पर कृपा कर सकते हैं ।

पर्दा गिरता है, एक जोरदार करतल ध्वनि होती है और दर्शक अगले दृश्य के इंतजार में शांत चित्त बैठे रहते हैं।

इस नाटिका के अगले दृश्य में स्वामी जी के जीवन में घटित एक अत्यंत मार्मिक प्रसंग का मंचन किया गया था। घटना 9 मई 1892 की थी। कहा जाता है कि इस घटना ने स्वामी जी की सोच को एक नई दिशा की ओर मोड़ दिया था। घटना खेतड़ी नरेश के घर पुत्र के जन्मोत्सव का था।

खेतड़ी का सजा धजा दरबार, लोगों के आने-जाने का क्रम लगा हुआ था तभी किसी मातहत ने नरेश को सूचना दिया कि स्वामी जी दरबार की ओर आ रहे हैं। नरेश दौड़ कर दरवाजे पर पहुंचते हैं और स्वामी जी के चरणों मे झुक कर अभिवादन करते हैं।

नरेश – मेरे अहोभाग्य ! आपके आगमन से मैं आज धन्य हो गया, आपके ही आशीर्वाद से मुझे पुत्र रत्न मिला है, मैं सदैव आपका ऋणी रहूंगा।

स्वामी जी – महाराज अजीत सिंह जी, यह आशीर्वाद तो ऊपरवाले का है। हम सब तो निमित्त मात्र हैं।

नरेश – ये सब आपकी गूढ़ बातें मेरी समझ में न आवेगी। कृपा करके स्थान ग्रहण करें। दोनो आसन पर बैठते हैं । महाराज फिर अपने दीवान से कहते हैं –

नरेश – दीवान जी सबसे पहले जाइये और स्वामी जी का मुख मीठा करने का प्रबंध कीजिये। और महारानी से कहिये की राजकुमार को लेकर यहां आएं।

दीवान – जो आज्ञा महाराज ।

दीवान स्वामी जी से मुखातिब होते हुए – स्वामी जी आपके शिकागो की यात्रा का पूरा प्रबन्ध हो चुका है। फिर आप यहां से बंबई और बंबई से आगे अमेरिका की यात्रा पर जाएं तो कैसा रहेगा ?

स्वामी जी – महाराज, साधू तो एक बहती नदी है। आप इसकी धारा का प्रवाह जिधर मोड़ देंगे यह उधर से ही बह निकलेगा।

दीवान – मैंने सारा प्रबंध कर लिया है। मुंशी जगमोहन जी आपको राजकीय रथ से जयपुर होते हुए आबू रोड से बंबई पहुंचा आएंगे।

स्वामी जी – आपका स्नेह है, महाराज !

तभी महारानी राजकुमार को लिए हुए आती हैं, सब लोग खड़े हो कर आशीर्वाद देते हैं। स्वामी जी राजकुमार के सिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद देते हैं।

स्वामी जी – यशस्वी बनो, बलवान बनो और सेवा तथा धर्म के मार्ग पर चलते हुए प्रजापालक बनो, पुत्र।

दीवान का प्रवेश – महाराज भोजन का प्रबंध हो गया है। कृपया भोजन ग्रहण करने हेतु प्रस्थान करें।

महाराज – अवश्य दीवान जी। और हाँ दीवान जी आज शाम के रंग महल की व्यवस्था भी देख लीजियेगा। स्वामी जी के मनोरंजन में कोई कमी न रहे।

दीवान जी – जो आज्ञा महाराज, आप चिंता न कीजिये।

सभी लोगों का प्रस्थान और क्षणिक पर्दा गिरता है। कुछ देर बाद पर्दा उठता है। मंच पर विभिन्न वाद्ययंत्रों के साथ वादक पूर्व अभ्यास कर रहे हैं, पीछे दो आसन लगे हुए हैं। वादक मंडली प्रवेश द्वार के दूसरी ओर पंक्तिबद्ध बैठे हुए हैं। स्वामी जी और महाराज का प्रवेश

नरेश –आइए महाराज आसन ग्रहण कीजिये। थोड़ा मनोरंजन के बाद विश्राम कीजियेगा।

स्वामी जी –आप भी पधारिये।

दोनो बैठते हैं, वाद्ययंत्र पर कुछ मधुर तान बजने लगता है। कुछ अंतराल बाद एक नर्तकी का मंच पर प्रवेश होता है, वाद्ययंत्र फिर से बज उठता है और नर्तकी के पैरों के घुंघरू बजने लगते हैं, नर्तकी का नृत्य आरम्भ होता है। तभी स्वामी जी अपने आसन से उठ खड़े होते हैं। एकाएक मंच पर शांति छा जाती है। स्वामी जी महाराज से कहते हैं -

स्वामी जी – महाराज मैं एक सन्यासी हूँ और सन्यासी को इस तरह का मनोरंजन शोभा नहीं देता, कृपा कर मुझे आज्ञा दीजिये।

स्वामी जी जाने को उद्यत होते हैं , नर्तकी भी मर्माहत होती है और अनायास गा उठती है, स्वामी जी के कदम रुक जाते हैं और वे जड़वत उस नर्तकी को गाते देखते हुए रोने लगते हैं। नर्तकी ने उस समय सूरदास जी का एक भजन गाया था –

प्रभु जी मोरे अवगुण चित्त न धरो,

समदरसी प्रभु नाम तिहारो, चाहो तो पार करो।

एक लोहा पूजा में राखत एक घर बधिक परो,

पारस गुन अवगुन नहीं जानत, कन्चन करत खरो।

ईक नदिया ईक नार कहावत, मैलो ही नीर भरो।

जब दोउ मिली एक बरन भये, सुरसरि नाम परो।

यह माया भरम जाल निबेरो, सूरदास सगरो,

अबकी बार मोहि पार उतारो, नहिं प्रण जात हरो।

स्वामी जी – अत्यंत भावुक एक बिलखते बालक की तरह नर्तकी के आगे हाथ जोड़े घुटनों के बल बैठे हुए – मां मुझे क्षमा कर दो मां, मैं आज यह कैसे भूल गया कि नारी तो एक मां होती है, नारी सृजन स्वामिनी होती है और मैं उसी माता का अपमान करके जा रहा था। क्या यही मेरा सन्यास है। धिक्कार है मुझे और मेरे इस सन्यास व्रत को जो मेरे और नारी के बीच के भेद ज्ञान को मिटा न सका। हे माता मैंने अपराध किया है, मुझे अपना मूढ़ पुत्र समझ कर क्षमा कर दे माँ, क्षमा कर दे।

(धीरे धीरे पर्दा गिरता है।)

(यहां मैं बता दूं कि इस भजन के दृश्य का रिहर्सल बीसों बार पात्रों ने मंचन के पहले किया था, परन्तु वास्तविक मर्म कभी उत्पन्न न हो सका था। एक दिन पूर्व ही इस भजन की व्याख्या स्वामी जी की भूमिका अदा कर रहे पात्र को ज्ञात हुआ था, और उस दिन मंच पर प्रस्तुति के दौरान उसे वह व्याख्या याद आ गयी तो अनायास आंखों से अश्रुधार फूट पड़े, सामने बैठी नर्तकी अपनी भाव भंगिमा भूल कर आवाक स्वामी जी के उस पात्र को देख-देख रोती जा रही थी। पार्श्व में गाती हुई शिक्षिकाएं भी रोने लगीं तो भजन के स्वर में एक प्राकृतिक करुणा आ गयी। फोटोग्राफर भी आवाक फोटो खींचना भूल गया। और तो और सामने बैठी मुख्य आतिथ्या भी रोने लगीं। वहां उपस्थित शायद ही कोई दर्शक हो जिसके आंख नम न हुए हों। अगले दृश्य के लिए वह पात्र तुरन्त तैयार नहीं था, उसके आंसू थम नहीं रहे थे, घोषणा की गई कि नाटक का शेष भाग कुछ अन्य कार्यक्रमों के बाद प्रस्तुत किया जाएगा, तो दर्शकों में एक कोलाहल होने लगा, तब उस समय संस्था के अध्यक्ष स्वयं पर्दे के पीछे आये थे और उन्होंने स्वामी जी की भूमिका के उस पात्र को ढांढस बंधाया था। कुछ देर बाद फिर अगले दृश्य में शिकागो की विश्व धर्म सभा का मंचन हो कर नाटक समाप्त हो गया था।)

**

# प्रकृति का सन्देश

श्री पी.एल.देवांगन. मौ.वि. बी (सेवा निवृत्त)

मानव ने किया प्रकृति का दोहन
जीवन के भौतिक सुख लेने;
और प्रयोगों से विज्ञान-तकनीकी के
प्रकृति को चला चुनौती देने।
असीम ऊर्जा परमाणु विखंडन की
पृथ्वी आग का गोला बनाया;
आधुनिक तकनीक से फसलोत्पादन
विषैले भोज्य-पेय अपनाया।
उत्सर्जन से अनेक ग्रीनहाउस गैसें
दुष्प्रभाव ओजोन परत पर देखे;
असीमित भू-गर्भ तेल निष्कर्षण
महासागरीय जल प्रदूषण सरेखे।
कृत्रिम गर्भधान से भ्रूण विकास
जटिल जैव प्रजनन क्रिया बनाया;
वांछनीय काट-छांट अंगों को
परिवर्तन जन्म-मृत्यु दर में लाया।
अनेक विद्युत-चुंबकीय तरंगों से
सूचना प्राप्ति के साधन है निर्मित;
राकेट प्रक्षेपण व अंतरिक्ष सैर से
सार्वभौमिक दूरसंचार परिभाषित।
मौसम पर निगाह उपग्रह राडार से
प्रादुर्भाव कृत्रिम वर्षा का बनाया;
चलकर अपने कृत्रिम विकासपथ
निराधार स्वयम्भू प्रकृति बनाया।

किन्तु इन जख्मों से घायल प्रकृति
अपने पागलपन के खेल दिखाती;
भौगोलिक प्राकृतिक आपदायें और
दो-चार वीभत्स रूप से कराहती।
हैजा मलेरिया हृदयाघात कुपोषण
बीमारियाँ अब भी हमें चिढ़ाते;
पंचतत्वों में मानव जनित प्रदूषण
अपार जनसंहार प्रशस्त कराते।

यातायात और सामरिक दुर्घटनाएं
मानविक भूलों का अहसास कराती;
प्राकृतिक दुर्घटनाओं की आवृत्तियाँ
जलवायु परिवर्तन सुनिश्चित कराती।
ज्वालामुखी भूकंप सुनामी जैसी
भू-आपदायें उदित हो जाते;

अवर्षा अतिवृष्टि आंधी-तूफ़ानादि
मौसमी रौद्रता तांडव मचाते।
मानव मस्तिष्क का तिकडमी खेल
चुनौती प्रकृति के लिए बनी है;
पर हश्र देख लो दुनिया वालों
महाविनाशक बन चुकी जमीं है।

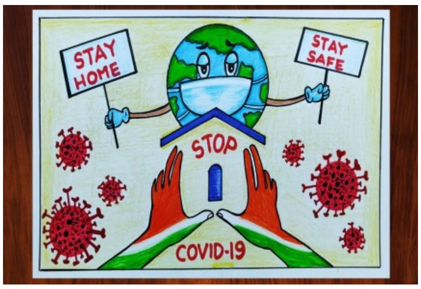


अब कोरोना से सन्देश-प्रकृति का
उपहास इतना न कर डालो;
दूभर पर्यावरण बना स्वअस्तित्व
खतरे में डायनासोर सा न डालो।

**

# लोणार सरोवर : सफ़रनामा

श्री प्रकाश चिंचोले, मौ.वि.ए

नागपुर से लगभग 360 किलोमीटर की दूरी तय करने में लगभग 8 घंटे का सफ़र अपेक्षित था। एमटीडीसी रिसोर्ट होटल मैनेजर के लिए ड्यूटी समाप्त कर घर लौटने का समय था, उन्हें भी हमारा ही इंतजार था। खाना रात 9 बजे तक उपलब्ध होने की जानकारी उन्होंने पहले ही दी थी। होने वाली देरी का आकलन करते हुए मैनेजर को कमरे में खाना रखने को कहा गया। कहीं पर रास्ता ख़राब, कहीं बारिश, इन छोटी-छोटी समस्याओं से लगभग एक घंटे का समय अधिक लगा, दो बजे निकले थे, 11 बजे हम सकुशल पहुँच गए। दूसरे दिन की प्लानिंग करते रात बीत गई।

16 से 23 तारीख, समय के रफ़्तार का पता ही नहीं चला... महज़ एक-दो पंक्तियों में किसी भी कलाकार की खूबियों को व्यक्त करने में हम गलती कर सकते है। उम्मीद है कि पात्र परिचय एवं उल्लेखनीय क्षणों को महसूस किया जा सकेगा।

मुख्य मार्ग पर स्थित जीवन एजेंसी से संपर्क किया गया। सिविल तथा अन्य कार्यों के लिए मटेरियल सप्लाई करने का शानदार अनुभव। लोणार के आसपास के दर्शनीय स्थलों की जानकारी सुनकर एक गाइड की प्रतिभा उस व्यक्तित्व में नज़र आने लगी थी। 'यह हमारा नंदू है यह सब देख लेगा' हार्ड-वेयर की दुकान में काम करते नंदू का बस इतना ही परिचय कराया था उन्होंने।

**नंदू एवं स्थानीय साथी टीम : -** विश्वसनीयता बनाए रखते हुए बरसों तक एक ही दुकान में कार्य करने का हुनर, मज़दूर की अनुपस्थिति में खुद कार्य निपटाने की क्षमता...। **आशा :** मास्ट पर डेटा लॉगर तथा अन्य सेंसर स्थापित करने का तकनीकी अनुभव, जहाँ ज़रूरी हो संपर्क करते हुए समस्याओं का समाधान ढूंढना...। पुणे से लोणार की दूरी को स्वयं कार चलाते हुए... प्रताप और जयंत को साथ लाना, इसे उल्लेख करते हुए मुझे स्वयं खुशी होती है, उम्मीद है किसी और को ज़रूर प्रेरित करेगा।

**प्रताप :** फेब्रिकेशन कार्य करने वालों के माध्यम से मास्ट को तैयार करना, फाउंडेशन तैयार करते हुए मास्ट खड़ा करने का अनुभव...।

**जयंत :** सर्किट डायग्राम देखकर लाल पीली नीली तारों का योग्य स्थान बताते हुए समय-समय पर दिया जाने वाला मार्गदर्शन...।

**अविनाश :** बीच-बीच में नट-बोल्ट टाइट करने में अपनी भूमिका निभाते नजर आते...। एक दूसरे को जोड़ते ये छोटे-बड़े नट-बोल्ट से लेकर मौसम के तत्वों का आकलन करते ये महंगे सेंसर...इसके निर्माण से लेकर योग्य स्थान पर स्थापित एवं कार्यशील होकर अपना

हुनर दिखाते सभी की भूमिका को रेखांकित किया जाना योग्य है। सिविल और तकनीकी कार्यों का योग्य संगम यहाँ देखने को मिला। बैकग्राऊंड में समय-समय पर मिल रहे मार्ग-दर्शक तत्वों की निगरानी भी।

समय पर कार्य पूरा करते हुए हम लौटने को तैयार थे। लौटते समय मूसलाधार बारिश ने हमारी गति को कुछ धीमा ज़रूर कर दिया लेकिन सुरक्षित घर लौटने का आनंद...एक सुखद अनुभव था। "वातानुकूलित गाड़ी में यह समस्या नहीं होती ", एक हाथ से स्टीयरिंग व्हील और दूसरे हाथ से काँच को पोंछते हुए ड्राइवर के शब्द, महसूस करा गया कि सफ़रनामा इनके बिना पूरा कैसे हो सकता है। काँच पर सफ़ेद आवरण सा छा जाना, बीच-बीच में सूखे कपड़े से भीतर से ही काँच को साफ़ करते रहना...महसूस करता रहा कि ड्राइवर सीट की बगल में बैठ कर सफ़र का आनंद कुछ इस तरह भी लिया जा सकता है।

लॉकडाउन में स्पीड-पोस्ट से भेजा गया पार्सल अपेक्षित समय में पहुँच नहीं पाया। पुणे से लोणार बुक किया गया पार्सल नागपुर - मलकापुर के रास्ते मेहकर तक ही पहुंच पाया। एक ऐसी स्थिति, गंतव्य तक तो हम पहुंच गए... लेकिन सामान पीछे छूट गया! प्लानिंग कहाँ चूक सकती है?

एक स्तर से कम या अधिक होता तत्व, मौसम में परिवर्तन का सामर्थ्य रखता है। बेचैनी बढ़ती गई क्योंकि पार्सल में कुछ चीजें ऐसी थी जिसके बिना काम आगे बढ़ नहीं सकता। ऐसी अवस्था में विचार करने में एक दिशा और गति का बोध करा दिया कि निर्णय ले या इंतजार करें? लोणार पोस्ट मास्टर से स्थापित किया गया संवाद योग्य रंग लाया। कार्यालयीन वाहन को मेहकर भेजकर पार्सल को लोणार लाया गया। लोणार पोस्ट मास्टर को व्हाट्स एप्प पर शुक्रिया संदेश... हिंदी में...

'आप बस यहाँ पहुँच जाए, बाकी हम सब देख लेंगे।' तहसीलदार लोणार की पहली प्रतिक्रिया से लेकर कार्य समाप्त होने तक... सहकार्य की भाषा, उद्देश्य तक पहुंचने में अपनी भूमिका निभा रही थी।

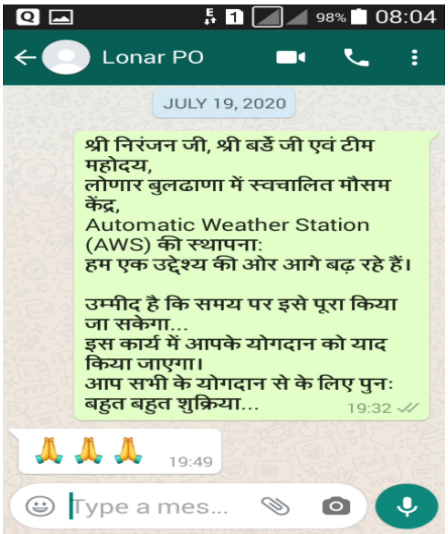

तहसीलदार लोणार, एवं अधिकारी...उदघाटन समारोह के अवसर पर ।

## लोणार येथे हवामान केंद्र कार्यान्वीत

हवामान केंद्र शुभारंभ प्रसंगी तहसीलदार सैपन नदाफ व इतर

**लोणार ■ विशेष प्रतिनिधी**

उच्च न्यायलय न्यायलय खंडपीठ नागपूर यांच्या निर्देशानूसार भारतीय संशोधन विभागाच्या वतीने स्थानीक तहसील कार्यालयाच्या परीसरात हवामान केंद्र शुभारंभ तहसीलदार सैपन नदाफ यांच्या हस्ते २१ जूलै रोजी करण्यात आला व ते सुरुही झाले.

या हवामान केंद्रामुळे आता शहरातील हवामान, तापमान, पाऊस तसेच वातावरणाशी निगडीत सर्व माहीती मिळणार आहे. हे हवामान केंद्र उभारणीसाठी ३१ जूनपर्यत मुदत देण्यात आली होती परंतु लॉकडाऊनमुळे ते २१ जूलै रोजी सुरु करण्यात आले. यासाठी पुणे व नागपूर येथील टिम आली होती.

तहसील कार्यालयाने परिसरात या हवामान केंद्राला जागा उपलब्ध करुन दिली यामुळे शहरातील वातावरणाशी निगडीत सर्व माहीती नागरिकांना बेबसाईटवर कोठूनही पहाता येईल.

**- सैपन नदाफ**
तहसीलदार, लोणार

ePaper देशोन्नती Wed, 22 July 2020 https://deshonnati.digitaledition.

लोणार में मौसम केंद्र कार्यान्वित...'देशोन्नति'- स्थानीय मराठी दैनिक में प्रकाशित जानकारी।

**हिंदी और मैं...**

लोणार सरोवर - महाराष्ट्र के बुलढ़ाणा जिले में स्थित एक अद्वितीय पर्यटन स्थल है। हिंदी भाषा में लिखे गए 'दौरा रिपोर्ट' का यह एक मानक नमूना नहीं हो सकता।

ज़मीन के एक बेहतरीन साइट का चयन न किया होता...? मास्ट तैयार न होता तो...? उपकरण सेंसर सही समय पर नहीं पहुंच सके तो...? मन में उमड़ते तमाम विचार अब थम से गए है साथ ही भविष्य के लिए सीख दे गए। द्विभाषीय बोर्ड स्थापित करने में आनंद का स्तर कुछ और ही था। स्थानीय भाषा मराठी है। बोर्ड को कोई भी पढ़े ...अपना

समझ ले! दूर बैठा कोई मौसम के आंकड़ों का विश्लेषण कर सकेगा।

चित्र: मास्ट पर डेटा लॉगर तथा अन्य सेंसर स्थापित करने से पहले पेंटिंग कार्य

चित्र: लोणार सरोवर ...फेंसिंग के तारों के बीच से लिया गया चित्र। पानी का रंग बदलता है ... यह विषय आश्चर्यचकित करने के लिए पर्याप्त है। लोणार सरोवर के पानी का रंग कुछ दिनों के लिए गुलाबी दिखाई देने लगा था। वैज्ञानिक ज़रूर इस पर शोध करते होंगे लेकिन मौसम के तत्वों का असर जानने के लिए लोणार में स्थापित यह स्वचालित मौसम केंद्र महत्वपूर्ण योगदान अवश्य देगा।

'विश्व प्रसिद्ध लोणार सरोवर से पानी मिट्टी या किसी भी प्रकार की वस्तु बिना अनुमति एकत्रित करना एवं प्रवेश करना नियमानुसार प्रतिबंधित है।', तारों की फेंसिंग पर बोर्ड लगा था। बोर्ड पर छपे दिशा निर्देश महत्वपूर्ण थे। लेकिन बादलों के चित्र लेने से कौन मना करता है?

चित्र: उच्च स्तर के मेघ- लोणार।

चित्र: लोणार बुलढाणा में स्वचालित मौसम केंद्र, Automatic Weather Station (AWS) की स्थापना: दिनांक 20 जुलाई 2020

द्विभाषीय बोर्ड

द्विभाषीय बोर्ड

चित्र : लॉक-डाउन के दौरान अलग-अलग स्थानों से लौटे स्थानीय लोगों के माध्यम से पूर्ण किया गया निर्माण कार्य ...

विभागीय अधिकारीगण

# लघुकथा : गिफ़्ट

'होने वाले साले के दोस्त की शादी थी, और वह भी वहाँ आने वाली थी, उससे मुलाकात न हो सकी', यह कहते हुए ड्राइवर के चेहरे पर मायूसी झलक रही थी। अचानक ही दौरे पर प्रस्थान करने संबंधित आदेश से उसे भी हमारे साथ आना पड़ा। कुछ पल के लिए किसी का दीदार हो जाए.. किसी के लिए ऐसे स्वर्णिम अवसरों को मानो हमने छीन लिया था।

'क्या करें, हमें भी कुछ महत्वपूर्ण काम छोड़ कर आना पड़ा', यह कहते हुए, अपनी बैग से एक नया पैकेट निकाला और उसमें से मैंने सफ़ेद मास्क निकालकर दिखाते हुए अपनी बात जारी रखी। 'ये देखो, कल मेरे बेटे का जन्मदिन दिन था और उसने मुझे यह N95 गिफ़्ट दिया है।'

'हमेशा तो मैं अपने हाथों से बनाया हुआ मास्क पहनता हूँ लेकिन बेटे ने N95 दिया है। उस पर लगी सफ़ेद प्लास्टिक की गोल बटन को घूमा कर देखते हुए सोचने लगा कि यह घूमती भी है या नहीं ?

'लेकिन बेटे को तो गिफ़्ट पिता दिया करते है ?

ड्राइवर का यह प्रश्न मुझे भी स्तब्ध कर गया।

'जी हाँ, कुछ पल महसूस करें, कौन किसे गिफ़्ट दे रहा है, क्या दे रहा है!

**

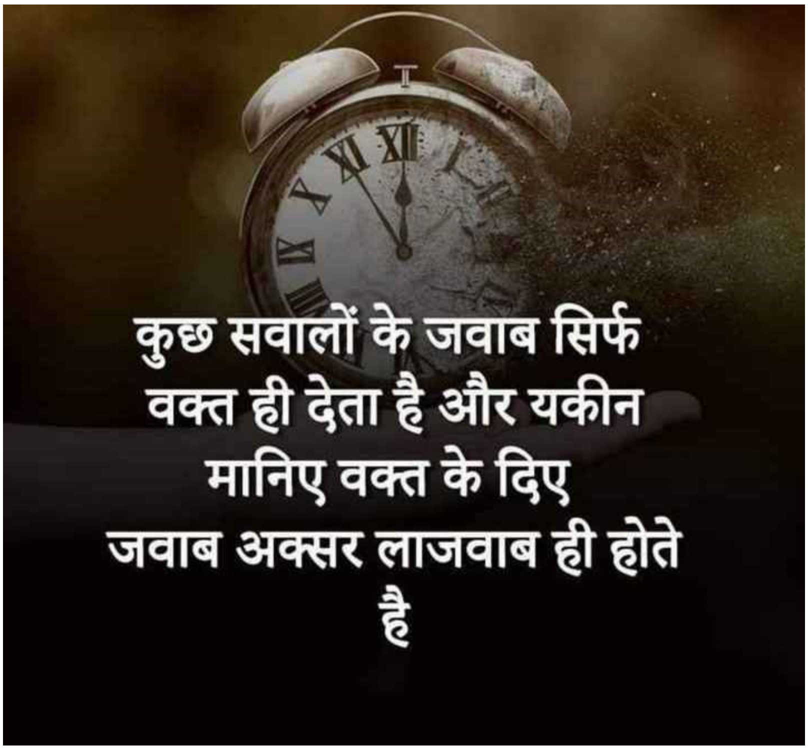

# भारतीय संस्कृति

श्री एम.आर.कान्होलकर, वै.स.

आधार स्तंभ है, भारतीय संस्कृति भारत की ।।
जीवन का आरंभ कराती देन है, ईश्वर की ।।धृ।।

मन से पहचाने मानव इसे समझ-बुझकर जाने इसे ।
मानवता का राज इसी में, प्यार की फुहार इसी में ।
संस्कारों में ही छिपी है, छाया इसी के आकृति की ।
विदेशियों ने भी स्वीकार कर ही पावती स्वीकृति की ।।

आधार स्तंभ है, भारतीय संस्कृति भारत की ।
जीवन का आरंभ कराती देन है, ईश्वर की ।।धृ।।

गीता, कुरान, बाईबल और है त्रिपीठक ।
चार ग्रंथों की अमृतवाणी, उपनिषदों की अमर कहानी ।
व्यास, पैंगंबर, जीसस और कहे भगवान बुध्द जी ।
संस्कारमय रहे संसार सारा, चले संतुलित जीवन धारा ।
संसार की रचना इन्ही की, संस्कृति की उपज भी इन्ही की ।

आधार स्तंभ है, भारतीय संस्कृति भारत की ।
जीवन का आरंभ कराती देन है, ईश्वर की ।।धृ।।

रिश्तों की नींव बनाए, दूरियां आपस की पास लाए ।
नर हो या नारी हो पशु हो या प्राणी हो ।

धरोहर है सब इसी के, चलना सभी को साथ इसीके ।
करो पूजा, प्रार्थना, पढ़ो नमाज या करो सिर्फ ध्यान ।
संस्कृति से ही बनी है, मानव की आन-बान-शान ।

आधार स्तंभ है, भारतीय संस्कृति भारत की ।
जीवन का आरंभ कराती देन है, ईश्वर की ।।धृ।।

माता-पिता का आदर सिखाए, गुरूजनों का सम्मान सिखाए।
ये भारत की संस्कृति हर मन में प्रेम के दीप जलाए।
त्यौहारों में याद इसकी आये, जन-जन सारे तभी मनाए।
खुशहाली घर-घर में आए, दिपावली, दशहरा और ईद की।

आधार स्तंभ है, भारतीय संस्कृति भारत की।
जीवन का आरंभ कराती देन है, ईश्वर की ।।धृ।।

आम जाने, सब ज्ञानी जाने, जाने सारा संसार।
जो संतों की वाणी माने वो ही है समझदार।
संस्कृति कहे मानव से करो मानवता से प्यार।
मिटी है, ना मिटेंगी ये लीला अपरंपार।

आधार स्तंभ है, भारतीय संस्कृति भारत की।
जीवन का आरंभ कराती देन है, ईश्वर की ।।धृ।।

**

# वृद्धता का वाराणासी

श्री ए. एम. भट्ट , मौ.वि.ए, मौ.का.अंबिकापुर

एक चमचमाती लाल रंग की कार बंशीपुर की ओर दौडी चली जा रही थी । बांयी सीट पर बैठा युवक कोई बडा व्यापारी सा लगता था। उनकी धर्मपत्नी कार चला रही थी। बंशीपुर बनारस से कोई पांच किमी दूर एक कस्बा था। वहां एक वृद्धाश्रम में उस युवक के पिता रहते थे। प्रतिवर्ष उनके जन्मदिन पर उनका बेटा और बहु उन्हें मिलने आते थे। आज युवक कुछ उदास था । बीच-बीच में अपनी पत्नी को देख लेता था जो अपनी ड्राइविंग के आनन्द में खोई हुई फर्राटा भरी चली जा रही थी। अभी बंशीपुर कोई एक डेढ़ किलोमीटर रहा होगा कि एक जोरदार ब्रेक के साथ गाड़ी घिसटती चली गयी और दांई ओर से जा रहे एक साईकिल सवार से टकरा गई। साईकिल सवार छिटक कर दूर जा गिरा, उसके घुटने से लहू निकल आया था। साईकिल आगे से बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो चुकी थी। गाड़ी किनारे खड़ी कर दोनों नीचे उतरे । मोहतरमा बिफर रही थी – 'साईकिल चलानी नहीं आती है तो सड़क पर क्यों आ जाते हो?' अभी वो और कुछ कह ही रही थी कि युवक ने उसे शांत किया। आसपास के लोगों की भीड़ बढ़ने लगी। साईकिल वाला युवक शांत खड़ा था। दूसरी ओर जा रहे एक अधेड़ जो कि किसान सी वेशभूषा में दिख रहे थे, वे अपनी मोटरसाइकिल खड़ी कर वहां आये और अपने अंगोछे से युवक का घुटना पोछते हुये बोले - 'इस लड़के की कोई गलती नहीं थी। भगवान का आर्शीवाद है कि बड़ी अनहोनी टल गयी। आप आगे बढ़ जाइये, फालतू भीड़ बढ़ेगी।' वे दोनों आगे बढ़ गए।

सामने वृद्धाश्रम था । दोनो भीतर घुसे, जानकारी ली तो पता चला उनके पिता की तबियत खराब थी सो उन्हें बनारस के किसी अस्पताल में अभी थोड़ी देर पहले ही भेज दिया गया है। युवक ने पूछा – 'क्या हो गया था उनको ?' जवाब मिला – 'पता नहीं, रात से बेहोश थे। 'युवक के मुंह से ओह निकल कर रह गया। एक अनजाना भय उसके अंतर्मन को कुरेदने लगा। भाव विभोर दोनों पति-पत्नी अस्पताल की पूरी जानकारी लेकर बाहर निकले। गाड़ी पर सवार हो गए। इस बार गाड़ी युवक चला रहा था। चेहरे का भाव देख कर पत्नी सहमी हुई सी बैठी थी, एकदम चुपचाप। युवक के मानसपटल पर बीते दिनों की तस्वीरें उभरने लगी थी। माँ कब साथ छोड़ गयी याद नहीं। माँ का फर्ज भी पिता ने ही पूरा किया। वो किसान थे। रेवतीपुर में हमारा पुश्तैनी मकान है और करीब 40-50 एकड़ की खेती। किसानी के काम से पिता ने मुझे हमेशा दूर ही रखा। मैं पढ़ता गया और बिजनेस की बारीकियां सीखता गया। 22 वर्ष की अवस्था में ही पिता ने मुझ पर जोर डाल कर मेरा विवाह करा दिया। बोले बेटा घर में एक बहु-लक्ष्मी ला दो। तुम्हारी माँ के बाद घर की रौनक मुरझा गयी है। मेरा विवाह हुआ, दीपा घर आयी, पिताजी की आनन्द की सीमा बढ़ी। पर मुझे अभी अपना कारोबार खड़ा करना

था, इसलिए मुझे दिल्ली-मुम्बई की राह पकड़नी पड़ी। मैंने पिता जी और पत्नी को शहर में ही रखने का फैसला किया। शहर में एक आईसक्रीम कैफे की दुकान खोली और व्यापार शुरू किया। मेरे नहीं रहने पर पिता जी ही दुकान देखते थे। कैफे के मैनेजर भी उनका सहयोग करते थे। अब पिताजी नियमित दुकान जाने लगे थे। वहां उनका मन बहलता था, कुछ मित्र भी आ जाते थे तो अकेलापन नहीं रहता था। पिताजी नियमित रात को दुकान से आते और दिन भर की पूरी आमदनी बहु को सौंप देते। शुरुआत में दुकान अच्छी चल निकली पर मौसम बदलने के साथ कुछ मंदी आनी शुरू हुई तो आमदनी घटने लगा। बस यहीं से विश्वास की डोर दरकनी शुरू हुई। पत्नी को लगा अब पिताजी ईमानदार नहीं रहे और रोज कुछ माल गायब करने लगे हैं। उसने मुझसे आग्रह किया था – 'अजी, मैं घर में अकेली बोर हो जाती हूँ इसलिए कल से दुकान मैं जाऊंगी।' मैंने पिताजी से विमर्श किया, उन्होंने कहा – 'ये तो बहुत अच्छी बात है। आगे तो तुम्हीं लोगों को कारोबार चलाना है।'

अब पिता जी घर में रहते थे और बहू कैफे सम्हालने लगी। परन्तु रात में आने के बाद घर का काम, बर्तन, खाना पीना, साफ सफाई। अब उसकी झुंझलाहट साफ दिखने लगी थी। एक दिन उसने पिता जी को कह ही दिया था – 'दिन भर घर में रहते हैं, थोड़ा साफ सफाई ही कर लेते, बर्तन धो सकते थे।' अब ये एक बार जो उलाहना शुरू हुआ तो दैनिक कार्यक्रम बनता चला गया। पिता जी हमेशा मुस्कुराते रहते और अपनी पीड़ा छुपा कर सामर्थ्य अनुरूप काम भी करते। हद तो तब हो गयी जब दीपा तुम तड़ाके पर आ गयी। उस दिन मैं बंगलोर में एक बड़ी कम्पनी के शुरू करने की पूरी प्रक्रिया के बाद खुशी-खुशी घर लौटा था। पिताजी का आशीर्वाद लिया था, मिठाइयां खायी थीं। रात में भोजन के बाद पिताजी ने मुझे बुलाया और कहा – 'बेटा मैं कुछ दिनों के लिए बंशीपुर जाना चाह रहा था। बहुत दिन हो गया, सोच रहा हूँ थोड़ा देख आऊं की खेती कैसी चल रही है।' मैंने भी हामी भर दी। अपने कमरे में आया तो बार-बार एक विचार कि मैं इतने दिनों बाद घर आया हूँ और पिता जी जाने की बात क्यों कर रहे हैं? खैर उनकी अपनी इच्छा। सुबह पिता जी तैयार थे, उन्होंने मुझसे पचास रुपया मांगा, बोले वहां बच्चों को मिठाई खिलाऊंगा। मैंने जैसे ही पर्स खोला, श्रीमती जी टपक पड़ीं – 'अरे पैसे मैं देती हूँ, ज्यादा पैसे वहां उड़ाने की क्या जरूरत है। उसने 20 रुपया पिताजी की हाथ पर रख दिया।

पिताजी बोले – 'ठीक कहती हो बेटी, पैसे ज्यादा होने पर अभिमान आ जाता है। फिर वहां बच्चे ही कितने होंगे। अच्छा मैं चलता हूँ, पांच किमी ही तो जाना है, पैदल ही थोड़ा टहलना भी हो जाएगा।' हम दोनों ने उनके पैर छू कर आशीर्वाद लिया और पिताजी विदा हो गए।

इस बार मैंने दीपा की भाव भंगिमा में बड़ा अंतर पाया था। पिताजी के साथ एक रूखापन, रात को सोने के पूर्व उनके कमरे में पानी नहीं रखना, पिताजी के कमरे की घड़ी का बन्द होना और पिताजी के पैर छूने के तरीके में अंतर, न सिर पर पल्लू न बैठकर पूरी आत्मीयता का बोध के साथ चरणों का स्पर्श। दिन भर इसी तरह के उधेड़बुन में पड़ा रहा, मैं रात को सो न सका। अगली सुबह मैं गाड़ी उठाया और फार्म हाउस की ओर चल पड़ा। फार्महाउस के बाहर ही बिरजू हलवाई की माँ खड़ी थी। उसने बड़े ध्यान से मुझे देखा, जब पहचान गयी तो एकदम से पुलकित होती हुई मेरी बलाइयां उतारने लगी। बोली – 'आईये बाबू, मैं तो पहचान नहीं सकी, आ-आज सुबहे सुबह का बात है? मालिक का, का हाल है? बहुत दिन हो गया, आवे नहीं हैं।

माता जी के प्रश्नों ने मेरे पैरों के नीचे की जमीन खिसका दी – 'बड़े मालिक कैसे हैं? 'तो क्या पिताजी कल यहां नहीं आये? माताजी मजाक नहीं कर सकती। मैंने पूछा – 'माई, बाबूजी कल नई आवे रहे का ?' माता जी – उनहूँ। मैं वहां से हर सम्भावित जगहों पर दिन भर भटकता रहा, आखिर पिताजी कहाँ गए होंगे? इतना बड़ा स्टेप कोई ऐसे ही नहीं ले लेता है। जरूर कोई बड़ी बात हुई है। मैं शाम को कोतवाली पहुंचा, रिपोर्ट दर्ज कराया और फोटो जमा किया। हवलदार ने कहा साहब एक मिनट रुकिए, आज की रिपोर्ट एक नजर देख लूं, फिर हम पूरी कोशिश करेंगे, आपके पिता को ढूंढने के। थोड़ी देर बाद उसने बताया आपके पिता कल ही बंशीपुर के वृद्धाश्रम पहुंच गए हैं।

मैं अवाक, हतप्रभ, भाव शून्य – वृद्धाश्रम !

मैं बंशीपुर की ओर चल पड़ा, वहां से तकरीबन 225 किमी। रात के कोई 9 बजे होंगे और मैं बेतहाशा चला जा रहा था। एक तूफ़ान, एक बवंडर, एक झंझावात, जैसे कोई जीवन की डोर टूट गयी हो। सुबह के 8 बजे थे और सामने था बंशीपुर का वृद्धाश्रम। भीतर गया देखा पिता जी आराम कुर्सी पर बैठे चाय पी रहे थे। मेरा कण्ठ अवरुद्ध हो चुका था, मैं कुछ बोल नहीं पाया, सीधे उनके चरणों में गिर गया। पिताजी ने अपने उसी अपने चिर परिचित मुस्कान के साथ मुझे उठाया। बोले – दीपक बेटा, तुम यहां? आओ, चाय पियो।

मैंने पिता जी का हाथ पकड़ा बोला – चलिए मैं आपको लेने आया हूँ। आपने इतना बड़ा दंड मुझे क्यों दे दिया बाबूजी? मेरी गलती थी तो मुझे बोलते, मारते, सजा देते पर आपने खुद को क्यों सजा दे दिया?

पिता जी ने मेरा बांह पकड़ कर मुझे अपने पास बैठाया और समझाया – 'बेटा, मैं कुछ दिन अकेले में जीना चाहता हूं, उम्र के इस पड़ाव पर वैसे भी वानप्रस्थ होने का विधान है। इसलिए सूखी मन से घर जाओ, मुझे कोई भी दिक्कत होगी मैं स्वयं घर चला आऊंगा। बहुरानी का ख्याल रखना, कभी उससे झगड़ा नहीं करना, वो तुम्हारी जीवन-संगिनी है। हो सके तो प्रतिवर्ष मेरे जन्मदिन पर दोनों आ जाना। अब कोई सवाल जवाब

किये बिना, बेटा घर जाओ, बहु राह देख रही होगी।' मैं निरुत्तर आंसू पोछता बाहर निकल आया था।

अचानक मुझे तेज ब्रेक लगाना पड़ा, सामने बनारस का वही अस्पताल था जहाँ आज पिताजी को लाया गया था। गाड़ी रुकते-रुकते एक युवक तक पहुंच ही गयी थी, पर टकराई नहीं । देखा तो यह तो वही युवक था जिसकी साईकिल से सुबह टक्कर हुई थी। मन में विचार आया 'आखिर कौन है यह जिससे बार-बार मेरा सामना हो रहा है। मैं गाड़ी से उतरा, उस युवक से कहा – सॉरी भाई, गलती हो गयी। युवक ने कहा – नहीं साहब मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मैंने पूछा - यहां कैसे? युवक – मेरे ददू बीमार हैं। दवा लाने जा रहा हूँ। मैंने कहा – अच्छा।

युवक चला गया। मैं सपत्नीक भीतर आई सी यू की तरफ बढ़ गया। नर्स ने कहा – अभी यहीं बैठिये, थोड़ी देर में मिलवा देंगे। हम वहीं बैठ गए। कोई पांच मिनट के अंतराल में वह युवक भी दवा ले कर आ गया। नर्स को देते हुए बोला – 'अब तो मेरे ददू ठीक हो जाएंगे न सिस्टर।' सिस्टर – 'भगवान पर भरोसा रखो, सब ठीक होगा।' फिर वह युवक भी हमारी बगल में ही बैठ गया। मैंने बात छेड़ी – 'क्या नाम है तुम्हारा?' जवाब में उसने कहा – दीपक। मैंने कहा वाह ! – 'मेरा नाम भी दीपक है। 'हम दोनों ने एक दूसरे को देखा था। मैंने कहा भाई सुबह तुम्हारी साईकिल टूट गयी, मुझे दुख है, मैं उसकी मरम्मत करा दूंगा। उसने कहा – मैंने उसी समय वो साईकिल कबाड़ वाले को बेच दी साहब, ददू के इलाज के लिए पैसे की जरूरत थी ना। मैं हतप्रभ उसे देखता रहा। साहब वृद्धाश्रम से 500 रुपये मिले थे, वो तो आते ही खत्म हो गए। साइकिल का पैसा भी अब खत्म। तभी सिस्टर ने आवाज दी – ;दीपक, ददू को होश आ गया है। वो तुम्हें बुला रहे हैं।' दीपक लगभग दौड़ता हुआ भीतर घुस गया। सिस्टर ने हमें भी कहा आप भी अब मिल सकते हैं। हम भी आई सी यू में दाखिल हो गए। पिताजी के बेड के पास पहुंचा तो एकदम से चौंक गया। दीपक मेरे पिताजी का हाथ अपने हाथ में लिए बोल रहा था – 'ददू तुम बड़े नाटकबाज हो ! कोई इस तरह बेहोश होता है !!'

मेरी दोनों आंखों से आंसू के धार फूटे जा रहे थे, मुझे वहां देख कर दीपक खड़ा हो गया और मैं अनायास उसके चरणों में झुकता चला गया। दीपा भी पिताजी की छाती पर सिर रख फूट-फूट कर रो रही थी। मुझे दीपक ने सहारा दिया। मैं पिताजी के चरणों को स्पर्श कर एक अपराध बोध से सहमे कृतघ्न की भांति खड़ा था। पिताजी मुस्कुराए, बोले – 'बेटा तुम दोनों कैसे? दीपिका बेटी और दीपू बेटा अब कहाँ क्या कर रहे हैं ?' मैं भर्राए और रुंधे गले से इतना ही कह पाया – 'सब ठीक हैं बाबूजी।'

हम कोई सात दिन उसी अस्पताल में रहे और पिताजी के पूरे स्वस्थ होने पर उन्हें ले कर वृद्धाश्रम पहुंचे। दीपक को मैंने पहले ही पिताजी का सारा सामान पैक कर लेने को

कह दिया। था। पिताजी को हाल में छोड़ कर मैं ऑफिस में गया और पिताजी को साथ ले जाने की सारी कार्यवाही पूरी करने लगा। अंत में कार्यालय प्रमुख ने एक वसीयतनामा दिया, जिसमें लिखा था कि 'जिस दिन मैं वृद्धाश्रम से विदा हो जाऊंगा उस दिन से मेरे नाम की सारी संपत्ति का उपयोग जन कल्याण के लिए होगा और उस पर मालिकाना हक दीपक वल्द सियम्बर राम ग्राम पारसपुर का होगा। 'मैंने वसीयत पढ़ा और दीपक को भीतर बुला कर उसे वसीयतनामा दे दिया। दीपक बार बार उसे पढ़ता और और रोता जाता, वह बड़बड़ाया – 'ददू तुम्हारा नाटकबाजी खत्म नहीं होगा! मेरी हैसियत क्या तुमसे छुपी है। 'उसने उस वसीयत को फाड़ कर चिन्दी-चिन्दी कर दिया और कूड़ेदान में फेंक दिया। पीछे पिताजी दरवाजे पर खड़े मुस्कुरा रहे थे। दीपक लगभग लड़ने के अंदाज में बोला – 'ददू पिछले 17-18 साल से तुम्हारा नाटक देख रहा हूँ, आज तुमने भी मुझे तौल दिया।' पिताजी ने उसे अपनी छाती से लगा लिया और मुझसे कहा कि मैं एक ही शर्त पर यहां से घर जाऊंगा अगर दोनों दीपक मेरे साथ चलते हैं। इस बार श्रीमती जी ने कहा था – 'हम इनको तो नहीं छोड़ सकते, ये भी जरूर चलेंगे।'

हम सभी लोग एक साथ घर में थे, बच्चे भी आज घर में थे। हम लोगों ने पिताजी का जन्मदिन फिर से मनाया और उसी दिन यह तय किया कि फार्म हाउस की जमीन पर एक वृद्धाश्रम बनाया जाएगा जिसका संचालन दीपक के हाथ में रहेगा। कोई 10-11 वर्ष की अवधि बीत चुकी थी, बिटिया बेटे दोनों की शादी हो चुकी थी। मेरा पूरा कारोबार, फैक्ट्रियां और कम्पनियां सब बेटा ही देखता था। हम दोनों का अधिकतर समय दीपक के साथ बंशीपुर में ही बीतता था। दीपक ने उस वृद्धाश्रम को एक नया आयाम दिया था। अब वहां वृद्ध महिला और पुरुषों के आश्रम के अलावा दिव्यांग, अनाथ और समाज से परित्यक्त लोगों के लिए अलग-अलग प्रकल्प बन चुके थे। आज पिताजी की जयंती थी। मेरे बेटे ने मुख्य द्वार के सामने विशाल प्रांगण में पिताजी की भव्य कांस्य प्रतिमा स्थापित करायी थी। मुझे उस प्रतिमा का अनावरण करना था। कारीगर उस आश्रम के नामपट्ट को आकर्षक रूप देने में जुटे थे। वहां लिखा गया था –

**"श्री सियम्बर राम सेवा आश्रम – बचपन की फुलवारी और वृद्धता का वाराणासी "**

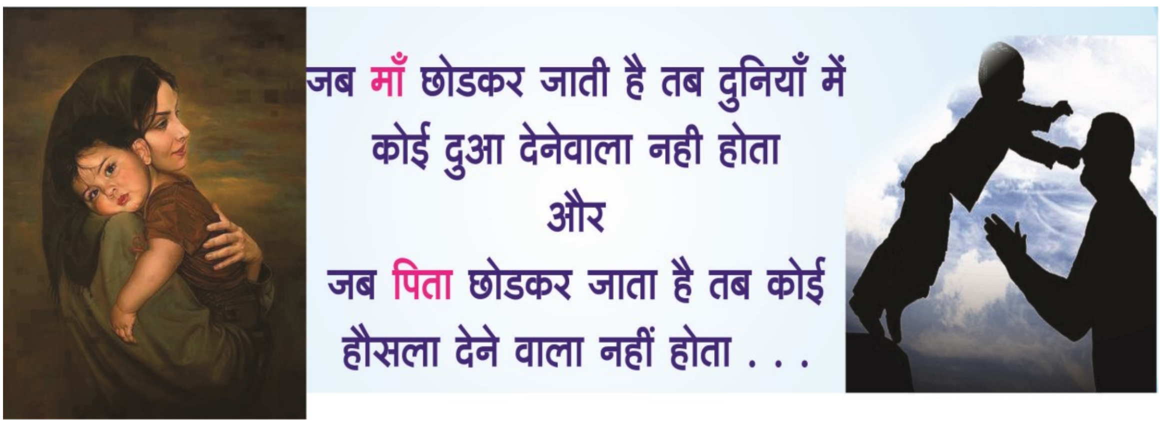

# कोविड-19

श्री ए.वी.गोडे,मौ.वि.-बी (सेवानिवृत्त)

आज पूरे संसार में सिर्फ एक ही गुंज सुनाई पड़ रही है। पूरी दुनिया जिससे भयभीत हो चुकी है । वो डरावनी बीमारी है "कोरोना ". जिसका उपरिकेंद्र चीन का मटन बाजार वुहान शहर था। जहाँ से ये सारी दुनिया में चारों तरफ फैला। लेकिन आश्चर्य की बात है कि चीन के अन्य व्यावसायिक शहरों में यह नहीं फैला। और लगभग सभी देशों के राजधानियों और व्यावसायिक शहरों में पहुंच गया। इस बीमारी ने दुनिया के शक्तिशाली माने जाने वाले देशों को भी अपंग कर दिया। माना जाता था कि अमेरिका, ब्रिटन, इटली, जापान, स्पेन, ऑस्ट्रेलिया और चीन जैसे देशों में अपने-अपने नागरीकों के लिए उच्चस्तरीय बुनियादी चिकित्सा व्यवस्था उपलब्ध है । लेकिन कोरोना वायरस ने इस तरह कहर ढ़ाया है कि वे सभी राष्ट्र उसके कहर के सामाने बौने हो गये। विकसित, विकासशील और अन्य राष्ट्र पहले से ही भूमंड्लीय उष्णन, वायुप्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण, जन संख्या विस्फोट और प्राकृतिक आपदाएं जैसे तूफान, भूकंप, सुनामी, ज्वालामुखी इत्यादि से पीड़ित है। उन्हे आज इस कोरोना वायरस से होनेवाली बीमारी से भी युध्द करना पड़ रहा है। आज लगभग सारी दुनिया में लॉकडाउन (तालाबंदी) की स्थिति बनी हुई है। मानवीय गतिविधियां को विराम लग चुका है जो मानव अपने विकसित किये गए विज्ञान और प्रोद्योगिकी के बल पर प्रकृति पर विजय पा लेने का दावा करता था आज वह दावा खोखला नजर आ रहा है प्रकृति आज मानव संसार पर हँस रही है कह रही है की तूने मेरी अवस्था अपने स्वार्थ और सुख प्राप्ति के लिए तहस-नहस कर दी और आगे भी करना जारी रखेगा। प्रकृति मानव से कह रही है, तु अभी चेत जा, वरना तेरा विनाश होना निश्चित है ।

क्या मानव इसके पहले आये और वर्तमान आपदा से कोई सीख लेगा ? वैज्ञानिकों ने जब लेंस या शीशे का आविष्कार किया, वह एक जीवन सृष्टि को जानने कि मात्र शुरुवात थी। समय के साथ लेंस के उपयोग से सूक्ष्म दर्शक यंत्र का आविष्कार हुआ। इस यंत्र की सहायता से जीवन के रहस्य और संरचना को समझने का अवसर प्राप्त होता है। ज्ञात हुआ की सभी जीव–जंतु एक या अनेक जीवित कोशिका या कोशिकाओं से बने होते है और इन कोशिकाओं में एक जीवित पदार्थ होता है उसे प्रोटोप्लाजम कहते है। ये कोशिका ही जीवित बॉडी की संरचनात्मक और कार्यात्मक इकाई होती है। इन्ही कोशिकाओं से आगे चलकर इल्केट्रान सूक्ष्म दर्शक यंत्र और कम्पूटर प्रणाली के कारण जीवन का रहस्य समझने में मदद हुई। चिकित्सा विज्ञान का तेजी से विकास हुआ मानव स्वास्थ को प्रभावित करने वाले जीवाणु और विषाणु की खोज की गई कई बीमारियों का

इलाज करना इस खोज से संभव हुआ। संसार में प्राकृतिक रुप से पानेवाले सभी जीवाणु और विषाणु मानव के लिए हानिकारक नहीं होते जीवाणु एक जीवित शरीर या निकाय है और विषाणु एक अजीवित परजीवी निकाय है। उनमें से कई हमारे लिए लाभदायक भी होते है लगभग दो लाख से ज्यादा विषाणुओं की प्रजाती संसार में पाई जाती है। विषाणु का बाहरी आवरन-प्रोटीन का बना होता है आर.एन.ए उसके भीतर का मूल तत्व होता है। जब यह किसी मनुष्य के अंग या अवयव कोशिका में प्रवेश करता है वहाँ उसके एकाधिक विभाजन के कारण बहुत तेजी से उसकी संख्या में बढ़ोत्तरी होती है और उस अंग के कार्यप्रणाली को बाधित करता है। दुनिया में कुछ शक्तियाँ इस विज्ञान के विकास के सहारे पूरे दुनिया पर अपना सिक्का या दबदबा जमाना चाहती है। शुरुवात में उन्होने रासायनिक हथियार बनायें, बाद में परमाणु बम, हाइड्रोजन बम, नाइट्रोजन बम बनाकर दहशत का वातावरण तैयार किया महाशक्तियाँ बनकर विश्व के लिए समस्याएं खड़ी की और आज जैविक युध्द की तैयारी में लगे है।

दुनिया में चीन जैसे अनेक राष्ट्र है जहां कृत्रिम वायरस संस्थान है जो इस पर गहन शोध कार्य कर रहे है इसी शोध कार्य का कोरोना एक उत्पाद हो सकता है जो जैविक हथियार के समान अपना परिणाम दिखा रह है। विज्ञान के विकास के पूर्व भी इन जीवाणु और विषाणु की जानकारी हमारे पूर्वजों को थी इसका हवाला या संदर्भ बहुत पुराने ज्ञानेश्वरी ग्रंथ में मिलता है। संत ज्ञानेश्वरजी कहते है कि हमें जमीन पर बहुत ही हलके से चलना चाहिए क्योंकि हमारे तेज चलने से हमें जो सूक्ष्म जीव–जंतु दिखाई नहीं देते उन्हे हानि होती है इसलिए जैन मुनि या संत अपने नाक पर कपडा बांधकर (मॉस्क) चलने की प्रथा शुरू की थी और आज भी जारी है कोरोना वायरस ने आज सभी को जैन मुनि न चाहते हुये भी बना दिया। सभी भारतीय को यह ज्ञात था कि इन जीवाणु के कारण ही दुध से दही बनता है गर्मी में इसी कारण दुध और अन्य खाने कि वस्तुएं खराब होती है।

इसलिए उन्हे थंडे पानी में तापमान का स्तर बनाएं रखने के लिए रखा जाता था इन जीवाणु और विषाणु के प्रभाव से बचने के लिए परिवार के सदस्य को बाहर से आने पर अपने पादत्राण बाहर ही उतारने पड़ते थे। हाथ-पैर धोने के बाद ही घर में प्रवेश करने का रिवाज था। यही प्रथा अतिथि के लिए भी प्रचलित थी लेकिन इनका जैविक हथियार के रुप में उपयोग करने के दिशा में कोई अनुसंधान कार्य भारतीय समुदाय ने कभी नहीं किया। आर्य और अन्य आंक्राताओ ने इस देश में आकर यहाँ अपनी हुकुमत की और बाद में मूल निवासियों पर अत्याचार किया। लेकिन यहाँ के समुदाय ने मानवी आधार और मानवता के मूल सिध्दांतो पर आचारण करते हुए सहिष्णुता दिखाई। भारतवर्ष में योध्दा नहीं थे, ऐसा नहीं था, लेकिन हमारे पराक्रमी योध्दा जैसे महाराणा प्रताप, पृथ्वीराज

चौहान, सम्राट अशोक, छत्रपति शिवाजी, छत्रपति संभाजी और दक्षिण के अनेक महाप्रतापी राजाओं ने इस देश के सभी समुदाय को न्याय, समता, बंधुत्व और सहिष्णुता पर आधारित शासन व्यवस्था दी। और किसी देश पर कभी आक्रमण नहीं किया यह शिक्षा लेने की आवश्कता विश्व समुदाय में पहले था और आज भी है।

पृथ्वी पर उपलब्ध संसाधनों का अगर सही उपयोग मानव कल्याण के लिए किया जाए तो कितना अच्छा होगा हमारे संतो ने विश्व को एक परिवार की संज्ञा या संदेश दुनिया को दिया उसका पालन आगे किया जाए तो यह विश्व ही स्वर्ग बन जाए! कोरोना महामारी अपने पैर दुनिया भर में फैला चुकी है और फैला रही है आज इस बीमारी का निकट भविष्य में कोई हल नहीं दिख रहा है। भारत जैसे घने आबादी वाले देश में सामाजिक दूरी (सोशल डिस्टनसिंग) लंबे समय के लिए बना कर चलना असंभव है। क्योंकि यहाँ की अर्थव्यवस्था इसकी अनुमति नहीं देती यहाँ काम नहीं, तो पैसा नहीं, याने खाना नहीं। ऐसी शहरी-ग्रामीण अर्थव्यवस्था शासकों द्वारा निर्माण की गई है। इस देश में धन-संपदा के वितरण में काफी असमानता है। चिकित्सा सेवा के लिए सरकारी आबंटन नगण्य है और निजी क्षेत्र में काफी है।

भारत दुनिया के लिए एक बड़ा चिकित्सा बाजार है हर देश इस बाजार से लाभ उठाना चाहता है जो आर्थिक संपन्न शहरवासियों के लिए उपलब्ध है लगभग यही परिस्थिति अन्य विकासशील और अविकसित देशों में है। इस बीमारी की खास विशेषता ये है की इसमें कॉम्युनिटी स्प्रेडिंग होता है मतलब आप किसी संक्रमित मरीज या रोगी को बिना इलाज के मरने नहीं दे सकते किसी संक्रमित रोगी को बिना क्वारंटाइन किए नहीं रख सकते अन्यथा ऐसे रोगी से संक्रमण की रफ्तार बेलगाम होने से कोरोना का प्रसार इतना फैल जाएगा कि कई महानगरों और शहरों में जगह–जगह हॉट्स्पॉट बन जायेगें और फिर इस महामारी को नियंत्रित करना असंभव होगा। हर संक्रमित रोगी इस महामारी का एपिसेंटर इकाई के जैसा कार्य करेगा।

आज अगर कुछ महत्वाकांक्षी मानव के हठ धर्मिता के कारण विश्व में एक साथ ऐसी दो-चार कृत्रिम जैविक विषाणु या प्राकृतिक जैविक विषाणु का गलती से या किसी उद्धेश्य से फैलाव होता है तो आप कल्पना करे की इस संसार का क्या होगा ? आज भारत और अन्य देश के वैज्ञानिक, अभियंता, डॉक्टर, पैरा मेडिकल स्टाफ, पुलिस, स्वयं सेवी संगठन और सरकारें, इस महामारी के फैलाव और नियत्रंण और इसके रोकथाम में उपयोग आनेवाली दवा-दारु और वैकसीन या टीका बनाने में दिन-रात प्रयास कर रहे है। कई कंपनीयां सस्ते मास्क, पीपीई किट, वेंटिलेटर और सैनिटाइजर बनाने में अपना योगदान कर रहे है। विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय मुद्र◌ाकोष (आय.एम.एफ.) और अन्य जागतिक अर्थ संस्थान अपना योगदान दे रहे है। ऐसे परिस्थिति में भी ये बीमारी का प्रकोप बढ़ता ही जा रहा

है। आज विज्ञान और प्रोद्योगिकी अपने चरम सीमा पर है। हर प्रकार के जीवाणु और विषाणु कि जानकारी चंद सेकंड में डेटा बैंक से उपलब्ध हो जाती है उनके रोकथाम के लिए दवाईयां भी ज्ञात है लेकिन कोरोना वायरस के संबंध में सिर्फ हमें इतना ही पता है कि यह अन्य वायरस के तुलना में काफी वजनी होता है और पवन इसका वाहक नहीं है। यह पानी की छोटी बूंदों के साथ एक स्थान से दुसरे स्थान पर पहुँचता है इसलिए हमें संक्रमित व्यक्ति से एक मीटर की दूरी बनाकर रखना है। कौन संक्रमित व्यक्ति है हमें और उसे भी पता नहीं होता इसलिए सोशल डीस्टेंसिंग ही एक मात्र इस महामारी से बचने का उपाय है।

कृत्रिम बुध्दिमता सुविधा के उपयोग करने के बावजूद भी इस बीमारी पर कोई ठोस इलाज अभी नहीं निकाला जा सका। देश और विदेशों में परंपरागत प्लाज्मा थेरेपी से कोरोना बीमारी का सफल परिक्षण किया गया है। इस पध्दति में संक्रमित पॉजीटिव मरीज जब ठीक हो जाता है इस निगेटिव मरीज के शरीर में एंटिबॉडीज तैयार होती है जो पॉजेटिव मरीज के शरीर में प्रवेश कराने से वह पॉजेटिव मरीज ठीक हो जाता है। हर्ड इम्युनिटी थेरेपि का भी एक विकल्प हो सकता है स्वीडन में इस का सफल प्रयोग किया गया है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और उससे जुड़ी अन्य संस्थाएं इस बीमारी का प्रभाव 2024 तक रहने का अनुमान लगा रही है। आज के समय में दुनिया में लगभग पचास लाख के उपर लोग संक्रमित हो चुके है। एक से दो लाख लोग मर चुके है 1918 में जो महामारी दुनिया में फैली थी (स्पेनिश फ्लु) उसने लगभग दो करोड़ के करीब भारतीय लोगों की जान चली गई थी और दुनिया में इसकी संख्या लगभग छह करोड के करीब थी। आगे क्या होगा यह देखना नसिब होगा कि नहीं यह पता नहीं।

भारत के कुछ उद्योगपति जैसे रतन टाटा, प्रेमजी, बजाज तन मन से धन दे रहे है। अन्य उद्योगपति और नामी कंपनीयां, सिनेमा जगत के सितारे और अन्य धार्मिक और सामाजिक संस्थानों का योगदान भी बहुमुल्य है। हम सभी प्रकृति से विनम्र अभिवादन करते है कि वह हमें इस संकट से बाहर निकाले भविष्य में प्रकृति के साथ मानव फिर कभी ऐसी छेड़-छाड़ ना करें। कोई देश व्यक्ति या समुदाय अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए कृत्रिम जैविक हथियार का दुरूपयोग भविष्य में ना करें। भारत में कोरोना संक्रमण के कारण पूरा लॉकडाउन है। संक्रमित असीमित मरीजों के होते हुये भी आज हम पूरे विश्व को कोरोना बीमारी के रोकथाम में आनेवाली दवाईयां अन्य सामग्री जैसे हाईड्रोक्सीक्लोरोक्वीन (H.C.Q.) का निर्यात कर रहे है।

ताकि विश्व समुदाय इस बीमारी से मुक्त हो जाए दुनिया इससे भारत से कुछ शिक्षा ले आज हम देख रहे है कि कोरोना बीमारी महानगरों में तेजी से फैल रही है। मुंबई महानगर इसका जीता जागता प्रमाण है। बढ़ते हुए महानगरों की व्यवस्थापन की

आवश्यकता के पूर्ती के लिए दूर-दराज से अधिकृत और अनधिकृत संस्थाओं द्वारा मनुष्य बल की पूर्ती की जाती है और महानगरों में इन समुदाय द्वारा झोपडपट्टीयों का लगातार निर्माण होता है। ऐसे घने झोपडपट्टीयों में कोई मूलभूत जन सुविधाएं नहीं होती और वह कोरोना जैसे महामारी का एपिसेंटर बन जाता है और ऐसे स्थानों पर लॉकडाउन जैसे उपाय कारगर नहीं होते है कोरोना जैसी महामारी को वहा रोक पाना संभव नहीं। विस्तारीत महानगरों का अपशिष्ट एक बहुत बड़ी पेचिदा समस्या है।

महानगरों में प्रतिदिन कई टन अपशिष्ट का वहन या ढुलाई में जो मनुष्य बल, वित्तीय लागत लगती है वह अपशिष्ट के मूल्य से कई गुना अधिक होती है। आज वो समय आ गया है कि किसी महानगर कि अधिकत्म सीमा सभी उचित मापदंड को ध्यान में रखकर तय की जानी चाहिए जिससे ऐसे महामारी और प्राकृतिक आपदा जैसे जलभराव, अपशिष्ट निकासी का समाधान करना प्रशासन के लिए चुनौती पूर्ण ना हो।

अगर हम वर्तमान परिस्थिति का अध्ययन और आकलन करें तो निम्न लिखित बिंदुओ पर प्रकाश डाला जा सकता है। कोरोना वायरस से क्या फायदे और नुकसान मानव जाती को हुआ है इस पर भी विचार किया जा सकता है ।

1) जिस तरह से मजबूरी में दुनिया भर में तालाबंदी ( लॉकडाउन ) हुई है और परिणाम स्वरुप, यह देखा गया कि सभी प्रकार के प्रदूषण में उल्लेखनीय कमी दर्ज की गई है और धरा का वातावरण बहुत हद तक स्वच्छ हुआ है। क्या विश्व में साल भर में एक साथ तालाबंदी निश्चित समय लिए की जानी चाहिए ?

2) मानवता का जो संदेश आज सभी धर्मीय लोगों ने दिया है वह मानव धर्म टिकाने के लिए है क्या इसकी शिक्षा, सभी धर्म गुरू अपने-अपने भक्तों,अनुयायियों को निरंतर देना जारी रखेगें ?

3) मानव चाहे तो शानदार कृत्रिम जीवन शैली का त्याग करके हमेशा के लिए साधारण प्राकृतिक जीवन शैली अपना सकता है क्योंकि वह साधारण जीवन शैली को कोरोनीय परिस्थिती में जी रहा है याने वह आगे भी जी सकता है।

4) महाशक्तियां अपने शक्ति प्रदर्शन को त्याग कर अपने संसाधनों का उपयोग सभी मानव के कल्याण के लिए कर सकती है ।

5) आम आदमी भी अपनी जरूरतों को न्यूनतम करके सभी प्रकार के प्रदूषण से मुक्ति पा सकते है।

6) विज्ञान और प्रोद्योगिकी का उपयोग सिर्फ सकारात्मक मानव कल्याण कार्य के लिए किया जाना चाहिए। इस पर विश्व में आम सहमति होनी चाहिए।

7) कोई देश, व्यक्ति या समुदाय अपनी श्रेष्ठता दिखाने के लिए कृत्रिम जैविक हथियार, अन्य रासायनिक और परमाणु हथियारों का दूरूपयोग ना करें, इसका निर्माण और नष्ट करने दिशा में क्या संयुक्त राष्ट्र संगठन कोई पहल भविष्य में करेगा?

8) क्या दुनिया में, संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा सभी देशों में महानगरों के विस्तार की कोई बाध्य सीमा सभी मापदंड को ध्यान में रखकर तैयार किया है, संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा सभी देशों में महानगरों के विस्तार की कोई बाध्य सीमा सभी मापदंड को ध्यान में रखकर तैयार करने का प्रयास करेगा?

9) सभी देशों में अगर सभी सुविधाओं के साथ निम्न, मध्यम और उच्चतम प्रतिबंधित सीमा वाले महानगरों की कारगर योजना लागू की गई तो यह प्राकृतिक और अप्राकृतिक समस्याओं का समाधान हो सकता है।

10) विज्ञान और प्रोद्योगिकि के कारण दुनिया के कई शहरों का विकास और विस्तार निरंतर हो रहा है। लेकिन इन शहरों में शुरु से जो तंग बस्तीयां थी वो समय के साथ और भी तंग हो चुकी है। और वहां सोशल डिस्टेंसिंग जैसे उपाय कारगर नहीं हो सकते जो वर्तमान और भविष्य में कोरोना वायरस जैसे बीमारी के निश्चित हॉटस्पॉट होगें। क्या इन बस्तीयों को बड़े सरकारी कार्यक्रम के अंर्तगत सोशल डिस्टेंसिंग के अनुसार फिर से पुर्नेजीवित करने कार्य किया जायेगा?

11) कोरोना जैसे महामारी के कारण स्थानीय, पर प्रांतिय और विदेशी मजदूरों की जो समस्यायें आज देखने को मिल रही है और इसमें कोरोना से कम, लेकिन भूखमरी और सड़क हादसे में मजदूरों की ज्यादा मृत्यु हो रही है क्या इसका मंथन करके स्थाई हल ढूंढा जायेगा?

आज वह समय आ चुका है कि उपरोक्त बिंदुओ पर विश्व सभ्य समाज गहराई से विचार- मंथन करें और मानव के अस्तित्व को बचाने के लिए पहल करें अन्यथा अंतर देशीय और देशीय राजनीति में महत्वाकांक्षा से प्रेरित सक्रिय राजनेता विश्व को नष्ट करने के लिए आमदा हो जायेगें सौर मंडल का यह एकमात्र जीवित ग्रह भविष्य में मानव हीन ना हो जाए!

हे मानव तु अभी भी चेत जा,
मत कर प्रकृति के संरचना से छेड़खानी,
ये हरकत होगी, मानव कि मानव के साथ बेईमानी
तुझे बहुत महंगी पड़ेगी ये नादानी,क्योंकि ,
तेरी बेवकूफी लायेगी, अनगिनत कोरोना जैसी महामारी।

**

# चक्रवातीय तूफान से लड़ने में मौसम विभाग की भूमिका

सुश्री मीनू मीणा, वै.स.

भारत एक कृषि प्रधान देश है और साथ ही यह उपमहाद्वीप प्राकृतिक आपदाओं के लिए सबसे ज्यादा प्रभावित क्षेत्र है। यहां पर प्राकृतिक आपदाएं जैसे बाढ़, सूखा, चक्रवात एवं भूस्खलन बहुत जल्दी-जल्दी आते रहते है। इनसे जान माल की बहुत हानि होती है। आपदाओं के प्रभाव को कम से कम होने की दिशा में भारतीय मौसम विज्ञान विभाग की भूमिका अहम रही है।

भारतीय मौसम विभाग भारत सरकार के पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत आने वाली सर्वोपरि संस्था है, जो कि मौसम प्रेक्षण, मौसम पूर्वानुमान, भूकंप का कार्यभार संभालती है। सन 1866 एवं 1871 में ओडिशा में सूखे की स्थिति को देखते हुए, मौसम संबंधी एवं विश्लेषण के कार्य को संग्रह करने के लिए, सन 1875 में भारतीय मौसम विभाग की स्थापना कोलकाता में की गई। विकास की आज वैश्विक आपाधापी में हमने जलवायु को परिवर्तित कर दिया है। इसका परिणाम हम देख ही रहे हैं जिसका उदाहरण सन 2013 में उत्तराखंड में भूस्खलन, भीषण बाढ़ की तबाही देखकर लगाया जा सकता है। सन 2013 में 'फैलिन' नामक उष्णकटिबंधीय चक्रवात भी देखा गया जो अरब की खाड़ी में उत्पन्न हुआ, पर भारतीय मौसम विभाग ने वर्चुअल साइक्लोन ट्रैकिंग एवं मॉनिटरिंग सिस्टम की मदद से चक्रवात की तात्कालिक स्थिति को केंद्रीय जल आयोग और राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के साथ आदान प्रदान किया जिससे 10 घंटे के भीतर 8 से 10 लाख लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया। इसी प्रकार 2020 मई में जब 'अम्फन' महाचक्रवात आया जिसकी गति 133 किलोमीटर प्रति घंटा रिकॉर्ड की गई वहां भी भारतीय मौसम विभाग ने अपनी सूझबूझ से लाखों लोगों और जान माल की हानि को होने से रोक दिया।

इस कृषि प्रधान देश में आज भी लगभग 70% आबादी कृषि उत्पादन पर निर्भर करती है और जब भी बाढ़, सूखा और चक्रवात जैसी आपदाएं देश में आती है तब आबादी का एक बड़ा हिस्सा प्रभावित होता है। कृषि पूर्णतः किसी स्थान की जलवायु पर निर्भर करती है इसलिए भारतीय मौसम विज्ञान विभाग इस पथ पर अग्रसर है कि इन आपदाओं के प्रभाव को कम से कम करने की दिशा में कदम उठाए जाए। आज देश में कृषि मौसम केंद्र लगभग 115 है और कृषि विकास केंद्र लगभग 716 स्थानों पर है जिनके लिए सप्ताह में दो बार कृषि संबंधित पूर्वानुमान (एग्रीकल्चर एग्रोमेट सर्विसेज (AAS) बुलेटिन जारी किए जाते हैं। यह बुलेटिन जिला स्तर पर भेजे जाते हैं ताकि ज्यादा से ज्यादा

किसानों को इससे फायदा हो। AAS स्कीम के तहत ग्रामीण कृषि मौसम सेवाएं (GKMS) भारत मौसम विभाग द्वारा दी जा रही है ताकि किसान को हर संभव सहायता मिल सके जैसे किस मौसम में कैसी खेती करें?

भारतीय मौसम विभाग में नई तकनीकों का इस्तेमाल किया जा रहा है जिससे सटीक पूर्वानुमान दिया जा सकें। इस विभाग में लगभग 25 डॉपलर वेदर रेडार (DWR) है जिस में से ज्यादातर पूर्वी तट पर लगाए गए हैं।

भारत का भौगोलिक स्थान कुछ ऐसा है जिससे बंगाल की खाड़ी में ज्यादातर चक्रवात की उत्पत्ति होती है विभाग में विभिन्न तकनीक के मॉडल उपयोग में है जैसे सेटेलाइट का प्रयोग किया जाता है जिससे इंसान वायुमंडल की आद्रता, बादल का तापमान, इत्यादि की जानकारी मिली। विकास एक जनहितकारी नीति है परंतु अगर हम अपनी परिस्थितियों और संसाधनों का उपयोग जरूरत से ज्यादा करेंगे तो हितकारी विकास जन विरोधी हो जाता है और निर्माताओं का कर्तव्य है कि संसाधनों के सही उपयोग पर ध्यान दिया जाए। मौसम विज्ञान विभाग की समझदारी और संबंधित साझेदारी को जनहानि को कम से कम किया जा सकता है ताकि भारत को एक समृद्ध देश बनाया जा सके।

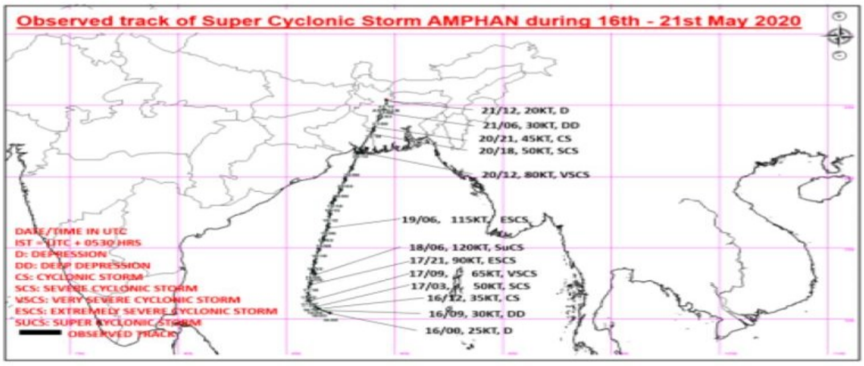


'अंफन' महाचक्रवात का पथ 16-21 मई 2020 (चित्र सौजन्य : चक्रवात चेतवानी प्रभाग नई दिल्ली )

**

# तिनका कबहुँ न निंदिये

शांता उन्नीकृष्णन,वरिष्ठ अनुवादक अधि.

तिनका कबहुँ न निंदिये .............

जर्नलिसम यानि पत्रकारिता ! पत्रकारिता की अपनी एक दुनिया होती है। समाज के विभिन्न पहलुओं की बारीक से बारीक बाल की प्रामाणिक खाल निकाल पाने का विशेष ज्ञान से लबरेज पत्रकार कभी पूर्णता को महसूस न करें और निरन्तर नवीनता के खोज में लगा रहे। यही तो विशेषता एक पत्रकारिता की दुनिया से जुड़े पत्रकार की होती है। पैनी नजर, तथ्य को ताड़ने का हुनर और उसे समाज तक पहुंचाने का ललक, किसी साधना से कम नहीं।

चेन्नई के मायलापुर स्थित कपिलेश्वर कोइल मन्दिर के सपत्नीक दर्शन के बाद हम बाहर आ गए थे। मन्दिर प्रांगण में ही कुछ दूरी पर आध्यात्मिक पुस्तकों से सुसज्जित एक किताब की दुकान दिखी, नाम था – 'गिरी ट्रेडिंग स्टोर'। अनायास ही हमारे कदम उस पुस्तक विक्रय केंद्र की ओर बढ़ गए। मुझे हाल ही में एक आध्यात्मिक व्याख्यान में ' तत्व बोध ' नामक पुस्तक की जानकारी मिली थी इसलिए उसे पढ़ लेने की जिज्ञासा भी प्रबल थी। सम्भव है वह पुस्तक मुझे वहां मिल जाय, अतः मैं उस पुस्तक की खोज में अपनी श्रीमती जी के साथ दुकान के अंदर दाखिल हो गया। वह दुकान भव्य था। तमाम प्रकाशन के ग्रन्थ, सीडीज़ और अन्य सामग्री का इतना बढ़िया संग्रह मुझे पहली बार देखने को मिला था। मैं आश्वस्त था कि मेरी आकांक्षा यहां जरूर पूरी होगी। मैं भी वहां उपस्थित अनेकों क्रेताओं की भीड़ का हिस्सा बन कर अपनी पुस्तक तलाशने लगा। दूसरी ओर श्रीमती जी अपनी इच्छानुसार भजन और आध्यात्मिक कैसेट्स की खोज में जुट गईं। कुछ देर तक मेरी निगाहें उस पुस्तक भंडार में ' तत्व बोध ' को ढूंढते हुए कैशियर के पास खड़ी एक लड़की पर पड़ी। मैं अपनी खोज जारी रखते हुए बीच-बीच में उस लड़की को भी देख लेता था। मैंने पाया कि वह लड़की निरन्तर मेरी गतिविधि पर नज़र रख रही है।

कोई 17–18 के वय की सांवली सी ग्रामीण परिवेश की सौम्यता ओढ़े हुए पहली नज़र में मुझे अत्यंत साधारण सी प्रतीत हुई। बामुश्किल कोई 8 दर्जे की पढ़ाई की होगी जिसे इस पुस्तक की दुकान में देख कर मैं हैरान था। मेरा पत्रकारिता वाला मस्तिष्क उस 'अनोखी लड़की' के विषय में कुछ देर के लिए सोचने पर विवश था और वह थी कि लगातार मेरे माथे पर अपनी पुस्तक न खोज पाने की परेशानी को लगातार अनुभव करती हुई मुझ पर ही दृष्टि जमाये हुए थी। मैं अब उस पर से अपना ध्यान हटा कर फिर

से अपनी खोज में प्रवृत्त था। मैंने 'सन्ध्या वन्दन' से ले कर 'स्वामी विवेकानंद की शिकागो यात्रा' तक कि पुस्तकें उलट-पलट कर देखी पर मुझे अभी भी 'तत्व बोध' के नाम वाली किसी पुस्तक के दर्शन नहीं हुए। कोई 40 मिनट की अवधि बीत चुकी थी, मेरी नज़र एक बार फिर उस सौम्य सी अनोखी लड़की पर पड़ी। उसने भी कौतूहल की निगाहों से मुझे देखा – शायद पूछना चाहती हो कि - "मैं आपकी खोज में कोई सहयोग कर सकती हूँ ?" पर मेरे साथ एक सफल पत्रकार और निज ज्ञान का अहंकार का बोध, उससे कुछ भी पूछने को तैयार नहीं था। 'ये साधारण सी अनपढ़, गांव की लड़की साहित्य और धर्म का कितना ज्ञान रखती होगी? इसे क्या मालूम होगा कि तत्व बोध जैसी कोई पुस्तक भी होती है। यह तो सिर्फ मेरी क्रय की हुई पुस्तकों को उठा कर काउंटर तक ले जाने और उसकी पार्सल बनाने से ज्यादा क्या कर सकती है?' मैं उसे उपेक्षा भरी नजरों से देख कर फिर से अपनी खोज में जुट गया।

कुछ और समय गुजरा, तभी मेरे पास आ कर उस लड़की ने पूछा – 'सर',

मैं पलट कर देखा वह लड़की अत्यंत सौम्य मुस्कान के साथ तमिल भाषा मे मुझ से पूछ रही थी – " सर, मैं आपकी कोई मदद कर सकती हूँ?"

मैं अब तक अपनी खोज में नाकाम था, मेरे मुंह से निकल गया – "हाँ मैं तत्व बोध ...."

अभी मेरी बात पूरी भी नहीं हुई थी कि उसने फिर से पूछ लिया – सर, किस प्रकाशन का चाहेंगे – चिन्मय मिशन, इंदु प्रकाशन या रामकृष्ण मठ ?

मैं अवाक होकर उसे देखते हुआ बोला - संस्कृत या इंग्लिश, कोई भी। मैं इस पुस्तक के विषय में पूरी तरह अनजान हूँ, मैं बस इसे पढ़ना चाहता हूँ।

लड़की – सर, क्या आप तमिल भाषा का ज्ञान.. मतलब तमिल पढ़ना लिखना जानते हैं?

मैं – इस प्रश्न का उत्तर मेरे लिए कुछ कठिन लगा, क्योंकि मैं कई बार इस तथ्य को सार्वजनिक करने से बचता रहा था कि मैं एक तमिल भाषी हूँ। पर आज नहीं, मैंने उसे जवाब दिया - 'हाँ, मैं तमिल हूँ और तमिल भाषा अच्छी तरह जानता हूँ।'

वह लड़की दौड़ कर उस आलमारी के पास गई जहां मैं पिछले आधे घण्टे से वह पुस्तक ढूंढ रहा था। लड़की वहीं से एक पुस्तक निकाल लायी और बोली – सर, फिर तो आप इंदु प्रकाशन की एन शिवरामन की लिखी यह पुस्तक पढ़िए। यह अत्यंत सरल भाषा

में लिखी गयी एक सारगर्भित पुस्तक है। इसमें संस्कृत और तमिल दोनों भाषा साथ-साथ है।

ओह! एक अंतर्वेदना से मैं सिहर उठा। मुझे आज अनुभव हो रहा था कि मैं अपने अहंकार के चश्मे के कारण पारस और पत्थर के अंतर की पहचान खो चुका हूँ। वह निहायती गरीब सी ग्रामीण लड़की जिसे मैं मूढ़ और अनपढ़ समझकर हीनता की दृष्टि से देखता रहा वह तो कोयले के गर्भ में पड़ी हुई हीरक अनमोल मणि थी। उसके रंग, गरीब वेशभूषा और साधारण भाव भंगिमा के पीछे के छुपे हुए ज्ञान के भंडार को देख मैं किंकर्तव्यविमूढ़ खड़ा था। मैं आज अपने आपको सबसे बड़ा बेवकूफ समझ रहा था। स्वयं को संयत करते हुए मैं अपना दृष्टिकोण बदलने को विवश था। मैं अब एक मूढ़ की तरह अपनी बात उससे कहा – मैडम वास्तव में कल तक मुझे 'तत्व बोध' नामक न तो किसी पुस्तक का ज्ञान था न इसके लेखक को जानता था। कल मैं एक व्याख्यान में भाग ले रहा था वहीं मुझे इस विषय की जानकारी मिली थी और मैं उससे प्रभावित हो कर आज इसकी खोज में यहां आया हूँ।

लड़की – क्या आप भारतीय विद्या भवन में स्वामी वेंकटशेवरा शास्त्री जी का व्याख्यान तो नहीं सुन रहे थे ?

हाँ-हाँ! मेरे लिए एक और आश्चर्य – यह लड़की इस तरह कैसे सटीक अनुमान लगा पाई?

लड़की – सर, वे नियमित इन विषयों पर व्याख्यान देते हैं। वास्तव में वे इन विषयों के एक जाने-माने विद्वान हैं।

मैं अब अपनी जिज्ञासा को रोक नहीं पा रहा था, मैंने पूछा – क्या तुम्हें इन विषयों में रुचि है ?

लड़की – जी, मैंने स्वामी विवेकानंद, रामकृष्ण परमहंस और तत्व बोध से सम्बंधित बहुत सी किताबें पड़ी हैं और ये मेरे रुचिकर साहित्यों में हैं।

मैं – तो क्या तुमने तत्व बोध भी पढ़ा है!

लड़की – मैंने शिवरामन की लिखी तत्व बोध पढ़ी है और दावे के साथ कह सकती हूँ सर की आप जब इसे पढ़ना शुरू करेंगे तो इसे कई बार पढ़ते जाएंगे।

मैं – क्यों, ऐसा क्या खास है इसमें?

लड़की – सर, अब आप मजाक कर रहे हैं।

मैं – नहीं, मैं वास्तव में इस पुस्तक के विषय से अनभिज्ञ हूँ।

दुकान में पास ही खड़ी श्रीमती जी अपनी खरीदारी पूरी करके हमें ही निहार रही थी।

लड़की – सर, यह पुस्तक हमारे मानव जीवन में वेदांत दर्शन को समाहित कर सकने में अत्यंत सक्षम पुस्तक है। इसमें जीवन जीने की आध्यामिक विधि की प्रेरणा है, यह हमारे जीवन से अहंकार को मिटाने का दर्शन प्रदान करता है।

हमारी वार्तालाप में अब मेरी श्रीमती जी भी आ पहुँची थीं । उसने पाया कि यह लड़की एक असाधारण विद्वता की मालकिन है। इसका आध्यात्मिक ज्ञान भी असाधारण है। उसने मुझे कहा – क्यों न तुम इसका एक इंटरव्यू ले लेते । 'वाशिंगटन पोस्ट' में छपने की पूरी काबिलियत मुझे इसमें दिखती है। हमेशा 'पेरिस हिल्टन' के विषय में लिखते हो, इस बार इस इंटेलीजेंट और टैलेंटेड लड़की के विषय मे लिखो।

मेरी भी इच्छा कुछ ऐसी ही थी। इस बार मैं अपनी पत्रकारिता को सत्य की कसौटी पर कसने की सोच चुका था। हमेशा ही चोटी के पत्रकार और विद्वान, ज्ञानवान कहलाने वाले अहंकारी लोग स्वर्ण पत्रक को तिनका समझने की भूल कर बैठते हैं। मैं भी अब तक वही कर रहा था, पर अब नहीं। मैं पुनः उससे मुखातिब हुआ – मैडम क्या आप अपना कुछ समय मुझे दे सकती हैं ?

लड़की – देखिए सर, यहां आप जैसे कितने ही लोग हैं और उन्हें भी मेरी मदद की जरूरत होगी। फिर इस दुकान के मालिक ने मुझे जिस काम के लिए रखा है उससे अलग मैं कुछ नहीं कर सकती। मालिक की आज्ञा होने पर ही मैं आपको समय दे पाऊँगी। वह बड़ी विनम्रता से मेरी बातों को नकार कर जाने लगी। मैं अनायास ही उससे पूछ लिया – मैडम आपका नाम ?

जाते-जाते वह बोली - जी, मेरा नाम कलाइवाणी है।

मैं उसे एक टक जाते देखता रहा। तभी श्रीमती जी ने मुझे टोका – इस लड़की के उसके कार्य और व्यवहार की जितनी प्रशंसा की जाय कम है। मैं समझती हूँ कि इस देश के ग्रामीण अंचल में जाने कितने कोहिनूर छुपे पड़े हैं उन्हें सहज अपनी बौद्धिक दृष्टि से पहचान पाना कठिन है। 'कलाइवाणी' तो उनमें से एक उदाहरण स्वरूप है। क्यों न हम सीधे उसके मालिक से ही बात करें।

अगले पल हम मालिक से मुखातिब थे। श्रीमती जी ने कहा - सर, ये मेरे हसबेंड विश्वनाथ हैं। ये 'वाशिंगटन पोस्ट' में वरिष्ठ पत्रकार हैं।

वाशिंगटन पोस्ट का नाम सुनते ही वे खड़े हो गए और अभिवादन के साथ बोले – हमारे इस दुकान में आपका स्वागत है, कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ?

श्रीमती – वो आपके दुकान में कलाइवाणी है ...

मालिक – जी मैडम वह बहुत ही होनहार और कर्मठ लड़की है। कहिये क्या हुआ ?

श्रीमती – जी हम उसके कार्य साधना और ज्ञान से अभिभूत हैं, मेरे पति वाशिंगटन पोस्ट के लिए उनका इंटरव्यू करना चाहते हैं।

मालिक – आश्चर्य से – वाह ! यह तो अत्यंत सुखद विषय है, मैं अभी उसे बुलाता हूँ।

इस समय शाम के कोई पौने छः बजे थे, ग्राहकों की भीड़ हो चली थी। मालिक ने कलाइवाणी को बुलाया।

मालिक – कलाइवाणी, ये लोग यू.एस.ए. से आये हुए हैं और विश्व विख्यात पत्रिका 'वाशिंगटन पोस्ट' के वरिष्ठ पत्रकार हैं। ये तुम्हारा इंटरव्यू लेना चाहते हैं। क्या तुम तैयार हो?

कलाइवाणी – सर, इस समय देखिए दुकान में लोगों की संख्या बढ़ती जा रही है, इस समय उन्हें मेरे मार्गदर्शन की आवश्यकता है। यदि आप बाद में या कल जब भीड़ न रहे तब आएं तो मैं आपसे बात कर पाऊँगी।

मैं – ठीक है, हम कल सुबह के समय ही आ जाएंगे।

अगली सुबह मैं अपनी 'टाइम्स ऑफ इंडिया' और 'मद्रास प्रेस क्लब' की आवश्यक मीटिंग्स छोड़ कर उस लड़की से मिलने आ गया।

कलाइवाणी ने पहले अपने पारिवारिक पृष्ठभूमि से हमें अवगत कराया – सर मेरी पांच छोटी बहनें हैं। पिताजी को शराब की बुरी लत थी, बिना कोई जिम्मेदारी को अंजाम दिए वे कुछ वर्ष पूर्व ही स्वर्ग सिधार गए। माँ छोटे-मोटे काम करती थी और किसी तरह परिवार पालती थी। अब तो वह भी नहीं रही। सबसे बड़ी बहन होने के कारण परिवार का बोझ मेरे ऊपर आ टिका। तब मैं नवीं कक्षा की पढ़ाई कर चुकी थी पर अब नौकरी की तलाश थी ताकि अपने पांच छोटी बहनों का पालन कर सकूं। तब इस 'गिरी बुक स्टोर' ने

मुझे सहारा दिया। यहां से मिलने वाले वेतन से किसी तरह मैं घर चला पा रही हूँ। मेरी पांचो बहने 'चेन्नई कॉरपोरेशन स्कूल' में पढ़ रही हैं मैं – कलाइवाणी , तुम्हें 'तत्व बोध' जैसी पुस्तकों को पढ़ने - समझने की प्रेरणा कहाँ से मिली?

कलाईवाणी – जब मैं यहां आयी तो लोगों को कोई विशेष सहयोग नहीं कर पाती थी। फिर मैंने निश्चय किया कि इस कार्य को सुचारू बनाने के लिए पहले मुझे स्वयं को इन पुस्तकों के भीतर छिपी रहस्यों को जानना आवश्यक है। प्रारम्भ में मैं रमन्ना, रामकृष्ण और विवेकानंद की छोटी छोटी पुस्तकों को पढ़ना प्रारम्भ किया और उसमें रमती चली गयी। धीरे-धीरे मैं भगवद्गीता, विवेक चूड़ामणी सहित इस दुकान की कई पुस्तकें पढ़ गई, इससे मुझे लोगों के मार्गदर्शन में बड़ी सहायता मिली। अब तो जैसे मैं इन पुस्तकों की दासी हो गयी हूँ। कई जीवन के रहस्यों को मैंने सहज जीना सीख लिया। आभावों की चादर में भी सुकून की नींद आज मुझे नसीब है।

मैं – अच्छा तुम्हारी तनख्वाह कितनी है ?

कलाइवाणी – ढाई हजार !

मैं – इतनी कम तनख्वाह में पांच बहनों सहित तुम्हारा गुजारा हो जाता है ?

कलाइवाणी – हँसते हुए - नहीं सर, हमारे मालिक अलग से भी कुछ सहायता करते रहते हैं।

मैं – तुम्हारे जीवन का लक्ष्य क्या है ?

कलाइवाणी – मैं अपने पांचो बहनों को अच्छी शिक्षा दिलाना चाहती हूँ ताकि वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें।

मैं - यदि मैं तुम्हें प्रति माह दस हजार रुपये, तुम्हारी लक्ष्य को पाने हेतु दूँ तो क्या तुम स्वीकार करोगी ?

कलाइवाणी – दस हजार! सर ये तो बड़ी रकम है। फिर मेरे अभिभावक, मेरे माता-पिता और मार्गदर्शक मेरे मालिक ही हैं, उनकी आज्ञा के बिना मैं कुछ भी नहीं ले सकती।

हम इस आर्थिक मदद की बात ले कर मालिक के पास पहुंचे। सारी बातें सुन कर मालिक की आंखें डबडबा गयीं। वह बोले - सर, आध्यात्मिक पुस्तकों के विक्रय में आमदनी बहुत कम होती है। मैं अपनी सामर्थ्य अनुसार मदद का प्रयास करता रहा हूँ पर आपकी विनम्रता ने उस भाग्यहीन के द्वार खोल दिये हैं। वास्तव में वह इसकी हकदार भी है। मैं

आपसे वादा करता हूँ कि आपकी भेजी रकम नियमित उस तक पहुंच जाएगी। आप चाहें तो सीधे उसके बैंक अकाउंट में पैसा डाल सकते हैं।

मैं – ठीक है।

मेरे साथ वहां टाइम्स ऑफ इंडिया के क्षेत्रीय प्रबंधक और मेरे मित्र जॉन पॉल भी आये थे। उन्होंने कहा – आज तुमने एक बहुत ही ऊंचे दर्जे का काम किया है। हीरे को तराशे बिना उसकी चमक नहीं फैलती।

श्रीमती जी ने कहा – मेरी प्रार्थना है कि कलाइवाणी वेदांत दर्शन की विदुषी बने और अपनी विद्वता के व्याख्यान यू.एस.ए में दे। हम उसका प्रबन्ध करेंगे।

आज मुझे ज्ञान हो गया था कि कौन कब आपको राह दिखा जाएगा, कौन कब आपके अहंकार को मटियामेट कर देगा और कौन कब जीवन के गूढ़ रहस्यों का आपका गुरु बन जायेगा, कहना मुश्किल है, कबीरदास जी का वो दोहा मुझे याद हो आता है - इसलिए मेरी सलाह है 'तिनका कबहूं न निंदिये' जो पावन तर होय, कबहुँ उडी आखिन पड़े, तो पीर घनेरी होय।

(अनुवादित कृति)

**

एक हिरा सिर्फ कोयला (चारकोल) का एक टुकडा है जो तनाव को असाधारण रूप से अच्छी तरह से नियंत्रित करता है।

# "चलो अब घर चले"

सुश्री **रूबी वर्मा**, **वै.स.**

मैं गुमसुम और खामोश खड़ी थी,

पास बहते समन्दर में कल-कल करता तूफान

विरोधाभास के एहसास का ये असमंजस भरा पल था,

मैंने सब कुछ सामान्य करते हुए चुप्पी को तोड़ा,

सुना तो पाया समन्दर का हर किस्सा कितना शाश्वत कितना अविरल था।

हैरान थी .......

सुन रही थी इतना कोलाहल इतना वाचाल,

मन में उठ रहे दे हर पल नए सवाल,

पल-पल नयी कहानी जैसे नदी की चाल,

मैं मंत्रमुग्ध होकर सुन रही थी हर लहर की ताल।

तूफान को मन में समेटे लौट आई अपने शहर को,

अब नए ही दृष्टिकोण से देखती थी हर नज़र को।

मेरा शहर.......

तंग गलिया ऊंची इमारतें,

लाखों लोग हजारों बातें,

रोज हजारों से मिलती हूँ आते-जाते,

वक़्त से तेज़ दौड़ते लोग, हर इंसान परेशान,

कुछ खाने का मलाल कुछ पाने का अभिमान,

बनावटी मुखालफते झूठे एहतराम,

सुबह लगते अपने होते पराये ढ़लती शाम।

तूफान को अपनी अंदर समेटे......

कितने दिन कितने साल यूँ ही बीते

सपनों की चादर में पैबंद सीते-सीते,

कितने मौसम देखे मैंने चुपचाप जीते-जीते।

फिर एक दिन तुम मिले.........

जैसे ढ़लती शाम मे चमकता सवेरा,

जैसे पुराने दरख्त में पंछियो का बसेरा,

जैसे सूखे खेतों में पड़ती पानी की फुहार,

जैसे रंगो सय सजा होली का त्यौहार।

समय ने एक बार फिर खुद को दोहराया......

गुनगुनाते तुम और वहीं मुसकुराती मैं खड़ी थी,

पास बहते समंदर में असीम शांति थी,

विरोधाभास के एहसास का ये सुंदर पल था,

मैंने सब कुछ सामान्य करते हुए चुप्पी को तोड़ा,

और कहा " चलो अब घर चले "

**

# कोरोना काल में जीवन

सुश्री सुलेखा सोनाल, वै. स.

खाली सड़कें थीं और सूने चौराहे थे
खामोश था ये शहर और बंद धुओं के कारखाने थे
ऐसी आयी थी महामारी, जिसने सारी दुनिया को हिला डाला
इस कोरोना की महामारी ने हमें क्या-क्या सिखा डाला।

कहीं घरों में बन रहे पकवान थे
कहीं घरों पर पहुंचने जो चल रहे सड़कों पर, अनजान थे
खाली पेट मंज़िल को चलते, ज़िंदगी ने बहुत कुछ दिखा डाला
इस कोरोना की महामारी ने हमें क्या-क्या सिखा डाला।

हाँ रुक गए थे हम, शायद डर गए थे हम
पर कट रहे थे, फिर भी आगे बढ़ रहे थे हम
लेकिन मिलकर हमने सबको ये दिखा डाला
मुश्किलों की घड़ी में भी, हमने उम्मीदों का दीया जला डाला
इस कोरोना की महामारी ने हमें क्या-क्या सीखा डाला।

ऑनलाइन हो रही अब नौकरी और पढ़ाई
प्रकृति को नहीं करनी अब प्रदुषण से लड़ाई
अनोखी, इस ब्रेक ने हम सबको करीब ला डाला
इस कोरोना की महामारी ने हमें क्या-क्या सीखा डाला
इस कोरोना की वैश्विक महामारी ने हमें क्या-क्या सीखा डाल

**

# नागपुर और ग्लोबल वार्मिंग एक खोज/ चेतावनी

श्री एम.टी.एस शिवानंद मौ. वि. अ

धरती के वातावरण में तापमान के लगातार हो रही विश्व-व्यापी बढ़ोतरी को **ग्लोबल वार्मिंग(भूमंडलीय तापक्रम वृद्धी)** कहते हैं । पृथ्वी के निकट स्थित हवाई और महासागर की औसत तापमान में बीसवीं शताब्दी से हो रही वृद्धी और उसकी अनुमानित निरंतरता है । पृथ्वी की सतह के निकट, विश्व की वायु के औसत तापमान में 2500 वर्षों में 0.74 (+/- 0.80) डीग्री सेल्सियस का अंतर हुआ है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण होने वाले जलवायु परिवर्तन के लिये सबसे अधिक जिम्मेदार ग्रीन हाउस गॅसेस जैसे कार्बन डाइआक्साइड, मिथेन, नइट्रोजन ऑक्साइड इत्यादी है जो बाहर से मिल रही गर्मी या उष्मा को अपने अंदर सोक लेती है। वैज्ञानिकों के अनुसार 21 वीं शताब्दी में हमारे पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है और अगर ऐसा हुआ तो इसके परिणाम बहुत घातक होंगे। दुनिया के कई हिस्सों में बर्फ की चादर बिछ जायेगी। समुद्र का जलस्तर बढ़ जायेगा, दुनिया के कई हिस्से जल में लीन हो जाएंगे भारी तबाही मचेगी जो किसी विश्व युद्ध या किसी एस्टरोयड के पृथ्वी से टकराने से होने वाली तबाही से भी ज्यादा भयानक होगी और यह हमारी पृथ्वी के लिये बहुत ही हानिकारक सिद्ध होगा । मानव द्वारा निर्मित ग्लोबल वार्मिंग के अन्य कारण है वनों की कटाई, औधोगिकरण, शहरीकरण, मानव के विभिन्न क्रियाएं, पेडों का काटना, हानीकारक प्रयोगिकों में वृद्धी, रासायनिक उर्वरकों का उपयोग इत्यादी । इस उपलक्ष्य में हम नागपुर शहर की 1901 से 2000 (सौ साल) और 2000 से 2015 (15 साल) के औसतम,अधिकतम और न्यूनतम तापमान के आंकडों पर डालते है जो नीचे दिये गये सारणी क्र.1 में है ।

| महिने और सीमा | औसतम १९०१-२००० | अधिकतम २००१-२०१५ | तापमान डि. से. बदलाव | औसतम १९०१-२००० | न्यूनतम २००१-२०१५ | तापमान डि. से. बदलाव |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जनवरी | 28.7 | 29.3 | 0.6 | 13.1 | 13.0 | - 0.1 |
| फेब्रुवरी | 31.4 | 32.4 | 1.0 | 15.1 | 15.8 | 0.7 |
| मार्च | 36.1 | 36.6 | 0.5 | 19.2 | 19.7 | 0.5 |
| अप्रैल | 40.1 | 40.8 | 0.7 | 24.0 | 23.9 | - 0.1 |

| महिने और सिमा | औसतम १९६१ – १९९० | अधिकतम १९८१-२०१० | तापमान डि. से. बदलाव | औसतम १९६१-१९९० | न्यूनतम १९८१-२०१० | तापमान डि. से. बदलाव |
|---|---|---|---|---|---|---|
| मई | 42.5 | 43.5 | 1.0 | 28.0 | 27.9 | 0.1 |
| जुन | 37.7 | 38.1 | 0.4 | 26.4 | 26.6 | 0.2 |
| जुलै | 31.2 | 31.8 | 0.6 | 24.0 | 24.4 | 0.4 |
| अगस्त | 30.5 | 30.9 | 0.4 | 23.6 | 23.7 | 0.1 |
| सप्टेंबर | 31.7 | 32.7 | 1.0 | 23.1 | 23.3 | 0.2 |
| अक्टो | 32.6 | 33.5 | 0.9 | 20.0 | 20.0 | 0.0 |
| नवंबर | 30.2 | 31.7 | 1.5 | 15.3 | 16.3 | 1.0 |
| दिसंबर | 28.1 | 29.8 | 1.7 | 12.1 | 13.1 | 1.0 |
| सीमा | | | 0.4 से 1.7 डि. से. | | | - 0.1 से 1.0 डि. से. |

सारणी क्र 1

क्या 15 सालों में औसतम, अधिकतम और न्युनतम तापमान के आंकडो में इतना फर्क आ सकता है यह जानने के लिये सारणी क्र 2 पर ध्यान देते है जिसमे हमारे मौसम विभाग द्वारा प्रकाशित जलवायु सारणियां वर्ष 1961 से 1990 और वर्ष 1981 से 2010 से लिये गये औसतम,अधिकतम और न्यूनतम तापमान के आंकडे दर्ज है।

| महिने और सिमा | औसतम १९६१ – १९९० | अधिकतम १९८१-२०१० | तापमान डि. से. बदलाव | औसतम १९६१-१९९० | न्यूनतम १९८१-२०१० | तापमान डि. से. बदलाव |
|---|---|---|---|---|---|---|
| जनवरी | 28.7 | 29.0 | 0.3 | 12.8 | 13.4 | 0.6 |
| फेब्रुवरी | 31.7 | 31.8 | 0.1 | 15.1 | 15.6 | 0.5 |
| मार्च | 36.2 | 36.4 | 0.2 | 19.1 | 19.7 | 0.6 |
| अप्रेल | 40.4 | 40.7 | 0.3 | 24.0 | 24.1 | 0.1 |
| मई | 42.3 | 42.7 | 0.4 | 27.6 | 27.8 | 0.2 |
| जुन | 37.6 | 38.0 | 0.4 | 26.2 | 26.5 | 0.3 |
| जुलै | 31.7 | 31.8 | 0.1 | 24.1 | 24.3 | 0.2 |
| अगस्त | 30.5 | 30.7 | 0.2 | 23.6 | 23.8 | 0.2 |
| सप्टेंबर | 32.0 | 32.3 | 0.3 | 23.0 | 23.2 | 0.2 |
| अक्टो | 32.8 | 32.9 | 0.1 | 19.7 | 20.0 | 0.3 |
| नवंबर | 30.5 | 30.9 | 0.4 | 15.3 | 15.8 | 0.5 |
| दिसंबर | 28.1 | 28.9 | 0.8 | 12.4 | 12.9 | 0.5 |
| **सीमा** | | | **0.1 से 0.8 डि. से.** | | | **0.1 से 0.6 डि. से.** |

## सारणी क्र 2

20 सालों में औसतम,अधिकतम और न्युनतम तापमान में क्रमश 0.1 से 0.8 डि से. और 0.1 से 0.6 डि. से. का बदलाव देखा जा सकता है। इससे हम यह अनुमान लगा सकते है की सन 2050 तक 1.5 पट तक की भी बढ़त हुई तो औसतम,अधिकतम और न्यूनतम तापमान में क्रमश 0.15 से 1.2 डि.से. और 0.15 से 0.9 डि.से. का ईजाफा देखा जाएगा।

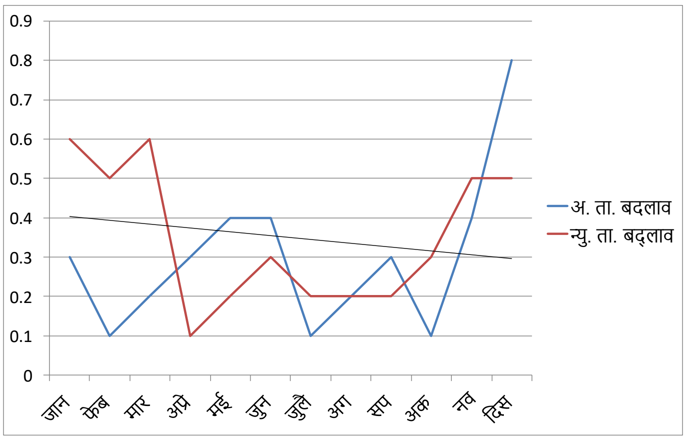

ग्लोबल वार्मिंग पर काम करने वाले वैज्ञानिको के अनुसार 21 वी शताब्दी में हमारे पृथ्वी का तापमान 3 डिग्री से 8 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ सकता है। सारणी क्र 2 के अधय्यन के बाद अगर तापमान में 1.5 गुणा बढ़ोत्तरी भी हुई तो नागपुर में 21 वीं शताब्दी (सन 2050) तक औसतम, अधिकतम और न्यूनतम तापमान में 0.5 से 3.0 डि.से. तक की बढ़त देखी जायेगी।

सारणी क्र 1 मे हमने देखा 15 साल मे ही औसतम, अधिकतम और न्यूनतम तापमान मे लगभग – 0.1 से 1.7 डि.से. की बढ़त । इसका मतलब 21 वी शताब्दी(सन 2050 तक) नागपुर मे 0.0 से 5.0 डि.से. की बढ़त होना नामुमकीन नही।

**झुकाव 1961-1990/1981-2010**

सारणी क्र 1 और 2 पर चर्चा से यह देखने मे आता है की नागपुर में 21 वीं शताब्दी (सन 2050 तक) औसतम अधिकतम तापमान और न्युनतम तापमान में 0.5 से 4.0 डि.से. तक की बढ़त होने की सम्भावना है ।

अगर ऐसा हुआ तो नागपुरवासियों को बरफ भरे पहाडों और वादियों को देखने कशमीर नहीं जाना पड़ेगा वो तो हमारे सेमिनरी हिल्स और डिगडोह में ही उपलब्ध रहेगा। ग्लोबल वार्मिंग के लिए जिम्मेदार अधिकांश कारक मानव के द्वारा किए गए निर्मित कार्य जिसका परिणाम विनाशकारी है । मानव विकास और प्रगति की अंधी दौड में प्रकृति से दूर होता जा रहा है।

अंटार्कटिका महाद्वीप से रिपोर्ट

बरफ और पेंगुइन के लिये विख्यात अंटार्कटिका महाद्वीप के उत्तरी भाग में 18.3 $^{o}$ C का तापमान दर्ज किया गया है जो की एक रिकोर्ड हो सकता है। अर्जेंटिना के एस्पेरंज़ा नामक एक अनुसंधान बेस पर गुरुवार 5 फरवरी 2020 को दर्ज किया गया है जो अभी तक WMO ने सत्यापित नहीं किया है। रांडाल सर्वेनी जो WMO के रिकोर्डों का पुननिरिक्षण करते है। कहते है कि उनका अनुभव यह कहता है कि यह रिकोर्ड वैध हो सकता है। अब इंटरनेट से लिये हुए कुछ छायाचित्र पर ध्यान देते है जो कि ग्लोबल वार्मिंग के कारण हो सकते है।

**नागपुर में कुल वर्षा के आंकड़े पिछले कुछ सालों में बढ़े हुए दिख रहे है।**
**यह ग्लोबल वार्मिंग का एक लक्षण है। ।.**

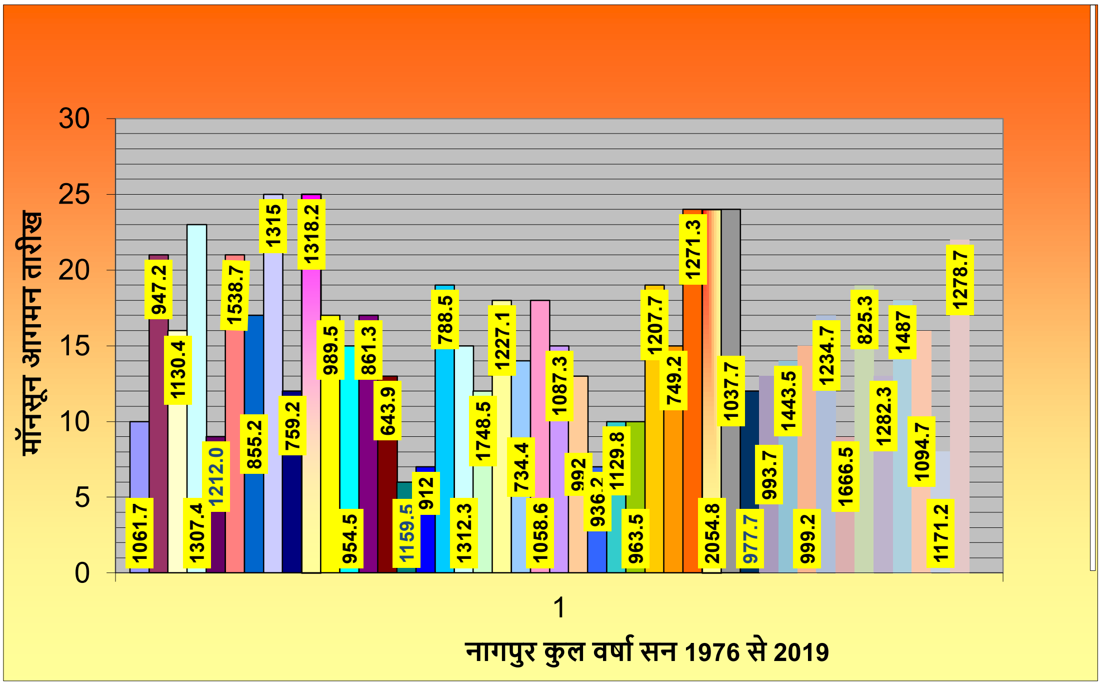


## एक संकल्प

ग्लोबल वार्मिंग पूरी तरह रोकना अगर मुमकीन नहीं तो कम से कम उसे कम करवाने के लिये हम सब विश्व के मानव कोशिश जरूर कर सकते हैं।

जय भारत , जय विश्व , जय मानव !

**

# गरीबी का दिमाग

श्री जी. एस. नगराले, वैज्ञानिक-ई

शास्त्रों में तीन हठ गिनाए गए है। बाल हठ, त्रिया हठ और राज हठ।

एक राज पुत्र ने राज हठ किया ।

“मिश्रा जी  पंद्रह अगस्त आनेवाला है। कुछ नया होना चाहिए.’

“यस सर आप पोलो मॅच के लिए कह रहे थे। उसका अरेंजमेंट करवा दे”

“नहीं  ..... हमें देश के लिए कुछ करना है.... हमको अपने देश से, उसके सिटीजन से, बहुत इंटीमेसी है..... हम हमारे देश के गरीब देखना चाहते हैं, हमें गरीब दिखाईये।”

“यस सर मैं अभी आपको गूगल इमेज और नेशनल ज्योग्राफ्रिक मॅगजीन में गरीब दिखाता हूँ।”

“ओ....नो हमें रीयल गरीब देखने है, ये वाले गरीब तो हम रोजाना देखते हैं ...... एकदम नॅचुरल गरीब।”  “सॉरी सर मैं समझा नहीं ?”

“इसमें समझने की कौन सी बात है...... हमको सचमुच के गरीब देखने हैं....

उनको टच करना है...... उनसे बात करनी है..... आई वान्ट टू नो द रीयल फील ऑफ पुअर....... गॉट इट ? आया समझ में ?

“ओके सर  मै समझ गया..... अभी दो-चार गरीब बुलवाता हूँ ......

एक तो हमारा चपरासी ही काफी गरीब है.........”

“नो नो नो हमको उनके पास जाना है। हमें गावों मे जाना है।” यू फिक्स द टूर। हम जाएंगे।”

एक गाँव तुरंत छांटा गया लेकिन ये गाँव राजपुत्र ने नकार दिया, कारण था कि ये गाँव  काफी विकसित था। राजपुत्र को एक बेहद पिछडा गाँव  देखना था। आखिर झक मार कर अधिकारियों ने एक पिछडा गाँव  छांट लिया। यात्रा शुरू हो गई। पहले चार्टर प्लेन फिर हेलीकॉप्टर और उसके बाद कारों का काफीला उस ‘पिछडे गाँव  में जा पहुँचा जहां ‘गरीब’ रहते थे। राजपुत्र के स्वागत के लिए दूर-दूर से लोग आए हुए थे। अफरातफरी का माहौल था। भीड़-भाड़ देखकर राजपुत्र का ‘मूड’ खराब हो गया।

“इनमें से जो गरीब है उन्हे मेरे कॅम्पस में बुलवाइए।” राजपुत्र ने सचिव को आदेश दिया। चार गरीब कॅम्पस में बुलाए गए जिनमें दो पुरूष गरीब और दो महिला गरीब है।

कॅम्प में गरीबों को जमीन पर बिछी दरी पर बिठाकर बातचीत की राजपुत्र भी कुर्सी छोड़कर नीचे ही बैठ गया।

"इनको मालूम है सरकार कि हम कितने गरीब है..... एकदम प्योर गरीब है सरकार..... क्यों सरकार है ना हम गरीब ? एक गरीब ने दूसरे से फुसफुसा कर कहा।

"देख लो बेटा मैंने कहा था, चुनाव आ रहे है, इसीलिए तो ये नीचे बैठ गए...."

"सब चुप हो जाओ जो पूछें उसका जवाब दो, " अधिकारी ने डांटा!

राजपुत्र - "तोऽऽऽ...... आप लोग गरीब है?" राजपुत्र ने अपने चेहरे से मंद बुध्दी दर्षानेवाली मासुमियत को छुपाने के प्रयास में अपने चेहरे पर गंभीरता ओढ़ते हुए सवाल किया। ये सवाल ऐसा ही होता है जैसा कि अदालत में गवाह या अपराधी का नाम पता अच्छी तरह जानते हुए भी वकील उस व्यक्ति का नाम वगैरा पूछते है।

पहला गरीब "हां सरकार ! बहुत गरीब है।" इस गरीब ने अति उत्साह में काफी तेज आवाज में 'हां सरकार' कहा लेकीन जब पास खड़े अधिकारी ने उसे अर्थ सहित घूरा तो फिर 'बहुत गरीब है' को बहुत धीमी आवाज में कहा जो कि लगभग फुसफसाहट में बदल गई। राजपुत्र-"अच्छाऽऽऽ लेकीन कितने गरीब ?" राजपुत्र ने जैसे कोई रहस्य जानने की कोशिश की !

दुसरा गरीब - "बहुत ज्यादा सरकार...... मतलब कि एकदम से पूरे के पूरे गरीब।" दूसरे गरिब ने पास खड़े अधिकारी की तरफ इशारा किया और जरा रूककर कहा - "इनको मालुम है सरकार कि हम कितने गरीब है.... एकमद प्योर गरीब है सरकार!.... क्यों सरकार है ना हम गरीब?" इस पर अधिकारी ने खिसियाहट भरे आश्चर्य से राजपुत्र की तरफ देखकर अपने अनुभवी अधिकारी होने का फर्ज अदा किया।

राजपुत्र - क्या खाते है आप लोग? मतलब कि ब्रेकफास्ट.....लंच..... डिनर मे क्या लेते है? राजपुत्र ने बडे घरेलू अंदाज में पूछताछ आगे बढाई।

अधिकारी - "सर पूछ रहे है कि सुबह, दोपहर और रात के खाने में क्या खाते हो?" खिलाने-पिलाने की बात चल रही है तो तुरंत मेहमान वाले अंदाज में शरमाकर कहा। राजपुत्र - "वो तो ठिक है...आप लोगों के खाने का इंतजाम भी है... लेकिन मै ये जानना चाहता हूँ कि आप खाते क्या हैं मतलब कि आपका रोजाना का खाना क्या होता है?"

दुसरा गरीब - " जो मिल जाये सो खा लेते है सरकार....वैसे रोटी-चटनी ज्यादा खाते है सरकार!......अब तीन टाइम तो नहीं खाते है......

कभी दो बार तो कभी एक बार..... खेत में से भी कुछ साग-सब्जी मिल जाती है तो पका लेते है।"

"ठीक कह रह है बाबू जी,
गरीबी हमारे दिमाग में है...आप
लोगों के दिमाग में नहीं..... अगर
होती तो हम गरीब नहीं होते......"

राजपुत्र - "डाइरेक्ट खेत से तो ऑरगेनिक फुड मिलता होंगा आपको?"

दुसरा गरीब - " सरकार बथुआ, चौलाई, कुल्फा मिल जाता है, या फिर कभी मूली..... और जब आलू की खुदाई चलती है तो आलू खूब मिलते है वो भी बिल्कुल फ्री में."

राजपुत्र अधिकारी से- "आप सब कुछ नोट कर रहे है ना ? मुझे पूरा डेटाबेस चाहिए.."

अधिकारी-"यस सर! मैं नोट कर रहा हूँ।"

राजपुत्र- "फल कौन-कौन से खाते है आप लोग ?"

पहला गरीब - "बेर खा लेते है सरकार !.... और भी बहुत सी चीजें है सरकार आप नहीं जानते होंगे"

राजपुत्र - "जैसे?"

पहला गरीब - "जैसे शक्करकंद, फ्रूट, ककडी..."

राजपुत्र - "ये क्या है?"

अधिकारी "सर वाइल्ड फ्रूट है, एक तरह से स्वीट मेलन और ककुम्बर की तरह..."

राजपुत्र - ओ.के...... ये आपके साथ जो लेडिज है.....?

पहला गरीब - "ये हमारी घरवाली है सरकार और ये इसकी घरवाली है। वाइफ है सरकार वाइफ। मेरी घरवाली पढ़ी लिखी है सरकार हाईस्कूल पास....."

राजपुत्र - "अच्छा ! वेरीगुड ! आप लोगो का खर्चा कितना होता है खाने के ऊपर?"

दोनो 'गरीबों' ने एक दूसरे की तरफ देखा..... अधिकारी की तरफ देखा.... अपनी बीवियों से कानाफूसी की और फिर बड़े सोच-समझ कर पहले गरीब ने जवाब दिया। पूरा खर्चा आता है छब्बीस रूपये!"

राजपुत्र - "बस इतना ही.....? इससे ज्यादा नहीं ?

दुसरा गरीब - " हां सरकार! इतने में ही खाना पड़ता है वरना हमको गरीब कौन मानेगा अगर पाँच रुपये से ज्यादा का खाएंगे तो गरीबी की रेखा से उपर चले जाएगें.... फिर तो राहत भी नही मिलेगा..... मिट्टी का तेल वगैरा कुछ भी नहीं मिलेगा...... बी. पी. एल. कार्ड भी छिन जाएगा सरकार !..."

राजपुत्र ने अधिकारी से पूछा-

राजपुत्र - "क्या बस स्टॅन्ड पर खाना, पाँच रुपये में मिल जाता है?"

अधिकारी - "नो सर !, नही मिलता।"

राजपुत्र - "रेलवे स्टेशन पर मिलता होंगा ?"

अधिकारी - "नो सर!, नहीं मिलता।"

"जन प्रतिनिधि,

सार्वजनिक समस्याओं को हाशिए पर रखकर

आवश्यकताओं को पूरा करने की सोचते रहते हैं।

राजपुत्र - "पाँच रुपये में खाना तो बांग्ला देश और श्रीलंका में भी नहीं मिलता फिर ये चक्कर क्या है ?"

पहला गरीब - "नहीं सरकार ! दिल्ली और मुंबई में पाँच-दस रूपये में खाना मिल जाता है, बड़े-बड़े नेता यही बता रहे है, वहाँ इतना सस्ता खाना है तो हमको भी वहीं ले चलिए सरकार

राजपुत्र - "देखिए आपके दिल्ली या मुंबई जाने से कुछ नहीं होगा.... गरीबी आपके दिमाग में है.... इटस इन योर माइंड...... जस्ट स्टेट ऑफ माइंड..... आप सोचते हैं कि आप गरीब है तो आप गरीब हो जाते है.....आप सोचो मत कि आप गरीब है.... यही सीक्रेट है... मैंने आपको सबसे अच्छा तरीका बता दिया है.... कुछ आया समझ में ?" तम्बु में सन्नाटा हो गया, सब एक दूसरे की तरफ देखने लगे। जब कोई कुछ नहीं बोला तो पहले गरीब की हाईस्कूल पास पत्नी अचानक बोल पडी "ठीक कह रहे है बाबूजी, गरीबी हमारे दिमाग में है... आप लोगो के दिमाग में नहीं.... अगर हमारी गरीबी आपके दिमाग में भी होती तो हम गरीब नहीं होते....."

ये तो पता नहीं कि राजपुत्र पर इन बातों का कितना प्रभाव पड़ा और उसने क्या किया... तो आईए भारत कोश पर वापस चलते है।

देश में, बिजली, पानी, सड़क, सुरक्षा, स्वास्थ और शिक्षा जैसे मुद्दे का फायदा उठाना सीख गई । आजकल सडक बनवाने की बात करने से ज्यादा लाभकारी है कर्जा माफ करने की बात करना से भी लगने लगा की सडक तो 'सबके' लिए बनेगी लेकिन कर्जा तो मेरा माफ होगा । यही से व्यक्तिगत लाभ लेने की अभिलाषा शुरू हो गई और सार्वजनिक समस्याएं पिछड़ती चली गई । अनेक योजनाओं के चलते गांवों में पानी की टंकियां बनी लेकिन जनता का सारा ध्यान अपने घर के दरवाजे पर हैंड पम्प लगवाने पर रहा । टंकियों की हालत खराब होने लगी और ज्यादात्तर टंकियां अब बेकार पडी है । ग्राम पंचायत और विधायकों को मिलनेवाले वोटों के पीछे जनता की व्यक्तिगत मांगों का दबाव बना रहता है।

जन प्रतिनिध होने का अर्थ,काफी हद तक यह हो चुका है कि प्रतिनिधि हर समय जनता की व्यक्तिगत आवश्यकता के लिए भाग दौड करें। थाने, तहसिल, में सच्चे –झूठे मुद्दे और मुकद्दमों की सिफारिश करें। इस प्रक्रिया में जन प्रतिनिधि में अपना पराए की भावना बहुत प्रबल हो जाती है। हमको यह सोचना और जानना होगा कि सभी असमानता बढ़ाने वाली नितियों के पीछे कौनसी सोच काम कर रही है क्योंकि आजकल की मानसिकता, सार्वजनिक समस्याओं को ताक पर रखकर, जनता की व्यक्तिगत आवश्यकता को पूरा करने की सोच उभर के आई है।

इसके लिए केवल एक ही कारण है हमारी नकारात्मक सोच जिसके कारण हमारे देश के प्रजातांत्रिक ढ़ांचे में देश की विचार धाराओं के आधार पर ही समग्र होना चाहिए। विचारधाराएं दो या अधिकतम तीन ही होनी चाहिए,इससे अधिक होने का सीधा अर्थ है कि कोई न कोई धर्म ,जाति, भाषा या क्षेत्र का मुद्दा है । सामान्यता जनता के मन में तीन प्रकार की सोच ही समायी रहती है, और सोच कभी भी समग्र समाज का प्रतिनिधित्व नहीं करती । दक्षिण पंथी विचारधारा में, परम्परा,धर्म,पूंजीवाद आदि समाहित रहते है । वामपंथी विचारधारा में प्रगति,धर्म निरपेक्षता और समाजवाद समाहित होते है । मध्यमार्गी विचारधारा इन दोनों के बीच की सोच है जिसमें विकास,धर्म संभाव और पूंजीवाद –समाजवाद का समिश्रण समाहित होते है ।

कुछ प्रक्रिया के चलते भारत ने कई कठपुतली मुर्तियों को झेला है। जिसके तहत परिवारवाद अभिन्न अंग बन गया है और अनेक बार इस प्रक्रिया के बचाव में एक सामान्य सा उदाहरण दिया जाता है कि व्यापारी का वंशज व्यापारी, अभिनेता का वंशज अभिनेता, खिलाडी का खिलाडी तो नेता का वंशज नेता क्यों नहीं ? सीधी-साधी

जनता इस मूर्खतापूर्ण तर्क को सहज ही मान लेती है। जबकि सच्चाई उससे बिल्कुल अलग है। व्यापार, खेल और फिल्मी दुनिया की उपलब्धियाँ, व्यक्तिगत हितों को आधार बनाकर ही की जाती है, जिनमें जनता का कोई लेना –देना या भागीदारी सामान्यत: नहीं होती।

भारत में यही होता आया है, वंशवाद के कारण सबसे अधिक ठेस गुरू शिष्य परंपरा को लगी है। आज के समय में कर्तव्यनिष्ठ हिस्सा होना असंभव जैसा हो गया है। यदि हमारे देश में वंशवाद नियम लागू नहीं किया गया और वंशवाद पर लगाम न कसी गई तो देश का विकास होना असंभव ही है।

**

# पिता

श्री अंशुल व्दिवेदी, वै.स.,ग्वालियर

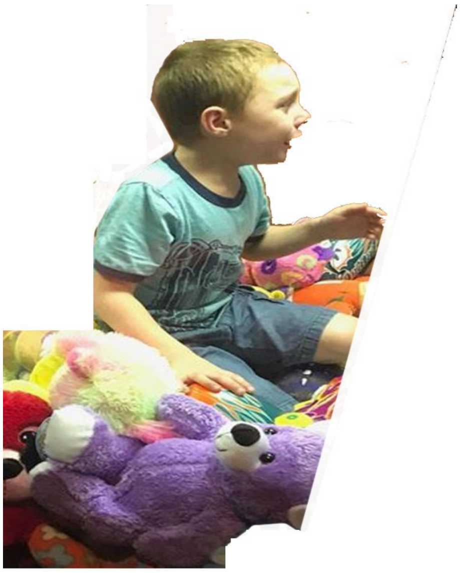

रख के वो खिलौना, वापस चल दे,
नन्हें कदम वापस पलटे,
सोचें पापा कितने गन्दे,
बिना खिलौने के क्यूं चल दें,
यूं कुछ मम्मी कह गलें लगाई,
आंसू पोंछे और कह आई,
देखो कल वो खिलौना लेते आना,
मेरे बच्चे को और न रुलाना,
रात गुजारी सोच वो खिलौना,
गूंजेगा कल कोना-कोना,
सुबह तक खो गई वो यादें,
पापा फिर भी पूरे कर लाये वादे,
लगी कहानी यहीं खत्म थी,
पर वो बात मां के ज़हन मे थी,
मां तो अपना बना सकती है,
बच्चे को अपना सब कुछ देकर,
वहीं जानती है कि पापा,
क्यूं चुप हो जाते है सब देखकर,
नहीं दे पाते हैं सब अपना,
परिवार जो ये चलाना है,
शर्मिंदा कभी होना है किसी दुकान में,
पर किसी को ये नहीं बताना है,
खिलौना लेना है,
खाली जेब लेकर घर जाना है।

**

# ग्वालियर में मौसम का हाल

श्री जयदीप शर्मा ,वै.स,मौ केंद्र ग्वालियर

यहाँ के मौसम की मार,
झेल रहा हर लाल,
बारिश के मौसम में,
उमस किये हुए है बेहाल।

सर्दी तो यहाँ की,
कंपाये हर हाल,
गर्मी के मौसम में,
ये झुलसाये बेमिसाल,
किसान की है मेघां से पुकार,
अब तो बरसो नहीं तो हो जायेंगे कंगाल।

सर्दी में दो तीन तक गिरता मद्यसार,
गर्मी में पारा चढ़ता अढ़तालीस हर साल,
पत्रकारों के सवाल से खीचतें हैं खाल,
पूछते है क्या रहेगा मौसम का हाल।

मौसम वैज्ञानिकों के अनुमानों की
यहाँ भी गलती है दाल,
पर यहाँ के मौसम की मार,
झेल रहा हर लाल।

**

# भारत की वैश्विक छवि एवं हिंदी का संबंध :

श्रीमती दीपिका कटारा, वै.स.

प्रस्तावना :

सुरस सुबोधा विश्व मनोविज्ञान ललिता हृदया रमणीय
अमृतवाणी संस्कृत भाषा नैव कनिष्ठा च कठिना
कवि कुलगुरू वाल्मीकि विरचियता  रामायण रमणीय कथा
रघु ऋतु कुमार कविता नैव कनिष्ठा न च कठिना

**1)** पुरातन काल में भारत की वैश्विक छवि एवं हिंदी

भारत वर्ष को पुरातन काल में हिंदुस्तान के नाम से विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त था तथा भारत वर्ष का यह नाम यहां की भाषा हिंदी को विश्व में अपनी अलग पहचान दिलाता था। कई गुप्तचर तथा व्यापारी भारत में व्यापार करने के लिए आते थे तथा हिंदी भाषा को सीखते थे। भारत में सारी भाषाओं को जननी संस्कृत को माना गया है। उक्त लिखित पंक्तियां संस्कृत की सरलता बोधगम्यता को दर्शाती है। सिंधु सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता में भी संस्कृत भाषा के प्रयोग के सबूत प्राप्त हुए हैं।

2) **उत्तरार्ध काल में हिंदी तथा भारत की वैश्विक छवि**

भारत में धीरे-धीरे विदेशी ताक़तों ने जोर आज़माया तथा कई आक्रमण किए जिनमें कई आक्रमण में हमारी धरोहर को नष्ट किया गया जैसे कि सांस्कृतिक इमारतें, साहित्य, किताबें, जिसमें नालंदा विश्वविद्यालय का कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी द्वारा किया गया आक्रमण सबसे बुरा माना जाता है। इन आक्रमणों में विदेशी ताक़तों के साथ-साथ विदेशी भाषा सभ्यता भी अपनी जड़े जमाने लगी, जिससे हिंदी भाषा का पतन हुआ। इसमें और भी कई कारण है, जैसे तत्कालीन राजाओं द्वारा हिंदी भाषा का प्रयोग नहीं करना, कई हिंदी कवियों और कलाकारों  को प्रोत्साहन न देना, हिंदी संग्रहालय का रखरखाव ना रखना, इत्यादि। इन्ही कारणों से भारत की छवि जो विश्व गुरु की थी वह धीरे-धीरे धूमिल होती गई। परंतु दक्षिण भारत में संस्कृत की उप भाषा तमिल ने उसी समय कई ग्रंथों की रचना की जैसे सिलपदिकम, मनिमेखला, थुरुवेल्लूर, इत्यादि।

**3)** उपनिवेशिक काल में भारत की छवि व हिंदी:

भारत अंग्रेजों का गुलाम बन गया उस समय भारत की आर्थिक सामाजिक शैक्षणिक सांस्कृतिक स्थिति बहुत खराब हो चुकी थी। अंग्रेजी भाषा को भारतीय पर थोपा गया जैसे कि आई सी एस परीक्षा में विदेशी भाषा का पूछा जाना इत्यादि। वर्नाकुलर प्रेस एक्ट द्वारा भाषा के प्रयोग को कम करना, कोई हिंदी भाषा की शोध, प्रयोग को बढ़ावा न

देना, परंतु 19वीं शताब्दी में हमारी स्वतंत्रता सेनानियों तथा नेताओं ने हिंदी भाषा के प्रचलन को बढ़ावा दिया जिसमें कवियों में, कवि मैथिली शरण गुप्त, महादेवी वर्मा, हरीवंश राय बच्चन, जय शंकर प्रसाद, भक्त कवि निराला, सुमित्रानंदन पंत, ने कविताओं के जरिए, नेताओं में लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक का नारा, आजाद का 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूँगा' 'दिल्ली चलो', व अंग्रेजों भारत छोड़ो  इत्यादि नारे काफी लोकप्रिय हुए। उसी समय हिंदी भाषा के प्रयोग हेतु महात्मा गांधी ने कहा था, 'राष्ट्रभाषा के बिना देश गूंगा है।'

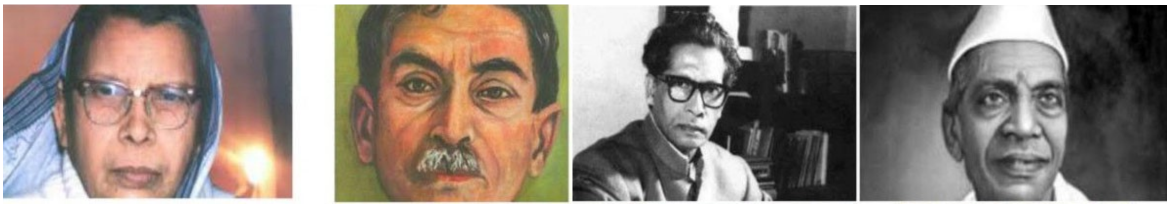

4) **वर्तमान आज़ादी के पश्चात तथा वर्तमान समय में भारत की वैश्विक छवि व हिंदी**:

जिस देश को अपनी भाषा तथा साहित्य पर गौरव में ही देश कभी उन्नत नहीं हो सकता डॉ. राजेंद्र प्रसाद आज़ादी के पश्चात जून 1975 में हिंदी भाषा के प्रयोग के लिए राजभाषा मंत्रालय बनाया गया जिसका काम हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार करना है। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) में हिंदी भाषा को राजभाषा का दर्जा दिया गया है तथा अनु-सूची 8 में भारत में कुल 22 मुख्य भाषाएं बनाई गई जिसमें हिंदी भाषा को जोड़ा गया। राजभाषा आयोग समय-समय पर हिंदी के उपयोग व शोध पर कई पुरस्कार प्रोत्साहन योजना बनाता है। जैसे की 'राजभाषा गौरव पुरस्कार' 'राजभाषा कीर्ति पुरस्कार', इत्यादि।

हिंदी भाषा के वैश्विक प्रयोग पर बल देने हेतु हिंदी में 'समय डॉट कॉम' नाम की एक वेबसाइट का निर्माण किया गया जिस पर कई लेख, उपन्यास, कविता, नाटक, गीत काव्य, इत्यादि प्रकाशित होते हैं। इसके अलावा महात्मा गांधी हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा ,  महाराष्ट्र में स्थापित किया गया है जिसमें हिंदी भाषा की पढ़ाई तथा शोध कार्य किया जाता है।

भारत सरकार द्वारा किए गए वैश्विक प्रयास:

- वर्ष 2007 में यूनाइटेड नेशन भारत द्वारा हिंदी को कार्यालय भाषा बनाने की मांग की गई थी।
- फ़ीजी देश ने वर्ष 2013 में संविधान संशोधन कर हिंदी को राजभाषा बनाया गया।

- राजभाषा द्वारा त्रैमासिक 'भारती' नामक पत्रिका निकाली जाती है जो कि विदेशों में भारतीय दूतावास, राजदूतों, एमपी, एमएलए को बाटी जाती है।
- नेपाल में 77529 लोगों द्वारा हिंदी प्राथमिक भाषा के रूप में बोली जाती है।
- 2011 के जनगणना के अनुसार भारत सरकार द्वारा कई योजनाओं के नाम हिंदी में दिया जाना जैसे -'जन-धन योजना'....।
- हिंदी भाषा विश्व में प्रथम स्थान पर बोली जाने वाली भाषा है।
- विश्व स्तर पर वर्तमान समय में कई देश जैसे कि पाकिस्तान, बांग्लादेश, नेपाल, मालदीव, बर्मा, कनाडा, युगांडा फ़ीजी इत्यादि देशों में हिंदी भाषा बोली जाती है।
- वर्तमान समय में नई शिक्षा नीति में प्राथमिक स्तर पर क्षेत्रीय भाषा के प्रयोग पर बल दिया है।

5) हिंदी का वैश्विक आर्थिक महत्व :

वर्तमान में कई क्षेत्रों में भारत एक अच्छा बाजार उपलब्ध करवा रहा है जैसे कि टेलीकॉम उद्योग मनोरंजन आईटी क्षेत्र शिक्षा क्षेत्र इत्यादि। कई विदेशी कंपनियां अपने निवेश भारत में करने को उत्सुक है। इस पर अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश ने कहा था कि 'अगर भारत में जगह बनानी है,भारतीय के मन को जीतना है तो, हिंदी सीखो।'

वर्तमान में हिंदी फिल्म उद्योग ने भी अपनी अलग पहचान बनाई है। हिंदी के कई गीत विदेशों में गाए जाते हैं तथा उनके साथ ही कई आर्थिक क्षेत्र में विकास के मार्ग को खोलती है जैसे हिंदी एक शिक्षण विषय के रूप में फैशन उद्योग, टेक्सटाइल उद्योग, इत्यादि। अंत में, कबीरदास ने कहा है कि 'भाषा एक बहता नीर है।'

सार:

कई क्षेत्र ऐसे हैं जहां हिंदी का प्रयोग काफी कम है जैसे आईटी क्षेत्र में, हिंदी सर्च इंजन, राज्य के बीच भाषा को लेकर विवाद, इत्यादि। परंतु हमें यह मानना होगा कि हिंदी भारत को विश्व में अपनी अलग पहचान दिलाती है।

"भारत की शान हिंदी, भारत का अभिमान हिंदी"

**

# मौसम विभाग द्वारा प्रदान की जा रही पूर्वानुमान संबंधी सेवायें

श्री चैन सिंह, वै.स.

मौसम विज्ञान विभाग भारत सरकार के अंतर्गत पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अंतर्गत आता है जिसकी स्थापना 15 जनवरी 1875 में हुई (इस दिन को फाऊण्डेशन – डे के रूप में मनाया जाता है।) । मौसम विभाग का मुख्यालय नई दिल्ली में स्थित है । 1905 में मुख्यालय को शिमला स्थानांतरित किया गया तथा 1928 में पुणे तथा अंततः नई दिल्ली में स्थापित कर दिया गया ।

मौसम विभाग का मुख्य कार्य मौसम विज्ञान सर्वेक्षण, मौसम पूर्वानुमान, भूकम्प विज्ञान आदि पर कार्य करना है, इसके पूर्वानुमानों का तथा प्रेक्षण का उपयोग विभिन्न सरकारी व निजी संस्थानों के साथ-साथ आम जन द्वारा भी किया जाता है । जैसे रेलवे, आपदा प्रबन्धन विभाग, प्रशासन, बीमा कम्पनी, विद्युत उत्पादन कम्पनी आदि द्वारा किया जाता है ।

मौसम विभाग का गठन 1964 के कोलकाता के चक्रवात तथा 1866 व 1871 के अकाल के बाद किया गया ताकि मौसम के आँकड़ों का सर्वेक्षण किया जा सके ।

हर साल 23 मार्च को विश्व मौसम विज्ञान दिवस मनाया जाता तथा सर हेनरी फ्रांसिस मौसम विभाग के पहले मौसम संवाददाता थे तथा सर जॉन एलिअट मौसम विभाग के पहले महानिदेशक सन् 1889 में बनाये गये ।

## मौसम विभाग के कुछ तथ्य

- इस समय मौसम विभाग में 25 रडार कार्यरत हैं जो कि मौसम के तात्कालिक आँकड़े देती है, जिनके आधार पर ओलावृष्टि, बारिश, आँधी के साथ तूफान आदि के बारे में बताया जा सकता है ।
- मौसम विभाग में 39 रेडियोसोण्डे, 62 पायलट बलून वेधशालाएँ उपस्थित हैं जो कि उपरितन वायु के आँकड़े उपलब्ध कराते हैं जिनके आधार पर कम दबाव के क्षेत्र, चक्रवात, रिज आदि का पता लगाया जाता है तथा उपरितन मौसम व मापदंडों को ज्ञात किया जाता है ।
- मौसम विभाग में 129 स्वचालित वेदर स्टेशन हैं जो कि बिना मानव हस्तक्षेप के मौसम के आँकड़े उपलब्ध कराते हैं ।
- मौसम विभाग के प्रेक्षण में मुख्यतः ताप, दाब, वायु की गति व दिशा, आर्द्रता, बारिश, मौसम आदि की जानकारी दी जाती है ।

## मौसम विभाग में पूर्वानुमान के प्रकार

- नाउकास्ट जो कि तात्कालिक आँकडों के आधार पर कुछ घंटों के लिए पूर्वानुमान।
- शॉर्ट रेंज फोरकास्ट जो कि 1 से 3 दिनों तक का पूर्वानुमान।
- मीड़ियम रेंज फोरकास्ट जो कि 4 से 10 दिनों तक का पूर्वानुमान।
- एक्स्टेंडेड रेंज फोरकास्ट जो कि 10 दिनों से एक महीने तक का पूर्वानुमान।
- लॉंग़ फोरकास्ट जो कि एक महीने से अधिक का पूर्वानुमान।

मौसम विभाग अपने पूर्वानुमान में चेतावनियाँ रंग के साथ जारी करता है, जिसके आधार पर आपदा प्रबंधन विभाग तथा प्रशासन व आमजन सावधानियाँ बरत सके तथा प्रकृतिक आपदाओं (जैसे – आँधी – तूफान, कड़कती, अतिवृष्टि, चक्रवात आदि से बचने के पर्याप्त उपाय कर सके।

मौसम विभाग के पूर्वानुमानों से सबसे ज़्यादा जान माल को बचाया जा सकता है, वे हैं चक्रवात की चेतावनी तथा भारी वर्षा की चेतावनी।

## चक्रवात

यह समुद्र में एक कम दबाव का क्षेत्र बनता है तथा जब इसके बाहरी भाग में हवा की गति 73 मील / घण्टा से ज़्यादा हो जाये, ये चक्रवात का रूप ले लेता है जैसे – जैसे हवा की गति बढ़ती है, चक्रवात भयंकर रूप को धारण करता रहता है, जैसे – गंभीर चक्रवात, अति गंभीर चक्रवात, सूपर चक्रवात (जब वायु की गति 120 नॉट्स से अधिक हो)।

चक्रवात के पूर्वानुमान के लिए मौसम विभाग की स्थापना के पहले 1864 के कोलकाता के चक्रवात के बाद ही संस्था बना दी गई थी जो कि कोलकाता में स्थित थी।

1854 के कोलकाता के चक्रवात में 60000 लोग मारे गए थे तथा पूरा कोलकाता शहर जलमग्न हो गया तथा पानी इकट्ठा होने से फैली बीमारियों से कई हज़ार लोग मारे गए।

1876 में बेकरगंज (अब बंग्लादेश में) में आए चक्रवात में लगभग 200000 लोग मारे गए।

अब मौसम विभाग चक्रवात की हवा की गति तथा कहाँ यह ज़मीन से टकराएगा, ये बता देता है, जिसकी वजह से प्रशासन व आपदा प्रबन्धन विभाग तथा अन्य संस्थाएं अच्छी तरह से प्रबन्धन कर लेते हैं जिसके कारण लोगों व मवेशियों को सुरक्षित स्थानों

पर पहुँचाया जाता है। इससे अरबों की सम्पत्ति तथा जान माल की हानि को काफी हद तक रोक पाना संभव हो पाया है।

इस चक्रवात की आपदा के प्रबन्धन में मौसम विभाग के योगदान का अन्दाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि 2020 में आए चक्रवात की हवा की अधिकतम गति (260 कि मी / घण्टा) 1876 में आए चक्रवात (220 कि मी / घण्टा) से ज़्यादा थी फिर भी 2020 में आए चक्रवात "अम्पन" में मात्र 118 लोगों ने जान गँवाई जो 1876 में आए तूफान से 1700 गुना कम है।

हर साल बहुत सारे चक्रवात आते हैं जैसे 2020 में अब तक 2 चक्रवात आए "अम्पन" और "निसर्ग" । 2019 में आठ चक्रवात जैसे बुलबुल, वायु, फनी आदि । 2018 में सात चक्रवात आए । इसलिए चक्रवात प्रबन्धन मौसम विभाग के बिना सम्भव नहीं तथा लाखों लोगों की हर साल जान बचाई जाती है।

भारत मौसम विज्ञान विभाग के वर्तमान महानिदेशक डॉ. मृत्युंजय महापत्रा जी को "साइक्लोन मॅन" के नाम से भी जाना जाता है । चक्रवात का सटीक पूर्वानुमान भारत मौसम विज्ञान विभाग की एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

## भारी वर्षा का पूर्वानुमान व चेतावनी

भारी वर्षा की चेतावनी से एन. डी, आर. एफ. अच्छा प्रबन्धन कर सकती है, बाढ़ आने वाले इलाकों को खाली करवा सकती है तथा लोगों के लिए प्रशासन अच्छी व्यवस्था कर सकती है।

न्यूज़ एजंसी "डाउन टु अर्थ" के अनुसार उत्तराखंड में 2013 में जब बादल फटा था तब भी मौसम विभाग ने अत्यधिक भारी वर्षा की चेतावनी दी थी जिसके बावजूद प्रशासन ने अच्छे से सवधानी नहीं बरती व इंतज़ाम नहीं किए जिनकी वजह से लगभग 5700 लोग मारे गए तथा बहुत से लापता हैं आज तक। भारी बारिश की चेतावनी हो तो बांधों का अच्छे से नियंत्रण कर आपदा को टाला जा सकता है।

## हवाई अड्डों पर होने वाली प्रकृतिक आपदा

मौसम विभाग का एक कार्यालय लगभग हर हवाई अड्डे पर होता है जो कि विमान को उड़ने व उतरने में सहायता करता है तथा क्षतिग्रस्त होने से बचाता है जैसे कि क्यूमुलोनिम्बस बादल की सटीक जानकारी देता है, दृश्यता की सटीक जानकारी देता है तथा अगर मौसम विज्ञानी हवाई अड्डे के दाब में 1 हेक्टापास्कल की गडबड करे तो हवाई अड्डे की ऊँचाई में 30 फीट का अंतर आ जाता है जिससे विमान क्षतिग्रस्त हो सकता है तथा विमान के लिए रूट फोरकास्ट व अन्य पूर्वानुमान जारी कर आपदा से बचाता है।

## कृषि में काम आने वाले पूर्वानुमान

मौसम विभाग कृषि के लिए अलग से पूर्वानुमान भी देता है तथा लॉंग रेंज पूर्वानुमान के आधार पर किसान निर्धारित कर सकता है कि कौनसी फसल उगानी है तथा ओलावृष्टि की पूर्वानुमान से अपनी फसल को बचा सकता है। सर्दी के दिनों में पाले के पूर्वानुमान से अपनी फसल की रक्षा कर सकता है तथा बारिश के पूर्वानुमान से फसल को पानी देने की सही से रणनीति बना सकता है जिससे फसल खराब न हो तथा अकाल जैसी प्राकृतिक आपदा से बचा जा सके।

## अन्य सेवाएँ

मौसम विभाग पर्यावरण मॉनीटरिंग भी करता है जैसे ओजोन परत का रिक्तीकरण का मॉनीटरिंग व वायु की शुद्धता का मॉनीटरिंग जिससे बहुत से रोगों से बचा जा सकता है।

मौसम विभाग भूकम्प के बारे में जानकारी भी देता है तथा मॉनीटरिंग भी करता है।

मौसम विभाग मछुआरों के लिए भी पूर्वानुमान जारी करता है जिससे उनके जहाज व उनकी ज़िन्दगी को प्राकृतिक आपदाओं से बचाया जा सके।

मौसम विभाग शीत लहर एवं उष्ण लहर के बारे में भी जानकारी देता तथा चेतावनी जारी करता है। उष्ण लहर से व्यक्ति के शरीर में पानी की मात्रा कम हो जाती है एवं वह उल्टी, दस्त, हैजा आदि बीमारियों से परेशान हो सकता है। चेतावनी के आधार पर प्रशासन आम जन को बाहर न निकलने के लिए चेतावनी जारी कर सकते हैं।

अतः उपरोक्त सभी तथ्यों से प्रमाणित होता है कि मौसम विभाग प्राकृतिक आपदाओं के प्रबन्धन में एक महत्वपूर्ण योगदान देता है तथा हर वर्ष लाखों लोगों की जान तथा अरबों की सम्पत्ति बचाई जाती है एवं बहुत सी बीमारियों से बचाया जा सकता है।

**

# पत्नी-कंप

श्री ए.वी.गोडे, मौ.वि.बी (सेवानिवृत्त)

पति-पत्नी के झगड़े में आ गई बहार,
कभी पत्नी, तो कभी पति कमरे के बाहर।
एक-दूजे के साथ ऐसी ठनी इस बार,
कोई नहीं, तैयार मानने को हार।
पत्नी ने एक-एक करके अजमाए सभी हथियार,
लेकिन पति के दृढ-संकल्प के आगे सब हो गये बेकार।
हमेशा झुकने वाले पति का देख कर यह व्यवहार,
अचरज में पड़ी पत्नी ,कैसे नाकाम हो गये मेरे हथियार।
सोचने लगी कि पति का कहीं चल तो नहीं रहा चक्कर,
अगर ऐसा है तो बेकार है लेना पति से टक्कर।
सोचने लगी क्या पति को नहीं रहा है मेरे प्रति वो प्यार,
पति से इस बात का कैसे करें इजहार,
क्या मैं इस बार पति के अत्याचार की बन जाउंगी शिकार,
ऐसा हुआ तो यह होगी पत्नी धर्म की हार,
कम हो जाएगा मेरा मूल्य और जताना पड़ेगा मुझे हमेशा प्यार।
चलो चलाते है कोई नया हथियार,
जिससे बनी रहे मेरी साख और उनकी हो जाए हार।
पति के साथ उस रात हो गई पत्नी कमरे के अंदर,
देख कर पति सोचने लगा क्या है ये नया चक्कर।
लगता है बर्फिला तुफान पड़ गया है कमजोर ,
पति अंदर-अंदर डरा, देख कर पत्नी के तेवर,

न जाने कैसे बितेगी ये काली रात भयंकर,
इसी डर से नींद नहीं आ रही थी रात भर।
रह-रह कर सोच रहा था पत्नी के कुट्नीतिक हथियार पर,
अचानक जोर से आवाज गूँजी घनी रात्री पहर
भूकंप– भूकंप आया देखो मेरे पतिराज इधर,
पति कि आंख खुली और देखा बिस्तर के इधर-उधर,
खोजने लगा किधर गया मोहन जोदडो हड्प्पा खुदाई का कीमती जेवर
देखा हलकी नजरें उठाकर आगे की ओर,
किमती जेवर अस्त-व्यस्त अवस्था में पड़ा जमीन पर
व्यंग्य करते हुये पति ने कहां हिम्मत जुटाकर,
अरे भागवान थोड़ी देर पहले तुम थी इसी बिस्तर पर
पति का बिस्तर छोड़ कर,
मेरी प्यारी पत्नी क्या कर ही है जमीन पर
आप तो हमेशा रहते है कुंभकर्ण निद्रा में अपने बिस्तर पर,
आप को कैसे होगा पता, क्या चल रहा धरती के दिल के अंदर,
जोर से भूकंप आया और मैं उछल कर गिर पड़ी जमीन पर
थोडी बहुत हलचल रात से देख रहा था किसी के दिल के अंदर,
पति ने तंज कसते हुयें कहा पत्नी पर,
भागवान यह बताओ कि तुम्हारे गिरने के पहले,
या गिरने के बाद आया इस भूतल पर भूकंप ?
पत्नी की हल्की मासुम मुस्कान पर
पति ने हंसकर कहा क्या  ये था पत्नी-कंप ?

**

# साझा-गलियारा

श्री अंशुल द्विवेदी, वै.स. ग्वालियर

यह शीर्षक कुछ काल्पनिक सही पर इस परिकल्पना को सोचकर देखें तो भारत एवं पाकिस्तान के बीच जो भी रिश्ते अभी तक देखे गये उससे उलट एक अलग ही धारणा दिखाई देती है। निश्चित रूप से आजादी के बाद से ही भारत-पाकिस्तान के बीच में दूरियाँ बढ़ती गई हैं। एक के बाद हमने युद्ध भी झेला है पर आज जब कभी भी हम विकास की ओर देखते है तो तर्कसंगत रूप से यह कभी नही सोचते है कि भारत-पाकिस्तान रूपी चुल्हे पर अपनी रोटियाँ सेक कर बहुत से देश विकसित हो गये एवं आज भी फल-फूल रहे हैं। उदाहरण के रूप में आज वैश्विक रूप में चीन है। आज चीन एशिया के साथ-साथ पूरे विश्व में अपनी छाप छोड़ने की तैयारी कर रहा है पर यह कैसे मुमकिन हुआ**?** आखिर ऐसी कौन सी कूटनीतिक एवं विकासनीति थी जिससे चीन को विश्व चारो ओर एक खतरनाक एवं अड़ियल स्वभाव वाला देश बना दिया। जो देश तकनीक चुराने के लिए विश्व की आलोचना झेल रहा था, अचानक वह देश कैसे धीरे-धीरे वैश्विक चुनौती बनता जा रहा है। अगर सरल-आसान भाषा में कहा जाये तो इसका एक ही उत्तर है-व्यापार एवं विश्व के बाजार में अपने सामान की बिक्री का मोटा हिस्सा बेचना।

चीन देश को पहले यह समझ गया था कि भारत एक बहुत बड़ी चुनौती है। भले ही भारत उतना आत्मनिर्भर न था परंतु भारत में बने सामान की गुणवत्ता चीन एवं कहीं अन्य एशिया में बने सामानों की गुणवत्ता से कहीं अधिक अच्छी थी। दशकों से ही चीन एवं बहुत से देशो नें भारत-पाकिस्तान से अपने हितों को व्यापार के माध्यम से अच्छा मुनाफा कमाया है।

हम क्यों यह समझना नहीं चाहते कि युद्ध हल नहीं तो विकल्प में विकास को कैसे जोड़ा जाये। निश्चित रूप से कश्मीर मुद्दा कोई मुद्दा नहीं है यह भारत का अभिन्न अंग है परंतु पाकिस्तान को अब यह समझना होगा कि इतने वर्षों तक चीन की स्वायत्ता से निकलना उसके लिए जरूरी हो चला है।

एक विषय से इसे समझने का प्रयास करते है। चीन की वन बेल्ट रोड इनिशियेटिव क्या है हम सब जानते है। इससे चीन एक बहुत बड़ा व्यापारी बन कर उभरेगा पर इससे पाकिस्तान को कितना साझेदारी का हिस्सा मिल सकता है जो हर तरह से कर्ज के लिए चीन पर ही निर्भर है**?** इसके उलट यदि भारत-पाकिस्तान के बीच रिश्तों में यदि एक सामंजस्य बन जाये तो इस परिकल्पना से एक साझा गलियारा बनाया जा सकता है जिसके बहुफलदायक पहलू कुछ इस प्रकार हो सकते है।

1. चीन की वन बेल्ट रोड इनिशियेटिव के जवाब में भारत-पाकिस्तान में नदियों का अच्छा उपयोग किया जा सकता है।

**2.** भारत में रेल-नेटवर्क चीन द्वारा प्रायोजित उत्तरी विकास कार्य (पाकिस्तान में चल रहे चीनी निर्माण) से अधिक सस्ता एवं पहले से ही तैयार है।

**3.** भारत में थार मरूस्थल से लेकर बंगाल,बंग्लादेश फिर उत्तर-पूर्वी भारतीय राज्यों को मिलाते हुए म्यंमार एवं अन्य दक्षिण पूर्वी एशियाई देशों को एक नेटवर्क से जोड़ना। जिसमें रेल नेटवर्क एवं आंतरिक जलमार्ग बहुत किफाइती कीमत पर व्यापार सुगम बना सकते है। वहीं पश्चिम में थार मरूस्थल से लेकर खाड़ी के देशो से होते हुए पुरे अफ्रीका में रेल नेटवर्क को जोड़कर भारत एवं पाकिस्तान साझा रूप से विकास क्रम में नई क्रांति की शुरूआत कर सकते है।

**4.** भारत जैसे विकासशील देशों में अन्तर्राष्ट्रीय सीमाओं से अधिक जरूरी मुद्दे है विकास क्रम में जनता को भागीदार बनाना जिसके लिए व्यापार सबसे बड़ा मुद्दा है।

यदि एक क्रम में इस पूरे रेल नेटवर्क को किसी नक्शे में बनाकर देखा जाये तो एक अलग ही दृश्य दिखाई देता है और तरक्की के नये आयाम नजर आते है। इसके समानांतर एवं एकीकृत सीवेज निकासी की परियोजना बनाकर हम हमारी नदियों को प्रदूषित होने से बचा सकते है, नये रोजगारों का सृजन किया जा सकता है एवं इससे प्राप्त टैक्स का देश हित में उपयोग किया जा सकता है। यदि व्यापार के संदर्भ में राजनैतिक सीमाओं को दर किनार करते हुए मान ले कि भारत-पाकिस्तान में एक व्यापारिक मार्ग बन जाये एवं आपसी साझेदारी से दोनो देश, अपने देशो के प्राकृतिक संसाधनों का समुचित उपयोग करें तो इस व्यापार एवं इससे होने वाले समग्र समयोचित आपसी विकास का पारिदृश्य कुछ इस प्रकार होगा। चूँकि एक बड़ी जनसंख्या एशिया में और मूलतः एशिया की बात

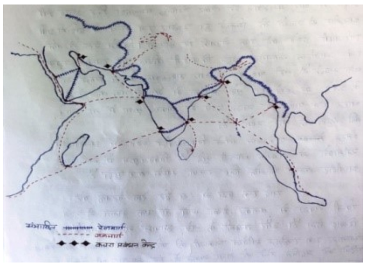

की जाये तो भारत एवं चीन में वास करती है इस संदर्भ से यहाँ पर कचरा उत्पादन है वह बहुत अधिक है इसके निपटारे हेतू कचरे का प्रबंधन एवं इसके प्रबंधन से जुड़ा व्यापार भविष्य में खूब फूले-फलेगा।

यदि इस मानव निर्मित कचरे को सही ढ़ंग से उपयोग करके शक्ति उत्पादन में लगाया जाये तो इससे बिजली उत्पादन में मदद मिलेगी एवं विकास के ऐसे नये आयाम खुलेंगे जो भारत-पाकिस्तान जैसे विकासशील देशों के लिए बहुत महत्वपूर्ण साबित होंगे।

**

# उपलब्धियां

1) श्री पांडुरंग एन. झलके, एम टी एस, प्रा. मौ. कें. नागपुर, को आई. एम. डी. के महानिदेशक, डॉ. एम. महापात्र, द्वारा उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 146 वें आई. एम. डी. स्थापना दिवस के अवसर पर योग्यता का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।

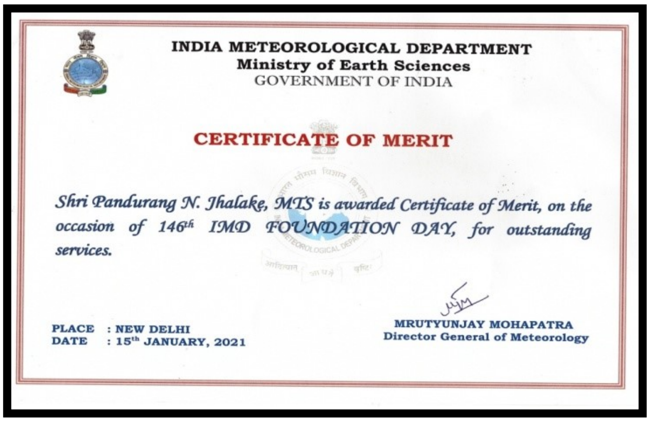
INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT
Ministry of Earth Sciences
GOVERNMENT OF INDIA

CERTIFICATE OF MERIT

*Shri Pandurang N. Jhalake, MTS is awarded Certificate of Merit, on the occasion of 146th IMD FOUNDATION DAY, for outstanding services.*

PLACE : NEW DELHI
DATE : 15th JANUARY, 2021

MRUTYUNJAY MOHAPATRA
Director General of Meteorology

2) राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 150 वी जयंती के उपलक्ष्य में पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा गांधी दर्शन पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में श्री देवीदास गीते, वै. स. को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

भारत सरकार,गृह मंत्रालय,राजभाषा विभाग
Government of India, Ministry of Home Affairs, Deptt. of Official Language
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास),नागपुर (कार्यालय-2)
Town Official Language Implementation Committee (TOLIC), Nagpur (Office-2)

प्रशस्ति-पत्र

श्री श्रेष्ठ गौतम, मौसम कार्यालय

को वर्ष 2020 के दौरान नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नागपुर (कार्यालय-2) के तत्वावधान में आयोजित स्व-रचित काव्य पाठ प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त करने पर यह प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया जाता है।

(डॉ. मनोज कुमार) सचिव, नराकास (का.2)
(आर.जी. गेडाम) महाप्रबंधक (का./राजभाषा प्रमुख)
(राजीव रंजन मिश्र) अध्यक्ष, नराकास (का.2)

c/o Office of The Chairman-Cum-Managing Director, Western Coalfields Limited, Coal Estate, Civil Lines, Nagpur (MS)-440001

@Tolic2 | Website : http://narakas.rajbhasha.gov.in

3) नराकास (का-2) नागपुर द्वारा आयोजित काव्यपाठ प्रतियोगिता में श्री श्रेष्ठ गौतम, वै. स. को तृतीय पुरस्कार प्राप्त हुआ ।

# हिंदी पखवाडा

## प्रा.मौ.के.नागपुर में हिंदी पखवाडा के दौरान किए गए कार्य का विवरण

प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर में दिनांक 01.09.20 से 14.09.20 तक पूरे हर्षोल्लास से हिंदी पखवाडा मनाया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम का उद्घाटन श्री एम.एल.साहू, उपमहानिदेशक, प्रा.मौ.के.नागपुर द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया तत्पश्चात् कार्यालय के कार्मिकों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। श्री एम.एल साहू, उपमहानिदेशक ने अपने उद्‌बोध में सभी को हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने का आव्हान किया एवं हिन्दी को अत्यंत सशक्त तथा वैज्ञानिक भाषा बताया।

कार्यालय में वर्ष भर में हुए गतिविधियों की रिपोर्ट श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ अनुवादक द्वारा प्रस्तुत की गई। पखवाडे के दौरान कार्यालय में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जैसे की हिंदी टंकण, हिंदी टिप्पणी एवं पत्राचार, निबंध, हिंदी काव्य - पाठ, वाद –विवाद प्रतियोगिता आदि इस अवसर पर एक दिन के हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमें श्री एम.एल.साहू, उपमहानिदेशक, महोदय तथा श्री एफ.डी. झोडापे मौ.वि.बी एवं श्री पी.एस.चिंचोले द्वारा व्याख्यान दिया गया। श्री एस. एन.बिद्यांता, मौसम विज्ञानी-ए/ राजभाषा संपर्क अधिकारी द्वारा राजभाषा में अधिक से अधिक कार्य करने के लिए अपील जारी की गई। पखवाडे के अवसर पर पुरस्कृत कविताओं के प्रस्तुतीकरण के साथ छोटी सी सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। इस वर्ष 2020 में हिंदी में सर्वाधिक कार्य के लिए मौसम कार्यालय, रायपुर को राजभाषा शील्ड प्रदान दिया गया। समापन समारोह के अवसर पर श्री एम.एल.साहू, उपमहानिदेशक महोदय कार्यक्रम की अध्यक्षता एवं मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित थे उन्होंने हिंदी दिवस के अवसर पर सभा को संबोधित किया एवं हिंदी में कार्य करने हेतु मार्गदर्शन भी किया साथ ही उनके हाथों विभिन्न प्रतियोगिताओं में विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार भी दिया गया।

–ब्रूस ली

**हिंदी पखवाडे के समापन समारोह पर विजेताओं को मुख्य अतिथि के हाथों पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया जिसका विवरण निम्नानुसार है :-**

| क्र.स. | प्रतियोगिता | प्रतिभागियों के नाम | पुरस्कार |
|---|---|---|---|
| | **हिंदी टंकण** | | |
| 1. | | राहुल सोलकर | **प्रथम** |
| 2. | | जतिन कुमार | **व्दितीय** |
| 3. | | एस.ए.पवार | **तृतीय** |
| **4.** | | ज्योति मीणा | **प्रोत्साहन** |
| | **हिंदी टिप्पण/पत्राचार** | | |
| **1.** | | सुलेखा सोनाल | **प्रथम** |
| 2. | | भारती पारवे | **व्दितीय** |
| 3. | | रिंकु हाडके | **तृतीय** |
| **4.** | | जतिन कुमार | **प्रोत्साहन** |
| | **हिंदी निबंध** | | |
| 1. | | रूबी वर्मा | **प्रथम** |
| 2. | | चैन सिंह | **व्दितीय** |
| 3. | | मीनू मीणा | **तृतीय** |
| **4.** | | दीपिका कटारा | **प्रोत्साहन** |

### हिंदी वाद-विवाद

| | | |
|---|---|---|
| 1. | जतिन कुमार | **प्रथम** |
| 2. | सपना मीणा | **व्दितीय** |
| 3. | दीपिका कटारा | **तृतीय** |
| **4.** | जी.एस. नगराले | **प्रोत्साहन** |

### हिंदी स्वरचित काव्य

| | | |
|---|---|---|
| **1.** | गुंजन आनंद | **प्रथम** |
| 2. | रिंकु हाडके | **व्दितीय** |
| 3. | सुलेखा सोनाल | **तृतीय** |
| 4. | जतिन कुमार | **प्रोत्साहन** |

:

हिंदी पखवाड़ा 2020, उद्घाटन समारोह, प्रा. मौ. केंद्र नागपुर

## हिंदी पखवाड़ा 2020, उद्घाटन समारोह, प्रा. मौ. केंद्र नागपुर

## कविता और वाद-विवाद प्रतियोगिता

## निबंध प्रतियोगिता 2020

## नोटिंग और आलेखन प्रतियोगिता

## टाइपिंग प्रतियोगिता 2020

## पुरस्कार वितरण और हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह

# हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
भारत मौसम विज्ञान विभाग
प्रादेशिक मौसम केन्द्र
विमानतल, नागपुर-5
पखवाड़ा

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
भारत मौसम विज्ञान विभाग
प्रादेशिक मौसम केन्द्र
विमानतल, नागपुर-5
हिन्दी पखवाड़ा
01 से 14 सितंबर

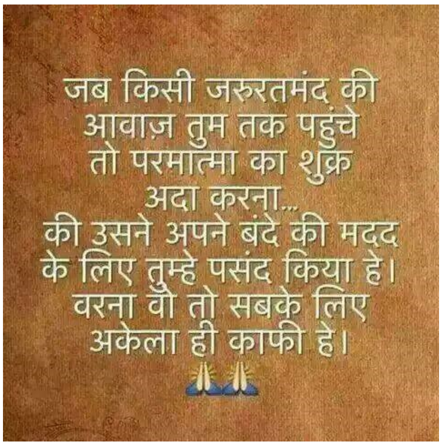
जब किसी जरूरतमंद की
आवाज़ तुम तक पहुंचे
तो परमात्मा का शुक्र
अदा करना...
की उसने अपने बंदे की मदद
के लिए तुम्हे पसंद किया है।
वरना वो तो सबके लिए
अकेला ही काफी है।

# मौसम कार्यालय बैरागढ़ भोपाल

## हिंदी पखवाड़ा

मौसम कार्यालय बैरागढ़ में हिंदी पखवाड़ा 2020, दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2020 तक मनाया गया. जिसमे कार्यालय के समस्त अधिकारियो एवं कर्मचारियों ने बढ़ चढ़ कर विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया. कार्यालय में कविता/ गीत, हिंदी श्रुतलेख, हिंदी अनुवाद एवं निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी. कार्यक्रम का समापन दिनांक 28 सितम्बर 2020 को ,श्री जे. के. एस. यादव वैज्ञानिक ई, प्रमुख अतिथि, डॉ. जी. डी. मिश्रा, हिंदी अधिकारी, श्री एन.पी.मेश्राम, प्रशासनिक अधिकारी एवं श्री अशफाक हुसैन, प्रभारी अधिकारी की उपस्थिति में संपन्न हुआ. प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

**मौसम कार्यालय बैरागढ़ भोपाल**

**हिंदी पखवाड़ा**

मौसम कार्यालय बैरागढ़ में हिंदी पखवाड़ा 2020, दिनांक 14 सितम्बर से 28 सितम्बर 2020 तक मनाया गया. जिसमे विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार निम्न अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रदान किये गए. हिंदी दिवस 14 सितम्बर को मनाया गया।

| | | | |
|---|---|---|---|
| **कविता पाठ** | **प्रथम** | : | श्री ललित बंगारी , वै.स. |
| | **द्वितीय** | : | श्री बी.एन.राव, एमटीएस |
| **निबंध** | **प्रथम** | : | श्री आसिफ मोहम्मद, वै.स. |
| | **द्वितीय** | : | श्री शरीफ खान, एमटीएस |
| **हिंदी श्रुतलेख** | **प्रथम** | : | श्री अमित गुप्ता , वै.स. |
| | **द्वितीय** | : | श्री योगेन्द्र भदौरिया, वै.स |
| **हिंदी अनुवाद** | **प्रथम** | : | श्री बी.एल.जयसवाल, मौ. वि. अ |

**

## मौसम केंद्र भोपाल - हिन्दी पखवाडा /हिन्दी दिवस 2020 की रिपोर्ट

मौ.के.भोपाल में हिन्दी पखवाडा दिनांक 14 से 30 सितम्बर 2020 तक मनाया गया, जिसके अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगितायें आयोजित की गयी तथा प्रतियोगियों को पुरस्कार बांटे गये। हिन्दी दिवस का आयोजन दिनाँक 14/09/2020 को तथा हिन्दी पखवाडे का समापन दिनांक 30/09/20 को किया गया। इसका संयोजन डॉ. जी.डी. मिश्रा, हिन्दी अधिकारी द्वारा किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री जे.के.एस. यादव, प्रमुख थे। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में सुश्री ममता यादव, वैज्ञानिक सी एवं श्री वेद प्रकाश सिंह, वैज्ञानिक सी भी प्रमुख थे. सर्वप्रथम दीप प्रज्जवलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ तथा सरस्वती वंदना, कु. अपूर्वा सिंहरौल, श्रीमती मेघा वर्मा, कु. मधु विश्वकर्मा, कु. शिवांगी शुक्ल एवं श्रीमती सुरभि पुरोहित के द्वारा की गयी। कार्यक्रम का संचालन श्री आर.के.अग्रवाल ने किया। कार्यक्रम में श्री आर.आर. त्रिपाठी, मौ.वि. ब (सेवा.), श्री योगेश श्रीवास्तव, मौ.वि.ब (सेवा.), श्री ए.के. शुक्ला, मौ.वि.ब, श्री एस.के.डे, मौ.वि.ब (सेवा.) एवं श्री यु.एम.सरवटे, मौ.वि.अ को सम्मानित किया गया। स्वागत भाषण एवं पूरे पखवाडे की रुप रेखा की परिकल्पना डॉ. जी.डी.मिश्रा, सम्पर्क हिन्दी अधिकारी एवं मौ.वि.अ ने की। अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री जे.के.एस. यादव, निदेशक ने कार्यालय के कार्य तथा अन्य कार्यों में राजभाषा का प्रचार-प्रसार तथा उपयोग पर हिन्दी प्रयोग के लिये बल दिया। उन्होंने कार्यालय के कार्यो में राजभाषा की उपयोगिता तथा आम बोलचाल की भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग करने पर बल दिया। कार्यक्रम में सुश्री ममता यादव, वैज्ञानिक सी एवं श्री वेद प्रकाश सिंह, वैज्ञानिक सी ने हिंदी राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु अपने विचार व्यक्त किये, प्रमुख द्वारा, प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार बांटे गये।

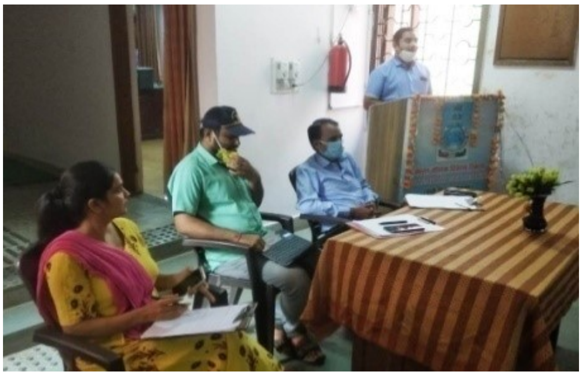

पखवाड़े के दौरान कविता पाठ, हिंदी टंकण, हिंदी श्रुतलेख, हिंदी निबंध, तात्कालिक भाषण एवं हिंदी रूपांतरण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। सभी प्रतियोगिताओं में सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने बढ-चढकर भाग लिया जिसके लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं प्रोत्साहन पुरस्कार वितरित किए गए। हिन्दी पखवाडा 2020 के दौरान आयोजित की गई प्रतियोगिताओं के संबंध में संक्षिप्त विवरण इस प्रकार हैः

-:परिणाम:-

कविता पाठ -

1. श्री एच.एस. पाण्डेय, मौ.वि.अ,कु अपूर्वा सिंहरौल, वै.स एवं श्री आर.के .सिंह, सहायक
2. श्री आर.के. अग्रवाल, वै.स., श्री अभिजीत चक्रवर्ती, वै.स एवं कु.मधु विश्वकर्मा,वै.स
3. श्री वहीद खान, वै.स

दिनांक 14.09.2020, सोमवार को कविता पाठ का आयेजन हुआ जिसमे श्रीजे.के.एस यादव,प्रमुख के साथ ही निर्णायक मंडल में सुश्री ममता यादव, वैज्ञानिक सी एवं श्री वेद प्रकाश सिंह, वैज्ञानिक सी तथा 25अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहें एवं उक्त कार्यक्रम का संयोजन श्री एस.एन.साहू,मौ.वि.अ ने किया।

हिंदी टंकण -

1. श्रीमती सुरभि पुरोहित,उ.श्रे.लि
2. श्रीमती खुशनुमा हुसैन,वै.स. एवं कु.अपूर्वा सिंहरौल, वै.स.
3. कु.शिवांगी शुक्ला,वै.स.

दिनांक 15.09.2020 मंगलवार को हिंदी टंकण का आयेजन हुआ । कार्यक्रम का संयोजन श्री एन.पी.मेश्राम, मौ.वि.अ ने किया।

हिंदी श्रुतलेख - 1. श्री पी.के.साहा, मौ.वि.अ, श्री एस.एन.साहू,मौ.वि.अ, श्री आर,के.अग्रवाल,वै.स.एवं कु.शिवांगी शुक्ला,वै.स.
2. श्री एच.एस. पाण्डेय, मौ.वि.अ,श्री पी.के. रायकवार, वै.स.एवं श्रीमती सुरभि पुरोहित,उ.श्रे.लि
3. श्रीमती खुशनुमा हुसैन, वै.स. एवं श्री विवेक कुमार पाण्डेय, वै.स.

दिनांक 16.09.2020,शुक्रवार को हिंदी श्रुतलेख का आयेजन हुआ जिसका संयोजन श्री ए.के.शुक्ला,मौ.वि.ब द्वारा किया गया।

हिंदी निबंध - 1. श्री विवेक कुमार पाण्डेय, वै.स., कु.मधु विश्वकर्मा, वै.स एवं श्री सौरभ कुमार शर्मा, वै.स.
2. श्री एस.एन साहू, मौ.वि.अ
3. श्रीमती खुशनुमा हुसैन, वै.स.

दिनांक 18.09.2020 (शुक्रवार) को हिंदी निबंध का आयेजन हुआ जिसका संयोजन श्री ए.के.शुक्ला,मौ.वि ब द्वारा किया गया।

तात्कालिक भाषण - 1 श्री अभिजीत चक्रवर्ती,वै.स.
2. कु.शिवांगी शुक्ला, वै.स.
3. श्रीमती सुरभि पुरोहित,उ.श्रे.लि

दिनांक 21.09.2020 (सोमवार) को तात्कालिक भाषण का आयोजन हुआ जिसका संयोजन श्री पी.के.साहा,मौ.वि.अके द्वारा किया गया।

हिन्दी रूपांतरण – 1. श्रीमती मेघा वर्मा,वै.स.एवं श्री एन.पी. मेश्राम,मौ.वि.अ
2. श्री आर.के.सिंह, सहायक
3. श्री सौरभ कुमार शर्मा, वै.स., श्री हरविंदर सिंह राठौर, क.श्रे.लि. एवं श्री ए.के.उईके,एम.टी.एस

दिनांक 24.09.2020 (गुरुवार) को हिन्दी रूपांतरण का आयोजन श्री जे.पी.विश्वकर्मा मौ.वि.अ के द्वारा किया गया।

निर्णायक मण्डल एवं प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले अन्य सदस्यों को सम्मानित किया गया।

# मौसम केंद्र रायपुर

## हिंदी पखवाड़ा एवं हिंदी दिवस 2020 समारोह का आयोजन

मौसम केंद्र रायपुर में दिनांक 01 सितम्बर से 15 सितम्बर 2020 तक हिन्दी पखवाडा मनाया गया जिसमें पूरे पखवाडा के दौरान मौसम केंद्र रायपुर के प्रांगण में राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के लिए विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इसका शुभारंभ 01 सितम्बर 2020 को राजभाषा अधिकारी श्री एन एस मेहता द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस अवसर पर राजभाषा अधिकारी श्री एन एस मेहता द्वारा मौसम केंद्र के अधिकारियों और कर्मचारियों को राजभाषा हिन्दी में कार्य करने का अनुदेश देते हुए पखवाडा में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में बढ़-चढ कर हिस्सा लेने का आव्हान किया। पखवाडा के दौरान ही 09 सितम्बर और 10 सितम्बर को हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमें निम्नलिखित व्याख्याताओं द्वारा राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए विशेष जानकारी दी गयी।

व्याख्याताओं के नाम:-

1. श्री एन एस मेहता राजभाषा अधिकारी द्वारा दिनांक 09.09.2020 को दोपहर 3:00 से 5:00 बजे तक |

2. श्री अमित कुमार गुप्ता, वैज्ञानिक सहायक द्वारा दिनांक 10.09.2020 को दोपहर 3:00 से 5:00 बजे तक |

हिन्दी पखवाड़ा के दौरान कार्यालय में हिन्दी अधिकारी व सहायक मौसम विज्ञानी श्री एन एस मेहता के संचालन में हिन्दी टंकण प्रतियोगिता, हिन्दी में टिप्पणी और मसौदा लेखन, हिन्दी निबंध लेखन, हिन्दी वाद-विवाद प्रतियोगिता, स्वरचित हिन्दी काव्य पाठ और हिन्दी तात्कालिक भाषण का आयोजन किया गया |

हिन्दी पखवाड़ा का समापन 15 सितम्बर 2020 को हिन्दी दिवस के आयोजन के साथ राजभाषा अधिकारी श्री एन एस मेहता की अध्यक्षता में किया गया। श्री एन एस मेहता ने पखवाडा को सफल बनाने के लिए सभी अधिकारियों और कर्मचारियों का आभार व्यक्त किया तथा राजभाषा हिन्दी में कार्य की अनिवार्यता को समझाया। उन्होंने कहा कि देश की एकता, अखंडता और विकास सिर्फ हिन्दी के द्वारा हो सकती है।

इस अवसर पर अपने समापन भाषण में श्री श्री एन एस मेहता, ने हिंदी का विकास के इतिहास के बारे में जानकारी दी व कहा की हिन्दी ही वह भाषा है जो अनेक भावनाओं को समेटी हुई है जिसके बोलने भर से हमें एक अलग अनुभूति का अनुभव होता है, उन्होंने सभी को अपने दैनिक जीवन में ज्यादा से ज्यादा हिंदी का प्रयोग करने

की बात कही | हिन्दी को राजभाषा बनाए जाने के अनेक कारणों का उल्लेख करते हुए कहा कि मातृभाषा ही व्यक्ति के विकास का सच्चा माध्यम होता है। अतएव हिन्दी को न केवल राजभाषा बल्कि मातृभाषा के रूप में भी विकसित किया जाए।

कार्यक्रम का संचालन कार्यालय के मौसम विज्ञानी श्री एच पी चंद्रा मौसम विज्ञानी, द्वारा किया गया।

पखवाड़े में आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओ में प्रथम, द्वितीय, तृतीय और सांत्वना पुरस्कार पाने वाले प्रतिभागियों के नाम इस प्रकार है |

हिंदी टंकण प्रतियोगिता:-

प्रथम पुरस्कार- श्री.एच.पी.चंद्रा,मौ.वि- "ए",द्वितीय पुरस्कार- श्री अमित कुमार गुप्ता, वै.स,तृतीय पुरस्कार- श्री संजू देवांगन, वै.स,सांत्वना पुरस्कार- श्री अमित अग्रवाल,वै.स |

टिप्पणी व मसौदा लेखन:-

प्रथम पुरस्कार- देहुती ठाकुर, वै.स,द्वितीय पुरस्कार- श्री.एच.पी.चंद्रा, मौ.वि- "ए",तृतीय पुरस्कार- श्री अमित अग्रवाल,वै.स, सांत्वना पुरस्कार- नेहा अग्रवाल, वै. स |

निबंध प्रतियोगिता:-

प्रथम पुरस्कार- श्री.राकेश कुमार वर्मा, वै. स,द्वितीय पुरस्कार- श्री.एस.के. भोई, एम.टी.एस,तृतीय पुरस्कार- श्री अमित कुमार गुप्ता, वै.स सांत्वना पुरस्कार- श्री एन.के.सिन्हा, एम. ओ.-III |

वाद - विवाद प्रतियोगिता:-

प्रथम पुरस्कार- श्री.विकाश शर्मा, वै. स,द्वितीय पुरस्कार- श्री प्रकाश कुमार चंद्राकर,वै.स,तृतीय पुरस्कार- श्री अमित अग्रवाल,वै.स, सांत्वना पुरस्कार- श्री एन.के.सिन्हा, एम. ओ.-III

स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता:-

प्रथम पुरस्कार- देहुती ठाकुर, वै.स, द्वितीय पुरस्कार- श्री.विकाश शर्मा, वै.स, तृतीय पुरस्कार- श्री.एस.बैरागी, मौ वि'ए",सांत्वना पुरस्कार- श्री संजू देवांगन, वै.स |

<u>हिन्दी तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता:-</u>

प्रथम पुरस्कार- श्री.प्रकाश कुमार चंद्राकर, वै.स, द्वितीय पुरस्कार - श्री.विकाश शर्मा वै.स, तृतीयपुरस्कार- श्री नितीश कुमार, वै. स सांत्वना पुरस्कार- श्री अमित अग्रवाल,वै.स |

## हिंदी पखवाड़ा 2020 , मौसम विज्ञान केंद्र , रायपुर

## मौसम कार्यालय सागर में हिंदी पखवाडा

मौसम विज्ञान कार्यालय, सागर में दिनांक- 01 से 14 सितम्बर-2020 तक हिन्दी पखवाडे का आयोजन किया गया। कार्यालय प्रभारी अधिकारी /अध्यक्ष एवं सभी कर्मचारी सदस्य इसमें उपस्थित थे।

1. श्री संजय बांगडे, मौ.वि.ए- अध्यक्ष
2. श्री राजु एम. सुशिबिने,वै.स.- सदस्य
3. श्री आशिषकुमार श्रीवास्तव, वै.स.- सदस्य
4. श्री दिलीप सिंह, वै.स.- सदस्य
5. श्री वेंकटेश प्रसाद, वै.स.- सदस्य
6. श्री अजय कुमार रॉय, वै.स.- सदस्य
7. श्री भगवानलाल, एम.टी.एस.- सदस्य

कार्यालय के सभी सदस्यों ने दिनांक - 01 से 14 सितम्बर-2020 तक हिन्दी पखवाडा के अवसर पर राजभाषा हिन्दी से संबंधित विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

**1.हिन्दी निबंध प्रतियोगिताः-**

दिनांक 05/09/2020 को हिन्दी निबंध प्रतियोगिता आयोजित की गयी। प्रथम पुरस्कार श्री अजय कुमार रॉय, वै.स. को 451 रूपये का नगद पुरस्कार दिया गया।

द्वितीय पुरस्कार श्री आशिष कुमार श्रीवास्तव, वै.स. को 351 रूपये का नगद पुरस्कार दिया तृतीय पुरस्कार श्री राजु एम. सुशिबिने, वै.स. को 251 रूपये का नगद पुरस्कार दिया गया ।

**2.हिन्दी टायपिंग प्रतियोगिताः-**

दिनांक 10/09/2020 को हिन्दी टायपिंग प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

प्रथम पुरस्कार श्री. संजय बांगडे,मौ.वि..ए को 451 रूपये का नगद पुरस्कार दिया गया।

द्वितीय पुरस्कार श्री दिलीप सिंह,वै.स. को 351 रूपये का नगद पुरस्कार दिया गया।

तृतीय पुरस्कार श्री भगवानलाल, एम.टी.एस. को 251 रूपये का नगद पुरस्कार दिया गया।

**3.हिन्दी भाषण प्रतियोगिताः-**

दिनांक 14/09/2020 को हिन्दी भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गयी।

प्रथम पुरस्कार श्री संजय बांगडे, मौ.वि.ए को 451 रूपये का नगद पुरस्कार दिया गया।

द्वितीय पुरस्कार श्री वेंकटेश प्रसाद,वै.स. को 351 रूपये का नगद पुरस्कार दिया गया।

तृतीय पुरस्कार श्री राजु एम.सुशिबिने,वै.स. को 251 रूपये का नगद पुरस्कार दिया गया।

हिन्दी दिवस दिनांक 14/09/2020 के अवसर पर हिन्दी पखवाडा का समापन समारोह के उपलक्ष्य में प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण किया गया और राजभाषा हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार के विषय में कार्यालय प्रभारी/ अध्यक्ष ने कार्यालय के सभी सदस्यों को राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करने का निवेदन भी किया ।

<u>हिंदी पखवाड़ा 2020 , मौसम कार्यालय सागर</u>

# हिंदी पखवाडा मौसम कार्यालय जबलपुर

मौसम कार्यालय जबलपुर में दिनांक 01.09.2020 से 14.09.2020 तक हिंदी पखवाडा मनाया गया । इस दौरान कार्यालय में विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । शुध्दलेखन, निबंध,हिंदी से अंग्रेजी अनुवाद, अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । हिंदी में आवेदन लिखने की प्रतियोगिता इस बार विशेष रूप से रखा गया।

इस अवसर पर प्रभारी अधिकारी श्री बीजू जॉन जेकब द्वारा कर्मचारियों को हिन्दी में किए गए कार्य पर बधाई दी साथ ही आग्रह किया कि अब शत-प्रतिशत कार्य हिंदी में करने का संकल्प लेना है । सभी कर्मचारियों ने बहुतउमंग उत्साह से भाग लिया और हिन्दी में कार्य करने का संकल्प लिया । अन्त में प्रभारी अधिकारी ने विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कार दिया और हिन्दी सचिव श्री डी.के.तिवारी ने सभी का आभार व्यक्त किया ।

हिन्दी पखवाडा एवं हिन्दी दिवस पर श्री बीजू जॉन जेकब, श्री डी. के.तिवारी, श्री संजु उद्दे, श्री मुकुल त्रिपाठी, श्री चैतन्य धोपते, श्री रोहन पाहवा, श्री अभिषेक श्रीवास्तव, श्री बी.एम.बडेवा एवं रामचरण की उपस्थिति रही ।

## गणतंत्र दिवस 2021 , मौसम कार्यालय जबलपुर

# मौसम कार्यालय बिलासपुर में हिंदी पखवाडा

मौसम कार्यालय बिलासपुर में दिनांक 14.09.2020 से दिनांक 30.09.2020 तक हिंदी पखवाडा मनाया गया । पखवाडे के दौरान विविध प्रतियोगिताओं का जैसे काव्य पाठ, तात्कालिक भाषण, निबंध तथा शुध्द लेखन आदि का आयोजन किया गया  था। सभी विजेताओं को नकद पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया ।

अंतत: हिंदी पखवाडे का समापन 'अधिक से अधिक कार्य हिंदी भाषा में किए जाने के संकल्प के साथ किया ।

* *

## उपयोगकर्ता के लिए क्षेत्रीय सम्मलेन,

## $7^{th}$ मार्च 2020 मौसम पूर्वानुमान और मौसम संबंधी सेवाएँ,

डॉ. रविन्द्र आकरे, मौसम विज्ञानी -अ तथा श्रीमती रीना सुरपाम,
मौसम विज्ञानी अ, दूरदर्शन (सहयाद्रि) पर साक्षात्कार

नराकास (का – 2)
नागपुर के ऑन स्क्रीन बैठक में उपमहानिदेशक महोदय
और वरिष्ठ अनुवादक अधिकारी,
28 – अगस्त – 2020

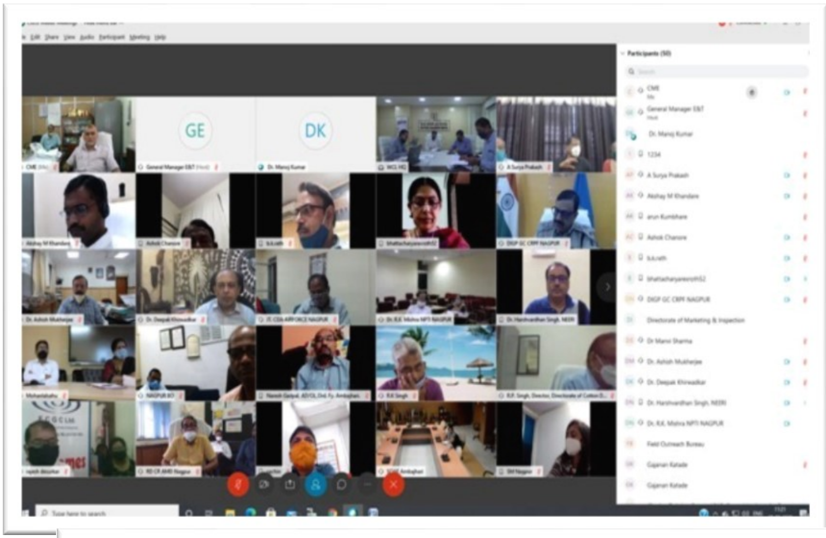

# गणतंत्र दिवस - २०२०

भारत सरकार
भारत मौसम विज्ञान विभाग
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, प्रादेशिक मौसम केंद्र,
हवाई अड्डा , नागपुर- 440 005
दूरभाष :2283394/2282398 फैक्स:2284266

ई-मेल: hindirmc@gmail.com वेब: www.imdnagpur.gov.in

Made with PosterMyWall.com